आधारशिला
क्रियान्वयन संदर्शिका

कक्षा–2 (भाषा)

2020–2021

समग्र शिक्षा, उ.प्र.

संरक्षण	:	**श्रीमती रेणुका कुमार,** आई.ए.एस अपर मुख्य सचिव (बेसिक शिक्षा) उ.प्र. शासन, लखनऊ
निर्देशन		**श्री विजय किरन आनन्द,** आई.ए.एस महानिदेशक, स्कूल शिक्षा एवं राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र.
संकल्पना एवं मार्गदर्शन	:	**श्री सत्येन्द्र कुमार,** आई.ए.एस. अपर राज्य परियोजना निदेशक, समग्र शिक्षा, उ.प्र. **श्री सर्वेन्द्र विक्रम सिंह** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, लखनऊ
समन्वयन	:	**श्री आनन्द पाण्डेय,** वरिष्ठ विशेषज्ञ एवं प्रभारी, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा **श्रीमती शिखा शुक्ला,** विशेषज्ञ, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा **श्री पी. एम. अन्सारी,** राज्य सलाहकार, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा
परामर्श	:	**श्री अजय कुमार सिंह,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ **श्रीमती दीपा तिवारी,** राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ.प्र., लखनऊ
समीक्षा एवं संपादन	:	**श्री पी. एम. अन्सारी,** राज्य सलाहकार, गुणवत्ता प्रकोष्ठ, समग्र शिक्षा **श्री रमेश चंद्र,** लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली
लेखन मंडल	:	डॉ दिलीप कुमार तिवारी (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय जुगराजपुर, कौशाम्बी, एवं SRG कौशाम्बी जनपद), कृष्ण मुरारी उपाध्याय (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय पठा, महरौनी, ललितपुर) योगेन्द्र सिंह (प्रधानाध्यापक, प्राथमिक विद्यालय सलारपुर, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर), रागिनी गुप्ता (प्रधानाध्यापिका, अभिनव प्रा0वि0 ककोरगहना, जौनपुर), सुशील कुमार उपाध्याय (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय चांदपुर, सिकरारा, जौनपुर एवं ARP जनपद जौनपुर) वन्दना गुप्ता (सहायक अध्यापिका, पूर्व माध्यमिक विद्यालय मल्हौर, चिनहट, लखनऊ) श्रीप्रकाश सिंह (प्रधानाध्यापक, आदर्श प्राथमिक विद्यालय, मड़ियाहूँ प्रथम, रामनगर, जौनपुर एवं ARP जौनपुर) जय शेखर (सहायक अध्यापक, प्राथमिक विद्यालय धुसाह 1, बलरामपुर), जय प्रकाश सिंह (सहायक अध्यापक, पू.मा.वि खरगापुर, डीघ, भदोही) गजेन्द्र कुमार (सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय पूरेशम्भू, औराई, भदोही एवं ARP), सुप्रिया घोष (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली) सहदेव पंवार (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, नई दिल्ली) विशाल कश्यप (लैंग्वेज एंड लर्निंग फाउंडेशन, उत्तर प्रदेश)
ले–आउट एवं ग्राफिक्स डिज़ाइन	:	स्टेला डिज़ाइन एण्ड प्रिंट, न्यू दिल्ली

आभार: इस पुस्तक के निर्माण में कई स्रोतों से सामग्रियों का उपयोग किया गया है, इसके लिए हम सभी के आभारी हैं।

योगी आदित्यनाथ

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा 'मिशन प्रेरणा' के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु 'आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका' का प्रकाशन किया जा रहा है।

प्राथमिक शिक्षा बच्चों को आदर्श संस्कार प्रदान करते हुए उन्हें सभी प्रकार से योग्य व सक्षम बनाने का प्रथम सोपान है। बच्चे अपने सपनों को साकार कर सकें, इसके लिए आवश्यक है कि उनमें सृजनात्मकता, वैज्ञानिक चिंतन, जीवन मूल्य के तत्व तथा स्वयं को व्यक्त करने की क्षमता विकसित की जाए। इस कार्य में प्राथमिक शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

शिक्षा को रुचिकर, आनन्दमय, जीवन्त और अपेक्षित ज्ञान व कौशलों से परिपूर्ण बनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस कार्य में शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। 'मिशन प्रेरणा' के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु 'आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका' का प्रकाशन एक सराहनीय प्रयास है। मुझे अवगत कराया गया है कि संदर्शिका में समय–सारिणी, प्रेरणा सूची, प्रेरणा लक्ष्य, लर्निंग आउटकम का विभाजन, भाषा एवं गणित की संकल्पना, समझ, पहचान तथा आकलन, कक्षा प्रबन्धन गतिविधियों आदि का समावेश किया गया है। मुझे आशा है कि यह संदर्शिका सभी शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

'आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका' के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(योगी आदित्यनाथ)

दूरभाष : 0522-2236181/2239296 फैक्स - 0522-2239234 ईमेल - cmup@nic.in

डॉ सतीश चन्द्र द्विवेदी

राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
बेसिक शिक्षा, उ०प्र० सरकार

संदेश

"निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम–2009" के अन्तर्गत 6 से 14 वयवर्ग के सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराना उत्तर प्रदेश शासन की संवैधानिक प्रतिबद्धता है। इसी पृष्ठभूमि में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप प्रदान करने के लिये **"मिशन प्रेरणा"** लागू किया गया है।

नई शिक्षा नीति 2020 में फाउण्डेशनल लिटरेसी एण्ड न्यूमरेसी पर विशेष ध्यान केन्द्रित किये जाने के दृष्टिगत कक्षा 1–5 के बच्चों में गणित एवं भाषा में अधिगम स्तर की सम्प्राप्ति हेतु कार्ययोजना बनाते हुए **'मिशन प्रेरणा'** के लक्ष्य निर्धारित किये गये हैं। उक्त लक्ष्यों को दृष्टिगत रखते हुए शिक्षकों के उपयोगार्थ तीन हस्तपुस्तिकायें –**'आधारशिला', 'शिक्षण संग्रह'** एवं **'ध्यानाकर्षण'** विकसित की गयी हैं। इन हस्तपुस्तिकाओं में पाठ्य पुस्तकों में निर्धारित पाठ्यक्रम को पढ़ाने का तरीका और कक्षा–कक्ष वातावरण को विस्तार से स्पष्ट किया गया है।

प्रारम्भिक स्तर पर कक्षा 1 व 2 में भाषा व गणित विषयों को रोचक तरीकों व गतिविधियों से शिक्षण कराने तथा इन विषयों पर बच्चों की समझ का विकास कर मजबूत आधारशिला रखे जाने के उद्देश्य से **"आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका"** विकसित की गयी है। संदर्शिका में वर्णित रूचिपूर्ण एवं आकर्षक सामग्री व तकनीक बच्चों को सीखने के लिये उपयोगी सिद्ध होगी, जिससे वे मुख्यधारा में सम्मिलित होकर मासिक पाठ्यक्रम एवं उपलब्धि संकेतकों के अनुसार ज्ञानार्जन कर सकेंगे। इससे कक्षा के वातावरण को अधिगमपूर्ण एवं आनन्ददायक बनाने तथा शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन में बल मिलेगा। इसी आशा एवं विश्वास के साथ सभी शिक्षकों/शिक्षिकाओं के प्रति अपनी शुभकामनायें देता हूँ।

डॉ0. सतीश चन्द्र द्विवेदी
राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

रेणुका कुमार
आई०ए०एस०,
अपर मुख्य सचिव,
राजस्व एवं बेसिक शिक्षा विभाग,
उ०प्र० शासन

संदेश

प्राचीन काल से शिक्षा भविष्य के समाज की धरोहर के रूप में जानी जाती है। भविष्य के समाज के विकास को ध्यान में रखकर वर्तमान में शिक्षा पर निवेश किया जाता है। शिक्षक समाज में परिवर्तन के सच्चे संवाहक तथा बच्चों की अमूर्त आकांक्षाओं को मूर्त रूप दे सकते हैं। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप देने हेतु **'मिशन प्रेरणा'** लागू किया गया है। विद्यालयों में अवस्थापनाओं के सुदृढ़ीकरण हेतु 'ऑपरेशन कायाकल्प' संचालित किया जा रहा है, जिसके माध्यम से मूलभूत सुविधाओं का संतृप्तीकरण किया जा रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने हेतु फाउण्डेशनल लर्निंग पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। प्रेरणा लक्ष्यों की प्राप्ति के उद्देश्य से शिक्षकों की क्षमता संवर्द्धन हेतु तीन मॉडयूल्स (''आधारशिला'', ''शिक्षण संग्रह'' एवं ''ध्यानाकर्षण'') विकसित किये गये हैं जिन्हें प्रत्येक शिक्षक को उपलब्ध कराया जा रहा है।

उक्त श्रृंखला में नव विकसित **''आधारशिला कियान्वयन संदर्शिका''** के द्वारा **''मिशन प्रेरणा''** के अन्तर्गत सभी बच्चों को सीखने के लिए रूचिपूर्ण एवं आकर्षक सामग्री व प्रभावकारी तकनीक सभी शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और वे कक्षा के वातावरण को अधिगमपूर्ण एवं आनन्ददायक बनाने में सफल होंगे। इसी आशा एवं विश्वास के साथ सभी शिक्षकों/शिक्षिकाओं के प्रति अपनी शुभकामनाएं देती हूँ।

(रेणुका कुमार)
अपर मुख्य सचिव

विषय सूची

पाठ	विषय	पृष्ठ
1	प्रेरणा सूची – हिंदी (कक्षा 2)	1
2	'मिशन प्रेरणा' का संक्षिप्त परिचय एवं आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका का उपयोग	2
	भाग–1 : सैद्धांतिक समझ	
3	प्रारंभिक कक्षाओं में मौखिक भाषा विकास	6
4	प्रवाहपूर्ण पठन	8
5	पढ़कर समझने की प्रक्रिया	11
6	समझ के साथ पढ़ने की रणनीतियाँ	13
	भाग–2 : कक्षा–2 में भाषा शिक्षण के अकादमिक सत्र की रूपरेखा, कार्ययोजना एवं गतिविधियाँ	
7	अकादमिक सत्र 2020–2021 में कक्षा–2 में भाषा शिक्षण पर कार्य	18
8	दैनिक स्तर पर भाषा के तीनों कालांशों में शिक्षण कार्य	20
9	सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना	21
10	सहायक सामग्री एवं प्रेरणा सूची	25
11	सहायक सामग्री पर कार्य करने की सामान्य रूपरेखा	26
12	प्रथम कालांश में सहायक सामग्री पर कार्यः सप्ताह 1–10	27
13	प्रथम कालांश में सहायक सामग्री पर कार्यः सप्ताह 11–16	29
14	प्रथम कालांश में सहायक सामग्री से संबंधित गतिविधियों का विस्तृत विवरणः सप्ताह 1–10	31

विषय सूची

पाठ	विषय	पृष्ठ
15	प्रथम कालांश में सहायक सामग्री की गतिविधियों की साप्ताहिक कार्ययोजनाः सप्ताह 1–10	45
16	प्रथम कालांश की दैनिक कार्ययोजनाः सप्ताह 1–10	46
17	प्रथम कालांश की गतिविधियों का विस्तृत विवरणः सप्ताह 11–16	48
18	प्रथम कालांश में सहायक सामग्री की गतिविधियों की साप्ताहिक कार्ययोजनाः सप्ताह 11–16	52
19	प्रथम कालांश की दैनिक कार्ययोजनाः सप्ताह 11–16	53
20	कलरव–2 एवं प्रेरणा सूची की दक्षताएँ	55
21	द्वितीय कालांश में कलरव–2 के पाठों पर कार्य	56
22	भाषा शिक्षण से संबंधित कुछ प्रमुख बातें	60
23	आकलन एवं पुनरावृत्ति	61

भाग–3 : कक्षा–कक्ष से संबंधित महत्वपूर्ण पहलू

24	कक्षा प्रबंधन	66
25	कक्षा में प्रिंट रिच (प्रिंट समृद्ध) वातावरण	69

भाग–4 : मौखिक भाषा विकास से संबंधित गतिविधियों का संकलन

26	मौखिक भाषा विकास से संबंधित गतिविधियों का संकलन	72
	• कविताएँ	72
	• कहानियाँ	76
	• मौखिक खेल गतिविधियाँ	79
	• सृजनात्मक कार्य के लिए गतिविधियाँ	82

1. प्रेरणा सूची – हिंदी (कक्षा 2)

विषय	LO Code	दक्षताएँ
सुनकर समझना और प्रतिक्रिया देना	H201	ग्रेड 2 के स्तर की कहानियों और कविताओं का आदर्श वाचन होते हुए सुनकर समझ लेता/लेती है।
	H202	स्पष्ट तौर पर कहे गुए मुख्य विचारों, पात्रों और घटनाओं को स्मृति के आधार पर बता सकता/सकती है तथा आदर्श वाचन किये गए पाठ से (व पाठ के परे) सरल निष्कर्ष निकाल सकता/सकती है (ग्रेड 2 के स्तर का पाठ)।
मौखिक शब्दावली	H203	ग्रेड 2 के पाठ में इस्तेमाल किये गए टायर/स्तर–2 के शब्दों को समझते हैं जैसे– ईमानदारी, उदारता तथा इनमें से कुछ का अपने जवाबों में इस्तेमाल कर सकता/सकती है।
मौखिक अभिव्यक्ति व वर्णन	H204	घर की भाषा में अपनी सोच, विचारों व राय को मौखिक तौर पर व्यक्त करता/करती है तथा पात्रों व कथानक के बारे में प्रश्न पूछता/पूछती है।
	H205	चित्रों के माध्यम से किसी कहानी को घर की भाषा में हाव–भाव व शब्दावली का इस्तेमाल करते हुए सुना सकता/सकती है तथा तथ्यों को हिन्दी के सरल वाक्यों में पुनः बता सकता/सकती है।
ध्वनियों में जोड़–तोड़ कर पाना	H206	बहु–अक्षरीय शब्दों की ध्वनियों को जोड़–तोड़ सकता/सकती है।
वर्ण पहचान	H207	ग्रेड 2 के पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी वर्णों और अक्षरों तथा संयुक्ताक्षरों को पहचान लेता/लेती है।
शब्द पहचान/पढ़ना	H208	ग्रेड 2 के अंत तक सिखाये गए वर्णों और अक्षरों (3 या उससे अधिक वर्ण या अक्षर) से बने परिचित शब्दों को उचित गति और शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।
मौखिक पठन प्रवाह	H209	अपने ग्रेड के स्तर के 7–10 वाक्यों (50–60 शब्द) से बने पाठ्यांश को उचित या ठीक–ठीक प्रवाह व शुद्धता के साथ पढ़ सकता/सकती है।
पढ़कर समझना	H210	ग्रेड 2 के स्तर के पाठ (कविता, कहानी व सरल जानकारीपरक पाठ) को समझते हुए पढ़ सकता/सकती है व साथ में शब्दों के अर्थ भी जानता है और सरल निष्कर्ष भी निकाल सकता/सकती है।
	H211	पाठ में से कही गयी जानकारी को ढूंढ कर सरल निष्कर्ष के आधार पर छूटी हुई जानकारी को निकालना। उदाहरण के लिए, विजय के पास लाल हैट, नीला कोट और पीले मोज़े थे – हैट का रंग क्या था? इसी के साथ घटनाओं के सन्दर्भ में किसी पात्र की मंशाओं व कारणों के बारे में निष्कर्ष निकाल सकता/सकती है।
	H212	घर की भाषा में सरल शब्दों में कहानी पुनः सुना सकता है और हिन्दी में भी प्रयास करता/करती है
लेखन	H213	डिकोडिंग की गतिविधि के तौर पर शब्द लिख सकता/सकती है। संरचनाबद्ध लेखन गतिविधि के तौर पर शब्द व सरल वाक्य लिख सकता/सकती है (उदाहरण के लिए, इस तरह के प्रश्नों पर प्रतिक्रिया देते हुए जैसे, गाँव का नाम क्या था?; बिल्ली चूहे के पीछे क्यों भागी?)
	H214	किसी चित्र या अनुभव पर 2–3 वाक्य सही–सही लिख लेता/लेती है।

2. 'मिशन प्रेरणा' का संक्षिप्त परिचय एवं आधारशिला क्रियान्वयन संदर्शिका का उपयोग

'मिशन प्रेरणा' के तहत प्राथमिक कक्षाओं में सुनियोजित तरीके से कार्य करने की आवश्यकता एवं स्कूल की भूमिका

हम सभी जानते हैं कि राज्य भर में बेसिक शिक्षा विभाग के तहत 1.6 लाख स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए 'मिशन प्रेरणा' उत्तर प्रदेश सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्राथमिक कक्षाओं में भाषा एवं गणित के बुनियादी अधिगम कौशलों पर विशेष एवं व्यवस्थित रूप से कार्य करना है। भाषा के परिपेक्ष्य में शैक्षिक वर्ष 2020–2021 में, कक्षा–2 में बच्चों की मौखिक भाषा के विकास एवं उससे संबंधित लेखन कार्य और समझ के साथ पढ़ने पर एक व्यवस्थित रणनीति के तहत कार्य किया जाना है। ऐसा इसलिए क्योंकि प्रारंभिक स्तर पर इन दोनों कौशलों पर कार्य करना अत्यंत ज़रूरी होता है और अगर इन पर सुनियोजित तरीके से कार्य न किया जाए तो आगे चलकर बच्चों की 'सीखने की प्रक्रिया' बाधित होती है और बच्चे आगामी कक्षाओं में निर्धारित किए गए अधिगम लक्ष्य को हासिल करने में पीछे छूट जाते हैं।

ऊपर उल्लिखित उद्देश्य को हासिल करने के लिए इस कार्यक्रम में दक्षताओं की एक सूची 'प्रेरणा सूची' तैयार की गई है। इस सूची में भाषा से संबंधित 9 कौशलों की पहचान की गई है एवं इनसे जुड़ी हुई 14 दक्षताओं को आधार बनाकर शिक्षण कार्य की योजना बनाई है। इन निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए राज्य के प्रत्येक स्कूल एवं प्राथमिक कक्षाओं के स्कूल शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

शिक्षक संदर्शिका के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत एवं इसकी उपयोगिता

इस संदर्शिका के माध्यम से हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि भाषा शिक्षण में शामिल विभिन्न गतिविधियों को क्यों व कैसे करवाया जाना जरूरी है। इस संदर्शिका को बनाने का एवं शिक्षकों के साथ साझा करने का मुख्य उद्देश्य सभी शिक्षकों को पूरे अकादमिक सत्र की परिकल्पना करने में मदद करना एवं प्रेरणा सूची में निर्धारित दक्षताओं को प्रत्येक बच्चे द्वारा हासिल करने में सहयोग करना है।

लेकिन, इन पर बात करने से पहले, इस संदर्शिका में हम कक्षा–2 में भाषा शिक्षण के महत्वपूर्ण पहलुओं (सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक) पर विस्तृत चर्चा करेंगे और फिर एक सुनियोजित कार्ययोजना को अपनाते हुए 'मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन कार्य' और 'समझ के साथ पढ़ने' की अलग–अलग गतिविधियों पर व्यवस्थित तरीके से कैसे कार्य किया जाना है, इस पर अपनी समझ बनाएँगे।

नोट : इस संदर्शिका में 'शिक्षक' शब्द का प्रयोग शिक्षक एवं शिक्षिका दोनों के लिए किया गया है।

इस शिक्षक संदर्शिका के 4 भाग हैं:

भाग 1 : सैद्धांतिक समझ
भाग 2 : कक्षा–2 में भाषा शिक्षण के अकादमिक सत्र की रूपरेखा, कार्ययोजना और गतिविधियाँ
भाग 3 : कक्षा–कक्ष से संबंधित महत्वपूर्ण पहलू
भाग 4 : मौखिक भाषा विकास से संबंधित गतिविधियों का संकलन

आइए, इन सभी भागों पर थोड़ी–थोड़ी चर्चा करते हैं।

भाग 1: हमने यह अवश्य देखा होगा कि शुरुआती कक्षाओं (कक्षा 1 एवं 2) में भी बच्चे मौखिक रूप से बहुत सारे 'समझ' संबंधित कार्य कर रहे होते हैं जैसे तर्क देना, अनुमान लगाना, तुलना करना आदि। लेकिन ऐसा भी संभव है कि बच्चे स्कूल की मानक भाषा में यह कार्य न कर रहें हो; वे अपने घर की भाषा में चिंतन एवं अभिव्यक्ति करते होंगे। इसलिए बच्चों के घर की भाषा को स्कूल में लाने से एवं इसे एक संसाधन की तरह उपयोग करने से कक्षा–कक्ष की शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली होती है एवं बच्चों और शिक्षकों में अर्थपूर्ण संवाद होता हुआ दिखता है। बच्चों के घर की भाषा एवं उनकी मौखिक भाषा विकास पर भी हम इस संदर्शिका में बातचीत करेंगे।

मिशन प्रेरणा का एक प्रमुख लक्ष्य यह है कि बच्चे 'समझ के साथ पढ़ें'। यह कुशल पठन प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण कारक है और इसे बढ़ावा देने के लिए क्या किया जाना चाहिए, यह संदर्शिका इस पर भी प्रकाश डालती है।

जब हम किसी पाठ को पढ़ रहे होते है तो हमारे मस्तिष्क में पाठ से संबंधित बहुत सारी बातें चल रही होती हैं। ये बातें पाठ के विभिन्न पहलुओं पर बनी या बन रही समझ को लेकर होती हैं जैसे अनुमान लगाना की कहानी में आगे क्या होगा, कहानी के पात्र कैसे है, कथानक का विश्लेषण, उसका अपने जीवन या आस–पास की दुनिया से जुड़ाव आदि। शुरुआती कक्षाओं में 'समझ के साथ पढ़ने' की रणनीतियों का शिक्षण, प्रत्यक्ष रूप से किया जाना चाहिए एवं बच्चों को इन रणनीतियों के अभ्यास के लिए पर्याप्त मौके दिए जाने चाहिए। भाग–1 में हम इस पर विस्तृत चर्चा करेंगे।

भाग 2: भाग–2 में इस वर्ष भाषा शिक्षण में कैसे कार्य किया जाना चाहिए, इस पर विस्तार से बात की गई है। इस शैक्षिक सत्र में प्रेरणा सूची में दी गई दक्षताओं पर कार्य करने के लिए हम पाठ्यपुस्तक– 'कलरव–2', कार्य पुस्तिका–2 के साथ–साथ कुछ सहायक सामग्री पर व्यवस्थित रूप से कार्य करेंगे। पाठ्यपुस्तक के सभी पाठों एवं सहायक सामग्री के माध्यम से कराएँ जाने वाले गतिविधियों को प्रेरणा सूची के संबंधित दक्षताओं के साथ रखकर इस संदर्शिका में दिया गया है। इससे शिक्षकों को यह निरंतर रूप से पता चलता रहेगा कि प्रतिदिन एवं भाषा कलांशों के प्रत्येक गतिविधि में प्रेरणा सूची की किन–किन

दक्षताओं पर कार्य किया जा रहा है। इसके साथ–ही इन कालांशों में विभिन्न गतिविधियों पर कैसे कार्य करना है, इन गतिविधियों को कक्षा में क्रियान्वित करने के चरण क्या है, कक्षा में इन पर कार्य करने के दौरान किन बातों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है, इन पहलुओं पर बातचीत की गई है।

इसके अलावा इस संदर्शिका में पूरे वर्ष के साप्ताहिक योजना एवं दैनिक कार्ययोजना के नमूने दिए गए हैं। इस भाग में प्रेरणा सूची की दक्षताओं एवं विभिन्न गतिविधियों का आकलन एवं पुनरावृत्ति की योजना स्कूल/कक्षा के स्तर पर कैसे की जानी चाहिए एवं इसकी क्या उपयोगिता है, इस विषय को शिक्षकों के समक्ष विस्तार से रखा गया है। इस भाग में दिए गए सभी पहलुओं के माध्यम से शिक्षकों को कक्षा–2 में भाषा पर कार्य करने का खाका (ब्लू प्रिंट) मिल जाएगा जो उन्हें कक्षा में सहजता से कार्य करने में मदद करेगा।

भाग 3: शिक्षण प्रक्रिया में कक्षा प्रबंधन एवं कक्षा में उपलब्ध प्रिंट सामग्रियाँ बच्चों के 'सीखने' में बहुत सहयोग करती हैं और सीखने की प्रक्रिया को एक वांछित गति प्रदान करती है। इसलिए इन पहलुओं को गंभीरता से लेना अनिवार्य है। इस भाग में इन दोनों विषयों पर विस्तृत बातचीत की गई है। शिक्षकों को भाग 3 में दिए गए दिशानिर्देशों को ध्यान में रखकर कक्षा को प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने में मदद मिलेगी।

भाग 4: अंतिम भाग में कुछ मौखिक खेल गतिविधियाँ दी गईं हैं। इन गतिविधियों को आधार बनाकर शिक्षक अन्य मौखिक खेल गतिविधियाँ बना सकते हैं जो बच्चों के मौखिक भाषा विकास के लिए उपयोगी होती है एवं बच्चों को इनको करने में बहुत आनंद भी आता है। इसके साथ ही इसमें सृजनात्मक कार्य से संबंधित 10 गतिविधियाँ भी दी गई है। इन गतिविधियों को सप्ताह 11–16 में (मौखिक भाषा विकास पर कार्य के अंतर्गत) करवाया जाना प्रस्तावित है। कुछ कविताओं एवं कहानियों का संकलन भी इस भाग में दिया गया है।

इस संदर्शिका में कुछ बातें आपकी नज़रों के सामने से बार–बार गुज़रेंगी। जैसे– बच्चों के घर की भाषा को कक्षा में स्थान देना, प्रत्येक बच्चे को कक्षा में हो रही शिक्षण प्रक्रिया में जुड़ने का अवसर मिलना, बच्चों को बातचीत एवं चर्चा में हिस्सा लेने के ज़्यादा से ज़्यादा मौके, भयरहित वातावरण, बच्चों द्वारा जोड़ों एवं समूह में कार्य, नियमित एवं पर्याप्त पठन अभ्यास के मौके, अभिव्यक्ति से जुड़े अर्थपूर्ण लेखन कार्य, शिक्षकों द्वारा व्यवस्थित तरीके से गतिविधियों पर कार्य करना एवं कक्षा में आने के पूर्व की तैयारी आदि। हम सभी शिक्षकों को इन बातों का ख़्याल हमेशा रखना चाहिए एवं एक 'चिंतनशील शिक्षक' (reflective teacher practitioner) की भूमिका को अपनाते हुए कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाना चाहिए तथा बच्चों को सीखने के सक्रिय एवं सार्थक मौके प्रदान करने चाहिए। साथ ही, संवेदनशीलता के साथ बच्चों को अपने तत्कालीन अधिगम स्तर से अगले स्तर पर जाने के लिए प्रोत्साहित करना, उचित मार्गदर्शन और ज़रूरी अवसर देना भी हम शिक्षकों का कर्तव्य है।

हम आशा करते हैं कि अकादमिक सत्र 2020–2021। सभी शिक्षकों एवं बच्चों के लिए एक अनोखा अनुभव रहेगा और हम सब मिलकर 'मिशन प्रेरणा' के उद्देश्य एवं लक्ष्य को अवश्य ही हासिल करेंगे।

भाग 1

सैद्धांतिक समझ

3. प्रारंभिक कक्षाओं में मौखिक भाषा विकास

मौखिक भाषा के विकास का अर्थ वास्तविक तौर पर बोलने और सुनने की क्षमता से कहीं ज़्यादा होता है। स्कूल में आने के पूर्व ही बच्चे मौखिक रूप से बहुत सारे चिंतन कौशल पर पकड़ बना चुके होते है, जैसे, अनुमान लगाना, तर्क देना, अपने अनुभव साझा करना, आदि। अतः कक्षा–1 एवं 2 में मौखिक भाषा विकास की बहुत सारी गतिविधियाँ कराई जानी चाहिए एवं सभी बच्चों को इनमें शामिल होने का पर्याप्त मौका मिलना चाहिए।

बच्चों के साथ हर रोज़ मौखिक भाषा विकास की गतिविधियाँ की जाएँ, (जैसे–चित्रों पर चर्चा, अनुभवों पर चर्चा, कहानी, कविता और गीत आदि को हाव–भाव से सुनाना और चर्चा करना आदि) तो उनका संज्ञानात्मक विकास होता है और वे शिक्षण प्रक्रिया से स्वतः ही जुड़ने लगते हैं।

मौखिक भाषा विकास के फ़ायदे आप इस चित्र संयोजक में देख सकते हैं–

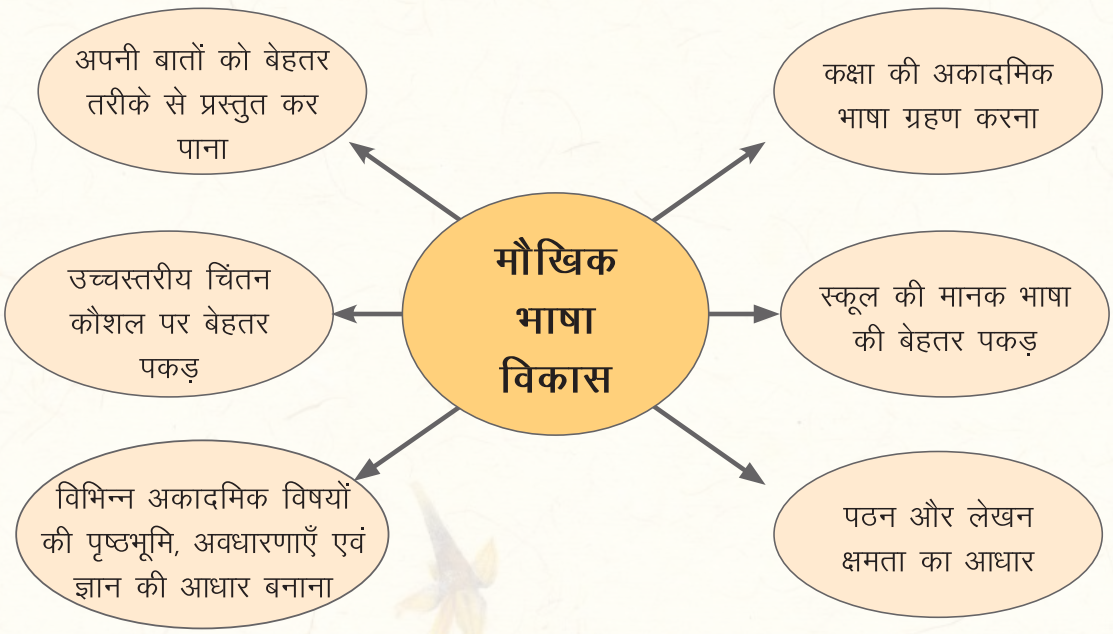

भाषा शिक्षण की शुरूआत में मौखिक भाषा विकास को अधिक महत्व देना–

- स्कूल में प्रवेश से पहले ही बच्चे अपने घर की भाषा बहुत अच्छे से जानते हैं। इसलिए भाषा शिक्षण की शुरुआत बच्चे की घर की भाषा से ही की जानी चाहिए।
- स्कूल के शुरुआती (प्राथमिक स्तर) वर्षों में प्रथम भाषा में ही मौखिक अभिव्यक्ति के विकास में समय लगाना चाहिए ताकि बच्चों का अभिव्यक्ति कौशल बढ़े और वे उच्चस्तरीय चिंतन करने में सक्षम हो सकें।
- बच्चों को ज्ञात से अज्ञात, परिचित से अपरिचित की ओर बढ़ना चाहिए, (एन.सी.एफ़. 2005)। जिस भाषा में बच्चे सबसे अच्छी तरह समझते हैं (मातृभाषा), वे उसका उपयोग अपने पूर्व ज्ञान और अनुभवों द्वारा नए ज्ञान का सृजन करने में करते हैं। इससे कक्षा भी अधिक बाल केंद्रित बन जाती है।
- बच्चों की भाषा को कक्षा में स्थान देने से स्कूल की भाषा के विकास को नुकसान नहीं पहुँचता। हमारे देश में किए गए कुछ अध्ययनों में पाया गया है कि जिन बच्चों की पढ़ाई उनकी अपनी भाषा में हुई है, उनका भाषा और गणित में प्रदर्शन ऐसे बच्चों के मुकाबले बेहतर रहता है जो मातृभाषा के बजाय किसी अन्य भाषा के माध्यम से पढ़कर आए हैं। (साइकिया एवं मोहंती, 2004)[1]

(साइकिया एवं मोहंती, 2004)[1]: द रोल ऑफ मदर टंग मिडियम इनस्ट्रकशन इन प्रोमोटींग एजुकेशनल अचीवमेंटः अ स्टडी ऑफ ग्रेड IV चिलड्रेन इन असाम (इंडिया)

4. प्रवाहपूर्ण पठन

पठन एक सरल प्रक्रिया नहीं है। बच्चों को इसे सीखने में वक़्त लगता है, क्योंकि पठन कई छोटे–बड़े कौशलों का समायोजन है। पठन में बच्चे कुशलता हासिल कर रहे हैं, यह तब पता चलेगा जब वे निम्नलिखित दो विशेषताएँ प्रदर्शित करने लगें:

- बच्चे प्रवाह के साथ पढ़ सकें।
- बच्चे जो कुछ पढ़े, उसे समझ सकें।

एक प्रवाहपूर्ण पाठक के लिए उपर्युक्त दोनों क्षमताएँ ज़रूरी हैं। अगर बच्चे इन क्षमताओं को अच्छी तरह विकसित नहीं कर पाते हैं तो वे पढ़कर समझने में खुद को असमर्थ महसूस करेंगे, जिससे वे पढ़ने और आगे सीखने के मौके से वंचित हो जाएँगे। जहाँ एक ओर बच्चों में प्रवाहपूर्ण पाठक की दक्षता विकसित करने की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर कक्षा में बच्चों को पढ़ने के मौके देने के साथ–साथ उत्साह पूर्ण वातावरण बनाने की भी आवश्यकता है।

कक्षा–2 में प्रारंभिक भाषा शिक्षण का लक्ष्य है कि बच्चे किसी पाठ को पढ़कर समझ लें और अपनी बात, अनुभव, विचार इत्यादि को 2–4 वाक्यों में लिख लें। इस समय, कक्षा–2 के ज्यादातर बच्चे शब्द और छोटे–छोटे पाठों को पढ़ पा रहे होंगे। मगर किसी पाठ को पढ़कर समझने के लिए इतना काफ़ी नहीं है। कक्षा–2 में पढ़कर समझने के कौशल को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित पहलुओं पर कार्य करने की जरुरत है:

प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग (डिकोडिंग कौशल मजबूत करना)

कक्षा–1 एवं 2 में बच्चों को वर्ण–अक्षर की पहचान व अभ्यास पर ज़ोर देकर बच्चों की डिकोडिंग क्षमता को मजबूत करने पर कार्य किया जाता है। इस स्तर तक डिकोडिंग सीख पाने में वर्ण/अक्षर की पहचान और जोड़कर शब्द बनाने की प्रक्रिया की मुख्य भूमिका होती है। वर्णों/मात्राओं की पहचान के साथ–साथ शब्द पहचान में महारथ हासिल करने पर प्राथमिकता देने की जरुरत होती है। इसलिए महज सामान्य शब्द–पहचान की क्षमता किसी पाठ को पढ़कर समझने के लिए पर्याप्त नहीं है। डिकोडिंग की प्रक्रिया इस तरह की हो कि बच्चे शब्द को दृश्य–शब्द की तरह

प्रवाहपूर्ण पठनः कई शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि जो बच्चे मौखिक भाषा में मजबूत होते हैं और अपने स्तर के किसी पाठ का प्रवाहपूर्ण पठन कर पाते हैं, वे पाठ को अच्छी तरह समझ पाते हैं। इसके विपरीत, अच्छे भाषाई कौशल के बावजूद बच्चे पाठ को नहीं समझ पाते हैं अगर वे पाठ को प्रवाहपूर्ण ढंग से नहीं पढ़ पाते हैं। सभी अच्छे पाठक शब्द पहचानने में प्रवाहपूर्ण और लगभग स्वचालित होते हैं, तब ही अर्थ बूझना और पाठ का सार समझना, कड़ियाँ जोड़ना, निष्कर्ष निकालना, पिछले ज्ञान का प्रयोग करना जैसे कार्यों पर ध्यान दे सकते हैं। प्रवाहपूर्ण पठन कर पाने के कारण उनके मस्तिष्क की उर्जा लगभग पूरी तरह समझने पर खर्च होती है।

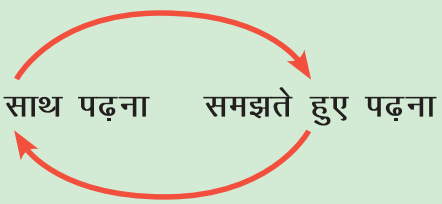

पढ़ सकें। डिकोडिंग कौशल में महारथ हासिल करने का मतलब है कि किसी पाठ को पढ़ते समय शब्द पहचान के लिए सचेत चेष्टा ना करनी पड़े। ऐसी कुशलता प्राप्त करना किसी भी पाठ को प्रवाहपूर्ण तरीके से पढ़ने के लिए जरुरी है। प्रवाहपूर्ण पठन हम तब कह सकते है जब किसी पाठ को सटीक ढंग से, एक अच्छी गति और उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ा जा रहा हो। प्रवाहपूर्ण पठन किसी भी पठन सामग्री को पढ़कर समझने के लिए आवश्यक है। मगर सिर्फ प्रवाहपूर्ण पठन ही इसके लिए काफ़ी नहीं है। इसके साथ–साथ अर्थ निर्माण (भाषाई कौशल) का होना भी जरुरी है। अर्थ निर्माण (भाषाई कौशल) के बिना किसी भी पाठ को पढ़कर समझना नामुमकिन है।

पढ़ने का अभ्यासः जब बच्चे ऐसे पाठ को पढ़ते हैं तो वे अपनी भाषाई समझ का उपयोग करते हुए वाक्यों के अर्थपूर्ण हिस्से को पहचान कर पढ़ना सीख जाते हैं जो प्रवाहपूर्ण पठन में सहायक होता है। ऐसा सिर्फ पढ़ने के अभ्यास से ही संभव है। बच्चे पढ़कर समझने में कुशलता प्राप्त कर सकें, इसके लिए बच्चों को विविध प्रकार की सामग्री से पढ़कर समझने के अभ्यास की जरुरत होती है। इस तरह के अभ्यास के लिए शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि सिर्फ सामग्री की उपलब्धता से अभ्यास पूरा नहीं हो पायेगा। शिक्षक द्वारा पढ़कर सुनाना, बच्चों को पढ़ने में मदद करना और फिर बच्चों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने के मौके देना – ये तीनों आवश्यक हैं। शिक्षक ना सिर्फ पढ़ने में बच्चों को मदद करें, बल्कि नियमित अभ्यास के लिए एक दिनचर्या तय करें और बच्चों को पढ़ने के लिये प्रेरित करें। पढ़ने का वास्तविक अभ्यास तभी प्रभावी होता है जब बच्चे के लिए यह कार्य अर्थपूर्ण हो, वह इसमें रूचि लें और कक्षा में उत्साहवर्धक माहौल हो।

समझ पर ज़ोरः प्रवाहपूर्ण पठन सिर्फ पढ़कर समझने के लिए पर्याप्त नहीं है, बच्चों का भाषाई कौशल इसके लिए सबसे आवश्यक है। चाहे वह सुनकर समझना हो, या पढ़कर समझना – दोनों के लिए बच्चों के साथ मौखिक भाषा विकास पर कार्य होते रहना चाहिए। कक्षा में बच्चों की समझ बढ़ाने के लिए उन्हें ऐसी गतिविधियों में जोड़ना चाहिए जिसमें उन्हें सोचकर कुछ बता पाने और नया बना पाने से संबंधित कार्य करने का मौका मिले। बच्चों को अनुमान लगाने, तुलना करने, विश्लेषण करने, अपनी राय बना पाने, शब्दावली वृद्धि, इत्यादि से संबंधित दक्षताएँ विकसित करने पर कार्य विविधता के साथ जारी रहने चाहिए। साथ ही, कहानी का सार बताने, नयी कहानी बनाने, कहानी का नया अंत बनाने और कहानी पर अभिनय करने– जैसे कार्य समझ बढ़ाने के लिए नियमित रूप से होने चाहिये। पढ़कर समझने से जुड़े कार्य के समय बच्चों को पढ़ने के बाद एक समृद्ध चर्चा में शामिल करना जरुरी है। बच्चों के अनुमानों और खुले छोर वाले प्रश्नों पर चर्चा हो। शब्दावली विकास और कहानी से जुड़े रचनात्मक लेखन कार्य भी समझ बढ़ाने में बड़ी भूमिका निभाते हैं।

शब्दावली का विवरण

- **दृश्य शब्दः** दृश्य शब्द ऐसे शब्द होते हैं जिन्हें बच्चे सचेत प्रयास (डिकोडिंग) के बिना यानी, देखते ही पहचान और पढ़ लेते हैं। जैसे–जैसे बच्चे निपुण होते जाते हैं, वे अधिकाधिक शब्दों को केवल देखकर पहचानने लगते हैं। यह रास्ता तब संभव होता है जब किसी शब्द को इतनी बार पढ़ लिया हो कि तस्वीर की तरह दिमाग में बस जाए। शब्द पहचान में स्वतःस्फूर्तता विकसित करने के लिए आवश्यक है कि पाठक बहुत सारे शब्दों को दृश्य शब्दों के रूप में पहचानने में सक्षम हो।

क्यों जरुरी है सभी बच्चों का पढ़ना–लिखना सीखना

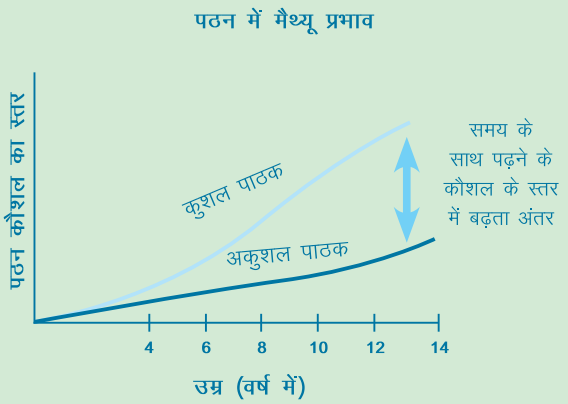

हमारे विद्यालय में आने वाले बच्चे ना सिर्फ अलग–अलग पृष्ठभूमि से आते हैं, बल्कि उनके सीखने की गति और स्तर भी एक जैसे नहीं होते। हमें अपने शिक्षण कार्य में इस महत्त्वपूर्ण बात का ध्यान रखना चाहिए। कक्षा में आनेवाले सभी बच्चों की सीखने की जिम्मेदारी विद्यालय और शिक्षक पर है। बच्चों के लिए प्रारंभिक भाषाई कुशलता प्राप्त करना उनके आगे की अकादमिक उपलब्धि का आधार है। कक्षा–2 तक बच्चे पढ़कर समझने की दक्षताएँ अच्छी तरह प्राप्त कर लें, यह हमें सुनिश्चित करना होगा। अगर कक्षा में 1–2 बच्चे भी इन दक्षताओं को हासिल नहीं कर पाते हैं तो उनके लिए दूसरे कौशल और ज्ञान को प्राप्त करना बहुत मुश्किल हो जाएगा। जैसे–जैसे पाठ्यक्रम में विषयवस्तु बढ़ती जायेंगी, वैसे–वैसे इन बच्चों और बाकी बच्चों के बीच सीखने का अंतर बढ़ता जाएगा। इस अंतर को बाइबिल की एक उक्ति– 'गरीब और गरीब होते जाते हैं जबकि अमीर और अमीर होते जाते हैं', से जोड़कर देखा जाता है। इसके अनुसार, कुशल पाठक बढ़ते समय में सीखने में और कुशल होते चलते जाते हैं, जबकि कमज़ोर पाठक सीखने में और पीछे होते चले जाते हैं। साक्षरता के क्षेत्र में **'मैथ्यू प्रभाव'** के नाम से जाना जाता है। इसके अनुसार, यह अंतर बढ़ता जाता है और एक समय जाकर यह अन्तर इतना बड़ा हो जाता है कि इसे पाटना नामुमकिन हो जाता है। (स्त्रोतः कीथ स्टेनोविच, 1986) कक्षा में इतना बड़ा अंतर पैदा ना हो, इसके लिए शिक्षक यह सुनिश्चित कर लें कि बच्चे दूसरी कक्षा के अंत तक पढ़कर समझने के कौशल प्राप्त कर लें।

5. पढ़कर समझने की प्रक्रिया

पढ़ना लिखित सामग्री से अर्थ निर्माण करने की प्रक्रिया है। किसी लिखित पाठ को बिना समझे उच्चारित करने के काम को डिकोडिंग (अक्षर और ध्वनि के संबंध के ज्ञान के आधार पर किसी शब्द को प्रिंट से ध्वनि में बदल कर उच्चारित करना) तो कहा जा सकता है, पर पढ़ना नहीं कहा जा सकता। पढ़ना कई कौशलों का समुच्चय है। इसकी तुलना हम किसी गीत संगीत की मंडली से कर सकते हैं, जिसमें लोग विविध वाद्य यंत्रों को इस सामंजस्य के साथ बजाते हैं कि उनसे निकली आवाज़ हमारे कानों को मधुर लगने लगती है। किसी आर्केस्ट्रा की तरह ही पढ़ने में भी कई कौशल शामिल होते हैं। इसमें वर्ण और ध्वनि के सहसंबंध को जानना, जल्दी से और सही डिकोडिंग करना, शब्दों के अर्थ को जानना, अपने पूर्व ज्ञान को इस्तेमाल करना अथवा अपने अनुभवों से जोड़ पाना, अनुमान लगाना, पाठ के अलग–अलग हिस्सों को आपस में जोड़ पाना, निष्कर्ष निकालना आदि बातें शामिल हैं। हम उपर्युक्त बात को सरल समीकरण के रूप में इस तरह रख सकते हैं–

शब्द पहचान X **भाषा के विभिन्न पहलुओं की समझ** → **समझ के साथ पढ़ना**

ऊपर दी गई आकृति को 'सिम्पल व्यू ऑफ रीडिंग' (Simple View of Reading) कहा जाता है। इसके अनुसार किसी पाठ को पढ़कर समझने के लिए शब्द पठन और समझ दोनों समृद्ध होने चाहिए।

जब भी हम ***'पढ़ना'*** कहते हैं तो इसका आशय पढ़कर समझने से है। हमने इससे पहले पढ़ने में शामिल कौशलों का उल्लेख किया है। पढ़ते समय ये सभी कौशल सक्रिय रहते हैं, इसी से पढ़कर अर्थ ग्रहण करना संभव होता है।

पढ़कर समझने के कौशल की बुनियाद ***'सुनकर समझना'*** है। कक्षा में समृद्ध मौखिक वातावरण और शिक्षण ऐसे अवसर प्रदान करते हैं, जिससे अर्थ निर्माण और रचनात्मक समझ विकसित हो पाती हैं। बच्चे नई शब्दावली, तर्क–वितर्क और विश्लेषण करना सीखते हैं। वे शब्दों व वाक्यों का अर्थ समझते हैं, सुनी जा रही बात को अपने पूर्व अनुभवों से जोड़ते हैं और उसके अलग–अलग हिस्सों को एक सूत्र में पिरोना सीखते हैं। ये सब समझने से जुड़े पहलू हैं। असल में पढ़कर समझना सुनकर समझने से बहुत अलग नहीं है। अंतर केवल इतना है कि सुनने के बजाय लिखित वाक्यों को प्रवाहपूर्ण तरीके से पढ़ना पड़ता है।

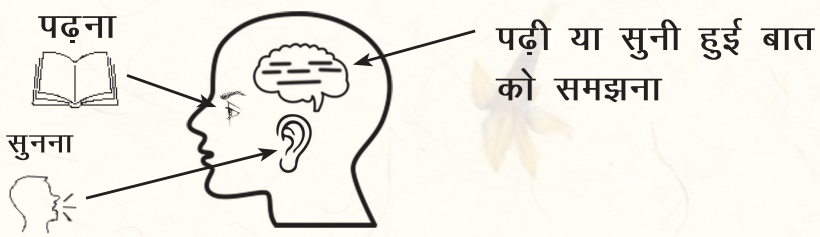

मस्तिष्क में पढ़कर समझना और सुनकर समझने के लिए एक ही यंत्र कार्य करता है।

अतः भाषाई कौशल विकसित करने के लिए हमें बच्चों के उच्चस्तरीय समझ से जुड़ी दक्षताओं पर ज़ोर देना चाहिए।

बच्चे सुनना और बोलना अपने परिवेश से स्वाभाविक रूप से सीख लेते हैं पर पढ़ना–लिखना सीखना इतना स्वाभाविक नहीं है। इसलिए इस पर व्यवस्थित रूप से कार्य किया जाना चाहिए। पढ़ने के कौशल के साथ–साथ शब्दावली, वाक्य–विन्यास, सांसारिक ज्ञान और अर्थ निर्माण के अन्य कौशल ***'पढ़कर समझने'*** के लिए आवश्यक हैं।

पठन अभ्यास के नियमित मौके: 'पढ़कर समझने' के लिए पठन अभ्यास ज़रूरी है। अतः बच्चों को पढ़ने के अभ्यास के नियमित एवं पर्याप्त मौके मिलने चाहिए ताकि वे शब्दों को सरलता के साथ पहचान पाएँ एवं अपना अधिक–से–अधिक या सारा ध्यान पाठ को समझने में लगाएँ। जो बच्चे ज़्यादा पढ़ते है, वे समय के साथ बेहतर पढ़ने लगते हैं, और जब वे बेहतर पढ़ने लगते हैं, तब उन्हें पढ़ने में और भी ज़्यादा मज़ा आने लगता है। यह दोनों ही पहलू एक–दूसरे पर निर्भर करते हैं एवं पढ़ने की आदत एवं अभ्यास के मौके से जुड़ी हुई है। इसलिए प्रतिदिन शिक्षकों को बच्चों को स्वतंत्र रूप से छोटे–छोटे पाठ, कहानियों की किताबें पढ़ने के लिए देने चाहिए।

डिकोडिंग पर कार्य: वर्णों/अक्षरों की ध्वनि को पहचानना और फिर उससे जोड़कर शब्दों में बोल पाना ही डिकोडिंग है। इसमें 2 उप–कौशल शामिल हैं:

- वर्णों एवं मात्राओं/अक्षरों की पहचान
- फिर, इन वर्णों एवं मात्राओं को जोड़कर शब्द पढ़ना

उदाहरण: जब हम 'नानी' शब्द पढ़ते हैं तब हम 'ना' और 'नी' को अलग अलग पहचानते हैं और फिर जोड़कर शब्दकी तरह पढ़ते हैं, 'नानी'।

डिकोडिंग के व्यवस्थित शिक्षण के अंतर्गत बच्चों को उपर्युक्त दोनों उप–कौशलों पर साथ–साथ कार्य करने के मौके एवं पर्याप्त अभ्यास मिलने चाहिए। इससे बच्चे जल्दी ही शब्द पढ़ना सीखना शुरू कर पाते हैं और साथ ही अर्थ–निर्माण की प्रक्रिया से जुड़ते हैं। इसके लिए जरुरी है कि वर्ण/अक्षर सिखाने का एक ऐसा क्रम काम में लिया जाए जिससे बच्चे कुछ वर्णों और अक्षरों को पहचान के साथ ही शब्द बनाना और पढ़ना सीखने लगे। इस पर हमने आगे बात की है।

कहानियों की किताबें: बच्चों की कई कहानियों में कुछ शब्द, शब्दांश या वाक्य बार–बार आते हैं। इन्हें पढ़ने के लिए बच्चों को शब्दों/वाक्यों को पढ़ने/डिकोड करने में बार–बार श्रम नहीं करना पड़ता। इस प्रकार की कहानियों से बच्चे कई शब्दों को 'दृश्य शब्द' की तरह सीख लेते हैं। इस वजह से ये कहानियाँ शुरुआती पाठकों के 'डिकोडिंग' के श्रम को कम करती हैं और उनका ज़्यादा ध्यान कहानी समझने पर लगता है। अतः यह जरुरी एवं उपयोगी है कि बच्चों को ऐसी कहानियों की किताबों को देखने, उलटने–पलटने, पढ़ने के लिए दिया जाए ताकि समय के साथ उनका संबंध किताबों की दुनिया से बन सके।

पुस्तकालय कालांश: पुस्तकालय कालांश को स्वतंत्र पठन अभ्यास के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। इसके लिए बच्चों के स्तर की किताबों को उनकी पहुँच के पास रखें और पढ़ने को प्रोत्साहित करें। कक्षा में चित्र कहानियों एवं सरल कहानियों की किताबें रखें। बच्चों में उत्साह उत्पन्न करने के लिए कहानियों की किताबों से रोचक तरीके से एवं उत्सुकता बढ़ाते हुए आधी कहानी पढ़ें और बच्चों को पूरी कहानी स्वयं से पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

6. समझ के साथ पढ़ने की रणनीतियाँ

स्कूल के प्रारंभिक स्तर में, खास तौर पर कक्षा 1–3 में जब बच्चे प्रवाहपूर्ण पठन के कौशल पर अपनी पकड़ बना रहें है तब उनके साथ प्रत्यक्ष एवं सचेत रूप से समझ के साथ पढ़ने की रणनीतियों पर भी कार्य करना आवश्यक है। इसके लिए उन्हें एक ढांचे और अभ्यास के मौकों की ज़रूरत होती है।

वैसे तो इस संदर्भ में कई रणनीतियाँ प्रचलित हुई हैं, नीचे हम कुछ चुनिंदा रणनीतियों पर चर्चा करेंगे:

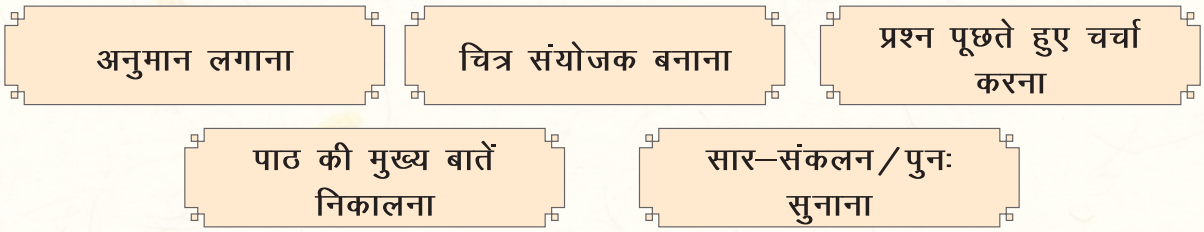

अनुमान लगानाः अनुमान लगाने का अर्थ है पाठ पढ़ते हुए अपने मौजूदा ज्ञान और अनुभव के आधार पर यह सोचना कि पाठ में आगे क्या होगा। अच्छे पाठक किसी पाठ को पढ़ने से पहले और पढ़ने के दौरान अनुमान लगाते चलते हैं। बच्चों को भी यह सिखाया जा सकता है कि किस प्रकार शीर्षक, चित्रों तथा कुछ घटनाओं के आधार पर अनुमान लगाए जाते हैं।

कलरव–2 में दिए गए पाठ **'नाव चली'** कहानी में 'पढ़ने से पहले' और कहानी 'पढ़ने के दौरान' अनुमान लगाने का उदाहरण देखें:

कहानी पढ़ने से पहले अनुमानः इसके लिए आप बच्चों से निम्नलिखित प्रश्न पूछ सकते हैं–

- क्या शीर्षक पढ़ कर अंदाज़ा लगा सकते हो कि कहानी में क्या होगा?
- चित्र देख कर बताओ इस कहानी में कौन–कौन होंगे?
- चित्र में दिए गए जानवरों का आपस में क्या रिश्ता होगा?
- दूसरे चित्र और पहले चित्र में क्या अंतर है? कौन–सा जानवर दूसरे चित्र में नहीं है? तो क्या इससे कहानी के बारे में कुछ अंदाज़ा लगा सकते हो?

कहानी पढ़ने के दौरान अनुमानः कहानी पढ़ते हुए बच्चों के साथ मिलकर यह जाँचें कि जो अनुमान पहले लगाए थे, वे सही हुए या नहीं। फिर नई जानकारी के आधार पर नए अनुमान लगाने को कहें। नए अनुमान लगाने का एक उदाहरण इस प्रकार हो सकता है:

मेंढक हँसने लगा। वह बोला, "टर्र, टर्र, टर्र। तुम्हे तैरना नहीं आता तो तुम अपने घर लौट जाओ। यह कह कर मेंढक फिर ज़ोर–ज़ोर से हँसा और पानी में कूद गया।"

- तुम्हें क्या लगता है, क्या सभी जानवर वापस लौट जाएँगे? क्यों?
- अब बाकी के जानवर क्या करेंगे?

अनुमान लगाने की प्रक्रिया में यह ज़रूरी है कि आप चर्चा करें कि बच्चों ने जो अनुमान लगाया है, वह क्यों लगाया है। इससे बच्चे अपने जवाब के बारे में गहराई से सोचना और प्रतिक्रिया देना सीखते हैं।

चित्र संयोजक बनानाः किसी भी जानकारी (पढ़े हुए पाठ/कहानी को आधार बनाकर) को जब हम तस्वीरों के ज़रिए व्यवस्थित करते हैं, दृश्यात्मक निरूपण करते हैं, तो वह चित्र संयोजक के ज़रिए होता है।

- इनकी मदद से बच्चे पाठ में दी गई मुख्य जानकारी तथा अवधारणाओं के बीच के संबंध का एक चित्र बना लेते हैं।
- यह बच्चों को पाठ में दी गई ऐसी जानकारी अलग करने में मदद करता है जो दिलचस्प तो है और महत्त्वपूर्ण भी।
- बच्चे पाठ/कहानी में अलग–अलग अवधारणाओं/घटनाओं के क्रम, उनके बीच के संबंध आदि समझने लगते हैं, जिससे उनकी, पढ़ कर समझने की क्षमता भी विकसित होती है।

चित्र संयोजक कई प्रकार के हो सकते हैं। नीचे दो तरह के चित्र संयोजक **'नाव चली'** पाठ के आधार पर दिए गए हैं:

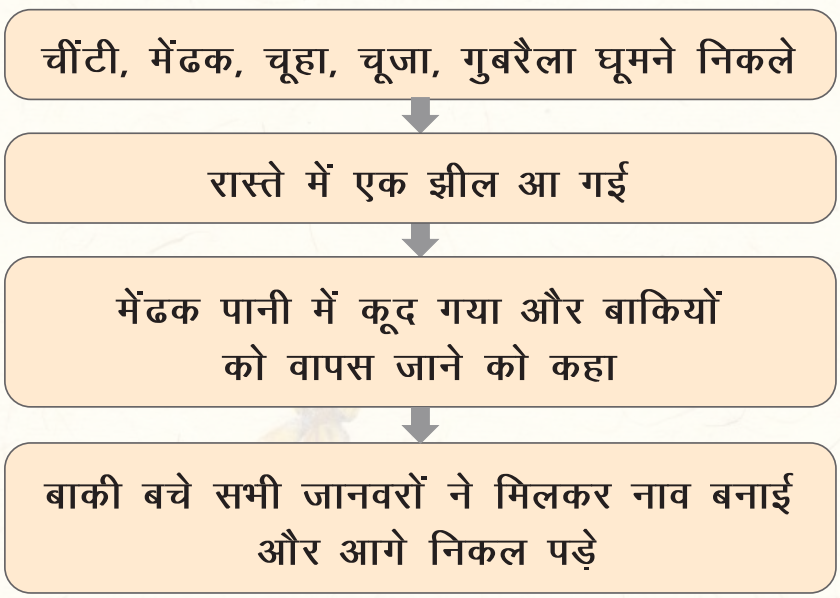

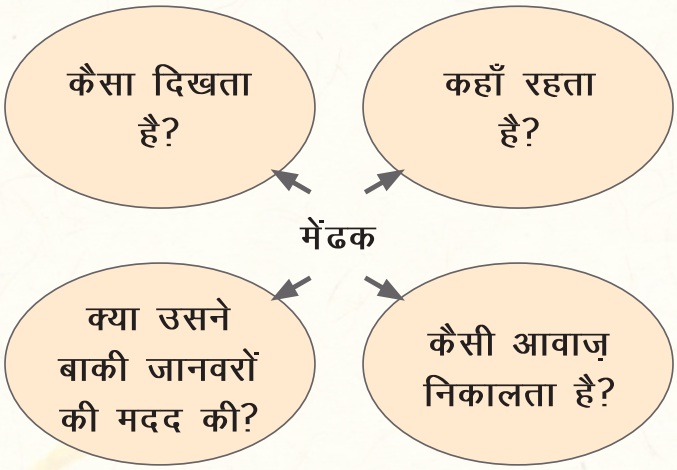

चित्र संयोजक कई अन्य प्रकार के भी होते हैं जो तुलना करने, कारण और प्रभाव को समझने आदि में सहायक होते हैं।

प्रश्न पूछते हुए चर्चा करना: समझ बढ़ाने के लिए बच्चों से उच्चस्तरीय प्रश्न पूछ कर चर्चा करना सबसे शक्तिशाली और कारगर तरीका हो सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि प्रश्न किस प्रकार के हैं। बहुत सरल प्रश्न जिनके उत्तर केवल हाँ या नहीं में हो या फिर किसी तथ्य की जानकारी को लेकर हों, इनसे विशेष लाभ नहीं होता। अध्यापक जितने उच्चस्तरीय सवाल पूछते हैं, उतना ही बच्चों की सोच, तर्क–वितर्क के कौशल और समझने की क्षमता बढ़ती जाती है।

कुछ प्रश्नों के प्रकार और **'नाव चली'** कहानी से संबंधित प्रश्न देखें:

- **पूर्व ज्ञान से जुड़े प्रश्न:** ये प्रश्न बच्चों के कहानी से जुड़े पूर्व ज्ञान को बढ़ाने या मौजूदा पूर्व ज्ञान को जाग्रत करने में सहायक होते हैं। उदाहरण– इन में से कौन–कौन से जानवर पानी में तैर सकते हैं?
- **तथ्य आधारित प्रश्न:** कहानी में क्या–क्या हुआ, यह समझ आया या नहीं, बच्चों से यह जानने के लिए तथ्य आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं। उदाहरण– तीनों जानवर क्या–क्या सामान ले कर आए?
- **निष्कर्ष निकालने वाले प्रश्न:** पाठ में जो स्पष्ट रूप से नहीं दिया, उससे जुड़े अनुमान लगाने वाले प्रश्न बच्चों को स्वयं निष्कर्ष निकालने के लिए प्रेरित करते हैं। उदाहरण– अखरोट का छिलका नाव बनाने में कैसे सहायक हो सकता है?
- **शब्द भंडार से जुड़े प्रश्न:** ये प्रश्न शब्द की बेहतर समझ और उसके सही उपयोग को बढ़ाने के लिए पूछे जाते हैं। उदाहरण– 'तरकीब' शब्द से कोई नया वाक्य बनाओ।
- **विश्लेषण/तर्क–वितर्क से जुड़े प्रश्न:** ये प्रश्न बच्चों को अलग–अलग दृष्टिकोण समझने या अपना दृष्टिकोण बताते हुए उससे जुड़े तर्क देने के लिए प्रेरित करते हैं। उदाहरण– क्या मेंढक ने अपने दोस्तों को छोड़ कर अच्छा किया? क्यों?

- **जीवन से जोड़ने वाले प्रश्नः** ये प्रश्न कहानी को बच्चों के जीवन से जोड़ने में सहायक होते हैं। उदाहरण– जब तुम अपने दोस्तों के साथ कहीं घूमने जाते हो, तब क्या करते हो?
- **कल्पनाशील प्रश्नः** ये प्रश्न बच्चों को कहानी से हटाकर उनकी कल्पना को नई उड़ान देते हैं। उदाहरण– अगर तुम मेंढक की जगह होते तो क्या करते?

पाठ की मुख्य बातें निकालनाः यह एक ऐसी क्षमता है जो छोटे बच्चों को स्वाभाविक तौर पर थोड़ी कठिन लग सकती है। अक्सर ऐसा होता है कि बच्चों से पूछे जाने पर कि पाठ में मुख्य तौर पर क्या दिया है या उसे छोटा करके बताओ, तो बच्चे पूरी की पूरी कहानी, उसमें दी गई छोटी–से–छोटी बात के साथ सुनाना शुरू कर देते हैं। कई बार ऐसा भी होता है कि बच्चे कहानी के कुछ हिस्से का पूरा विवरण देकर सुनाते हैं और बाकी की कहानी को दो वाक्यों में पूरा कर देते हैं।

बच्चों की नज़र से कहानी में दिया सब कुछ ज़रूरी है। यह विश्लेषण कर पाना कि क्या ज़रूरी है और क्या नहीं, पाठ की मुख्य बातें निकालना स्पष्ट रूप से सिखाया जाना चाहिए।

सार–संकलन/पुनः सुनाना

दोबारा सुनाने और सार–संकलन करने से मौखिक भाषा प्रवाह विकसित करने में मदद मिलती है। इससे कहानी की संरचना के बोध में सुधार आता है, विचारों को व्यवस्थित करने और तथ्यों व सूचनाओं को क्रमबद्ध करने का अभ्यास होता है। साथ ही, व्यक्तिगत व्याख्याएँ करने और समझते हुए पढ़ने की क्षमता में सुधार आता है। बच्चों को सार संकलित करने और कहानियों को फ़िर से सुनाने के अवसर मिलने चहिए।

बच्चों द्वारा कहानी का सार–संकलित करने की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार हो सकती है–

1. शुरुआत में शिक्षक खुद करके दिखा सकते हैं कि कहानी कैसे पुनः अपने शब्दों में सुनाई जाती है।
2. वे क्रम चार्ट या कहानी मानचित्र (स्टोरी मैप) का प्रयोग करके मुख्य तत्वों को चिह्नित कर सकते हैंः जैसे– शीर्षक, कहानी की पृष्ठभूमि (कहानी कहाँ और कब घट रही है), मुख्य पात्र कौन हैं, समस्याएँ,मुख्य घटनाओं का क्रम, समस्या का समाधान, और कहानी कैसे खत्म होती है, आदि।
3. कहानी अपने शब्दों में बताते हुए शिक्षक बीच–बीच में रुक सकते हैं और बच्चों को जोड़ने के लिए कह सकते हैं।
4. धीरे–धीरे बच्चों को चित्र संयोजक की मदद से कहानी पुनः सुनाने के लिए कहें। साथ–ही आवश्यकताअनुसार उनको फ़ीडबैक भी दें कि वे अपने सार संकलन को किस प्रकार बेहतर बना सकते हैं।

भाग 2

कक्षा–2 में भाषा शिक्षण के अकादमिक सत्र की रूपरेखा, कार्ययोजना एवं गतिविधियाँ

7. अकादमिक सत्र 2020–2021 में कक्षा–2 में भाषा शिक्षण पर कार्य

शैक्षिक सत्र 2020–2021 में मिशन प्रेरणा के तहत कक्षा–2 में भाषा सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को समद्ध किया गया है एवं कुछ सहायक शिक्षण सामग्रियों को भी शामिल किया गया है। इस भाग में हम इन पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ

प्रेरणा सूची में हिंदी (कक्षा–2) की 14 दक्षताओं पर शिक्षण करने के लिए व्यवस्थित रूप से पूरे अकादमिक सत्र में कार्य करना आवश्यक होगा। इसके लिए पाठ्यपुस्तक– 'कलरव–2' के अलावा सहायक शिक्षण सामग्री को भी कक्षा में स्थान देना प्रस्तावित है।

कक्षा–2 में भाषा शिक्षण के कालांश

इस वर्ष कक्षा–2 में हिंदी भाषा शिक्षण के लिए 40 मिनट के 3 कालांश निर्धारित किए गए हैं। प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री, द्वितीय कालांश में 'कलरव–2' एवं तृतीय कालांश में कार्यपुस्तिका–2 पर व्यवस्थित रूप से कार्य किया जाएगा।

कालांश–1 (40 मिनट)	कालांश–2 (40 मिनट)	कालांश–3 (40 मिनट)
सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य	कलरव–2 पर कार्य	कार्यपुस्तिका–2 पर कार्य

सहायक शिक्षण सामग्रीः भाषा शिक्षण के प्रथम कालांश में सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य किया जाएगा। इस सत्र में कुल 4 अलग–अलग तरह की सहायक सामग्री कक्षा में उपलब्ध कराई जाएगी। इन सभी सामग्रियों का निर्माण प्रेरणा सूची की दक्षताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। इस कालांश में पूरे अकादमिक सत्र में व्यवस्थित रूप से भाषा शिक्षण के दो घटकों पर मुख्य रूप से कार्य किया जाएगा।

- मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन कार्य
- पठन (समझ के साथ)

आइए, अब हम देखते हैं कि ये सहायक सामग्रियाँ कौन–सी हैं एवं शिक्षण योजना में इन्हें कैसे उपयोग में लाया जाएगा।

सामग्री का नाम	उपयोगिता
कविता पोस्टर	कलरव–2 की कविताओं पर कार्य करने के अलावा कविता पोस्टर में दी गई कविताओं पर भी कार्य किया जाना है। इस सत्र में कक्षा–2 के लिए कुल 5 कविता पोस्टर दी जाएँगी इनका उपयोग कविताओं को गाने, प्रिंट चेतना एवं लोगोग्राफ़िक पठन पर कार्य करने के लिए किया जाएगा।

कहानी पोस्टर	कलरव–2 की कहानियों पर कार्य करने के अलावा कहानी पोस्टर में दी गई कहानियों पर भी कार्य किया जाना है। इस सत्र में कक्षा 1 के लिए कुल 5 कहानी पोस्टर दी जाएँगी। इनका उपयोग कहानी पढ़कर सुनाने, प्रिंट चेतना एवं लोगोग्राफ़िक पठन पर कार्य करने के लिए किया जाएगा।
चित्र चार्ट	इस सत्र में अलग–अलग विषयों पर 1 सेट में कुल 10 चित्र चार्ट दी जाएँगी। इसे मौखिक भाषा विकास की गतिविधि– चित्र चार्ट पर चर्चा के दौरान किया जाएगा। इन पर पूरे वर्ष कार्य करने की योजना है। दिए गए चित्र चार्ट के अलावा अन्य चित्र चार्ट को भी उपयोग में लाया जाना चाहिए। कलरव–2 में दिए गए चित्रों पर भी चर्चा की जानी चाहिए।
सहज–2	सहज–2 की प्रति सभी बच्चों को दी जाएगी। इसका उपयोग पठन अभ्यास के लिए किया जाना है। इसका निर्माण बच्चों को पठन अभ्यास के मौके देने के उद्देश्य से किया गया है। यह कक्षा–2 के बच्चों के पठन स्तर को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

ऊपर दी गई सभी सामग्रियों पर आगे चर्चा की जाएगी।

कलरव–2: द्वितीय कालांश में कलरव–2 के पाठों पर भाषा शिक्षण के सभी घटकों एवं प्रेरणा सूची को आधार बनाकर कार्य किया जाएगा। इसके अंतर्गत मौखिक भाषा विकास, पठन एवं लेखन पर कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इसके साथ ही बच्चों के प्रवाहपूर्ण पठन पर भी कार्य करेंगे। इस संदर्शिका में आगे कलरव–2 एवं प्रेरणा सूची के दक्षताओं का संरेखण (alignment) किया गया है। इससे शिक्षकों को यह निरंतर रूप से पता चलता रहेगा कि पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक पाठ एवं पाठ में दिए गए अभ्यास कार्य किन–किन दक्षताओं से संबंधित हैं। इसके साथ ही, कलरव–2 के विभिन्न पाठों– कविता, कहानी, चित्र एवं कॉमिक स्ट्रिप (comic strip) पर चरणबद्ध तरीके से कैसे कार्य किया जाना है, इस पर विस्तार से चर्चा की गई है।

कार्यपुस्तिक–2: कक्षा–2 की भाषा की कार्यपुस्तिका–2 पर भाषा कालांश–3 में कार्य किया जाना प्रस्तावित है। यह कार्यपुस्तिका 'कलरव–2' के पाठों से संबंधित है और इसमें भी कुल 21 पाठ हैं। इसमें विभिन्न तरह के अभ्यास कार्य एवं गतिविधियाँ दी हुई हैं, जैसे– मिलान करना, रिक्त स्थान की पूर्ति करना, किसी विषय पर कुछ 3–4 वाक्य लिखना, दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखना, अधूरे शब्दों में सही मात्रा लगाना, दिए गए शब्दों से वाक्य बनाना आदि।

इस अकादमिक सत्र में साप्ताहिक रूप से तीसरे कालांश के छठे दिन को पुनरावृत्ति के लिए उपयोग में लाया जाना प्रस्तावित है। किसी भी सप्ताह की पुनरावृत्ति उस सप्ताह के पहले 5 दिनों में किए गए कार्य एवं गतिविधियों से संबंधित होगी। इस पर हम आकलन एवं पुनरावृत्ति वाले खंड में दुबारा विस्तार से बातचीत करेंगे।

कार्य पुस्तिका–2 पर कैसे कार्य करना है, इस विषय पर 'सप्तहवार वार्षिक शिक्षण योजना' में बातचीत करेंगे।

8. दैनिक स्तर पर भाषा के तीनों कालांशों में शिक्षण कार्य

नीचे दी गई तालिका से भाषा के तीनों कालांशों में किन–किन गतिविधियों पर कार्य किया जाना है एवं इन गतिविधियों के लिए किन सामग्रियों का उपयोग किया जाना है, इसे दर्शाया गया है:

कालांश–1 **सहायक शिक्षण सामग्री पर कार्य**	**कालांश–2** **कलरव–2 पर कार्य**	**कालांश–3** **कार्यपुस्तिका–2 पर कार्य**
गतिविधियाँ		
कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ **कविता/कहानी पोस्टर पर कार्य** **सृजनात्मक कार्य** **कहानी पर कार्य** • शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना • शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना • बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना **चर्चा** • चित्र पर चर्चा • अनुभवों पर चर्चा **कहानी पर कार्य एवं चर्चा से संबंधित लेखन कार्य** **पठन** • आदर्श वाचन • मार्गदर्शन में पठन • स्वतंत्र पठन	• **कविता पर कार्य** • **कहानी पर कार्य** • **चित्र पर चर्चा** • **कॉमिक स्ट्रिप** कलरव–2 के अभ्यासों पर ऊपर दी गई गतिविधियों के दौरान किया जाना है। इन पर विस्तार से संदर्शिका के भाग–2 में बातचीत की गई है।	कार्यपुस्तिका–2 में दिए गए अभ्यास कार्य कलरव–2 के पाठों से संबंधित हैं, अतः कलरव–2 के पाठों पर कार्य करने के दौरान संबंधित कार्य पुस्तिका–2 के पृष्ठों पर कार्य किया जाना है।
सामग्रियाँ		
• कविता पोस्टर • कहानी पोस्टर • चित्र चार्ट • सहज–2 • कविताओं, कहानियों, मौखिक खेल गतिविधियों एवं सृजनात्मक कार्य की गतिविधियों का संकलन	• कलरव–2 • नोटबुक • अन्य लेखन सामग्री	• कार्यपुस्तिका–2 • नोटबुक • अन्य लेखन सामग्री

9. सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना

वर्ष 2020–21 में कक्षा–2 में कुल 16 सप्ताह के शिक्षण कार्य की योजना है। इस योजना को साप्ताहिक रूप में विभाजित किया गया है। प्रत्येक सप्ताह के लिए 6 दिन का शिक्षण कार्य मानते हुए दैनिक कार्य किया जाय। दैनिक शिक्षण कार्य में 40–40 मिनट के 3 कालांशों में कार्य होगा। निम्न तालिका में इन तीनों कालांशों के लिए सप्ताहवार योजना दी जा रही है। इन कालांशों में कैसे कार्य करना है, इससे संबंधित दिशानिर्देश आगे दिए गए हैं:

सप्ताह	महीना	प्रथम कालांश (सहायक शिक्षण सामग्री)	द्वितीय कालांश (पाठ्यपुस्तक)	तृतीय कालांश (कार्य पुस्तिका)
1	सितंबर	चित्र पर चर्चा: चार्ट– 'दंगल' कविता पोस्टर: चींटी कहानी पर कार्य सहज 2* (पृष्ठ 1–3) अनुकूल वातावरण: गतिविधियाँ	कक्षा–1 में सिखाई गई शब्द पहचान के कौशलों (वर्ण एवं मात्रा पहचान एवं शब्द पठन) की पुनरावृत्ति की जाएगी।	
2	सितंबर	चित्र पर चर्चा: चार्ट– 'सड़क' कहानी पोस्टर: दो चींटी कहानी पर कार्य सहज 2 (पृष्ठ 4–5) अनुकूल वातावरण: गतिविधियाँ	कक्षा–1 में सिखाई गई शब्द पहचान के कौशलों (वर्ण एवं मात्रा पहचान एवं शब्द पठन) की पुनरावृत्ति की जाएगी।	
3	सितंबर	चित्र पर चर्चा: चार्ट– 'खेत' कविता पोस्टर: हाथी कहानी पर कार्य सहज 2 (पृष्ठ 6–7) अनुकूल वातावरण: गतिविधियाँ	पाठ 1: जिसने सूरज चाँद बनाया (2 दिन) पाठ 2: पास–पड़ोस (2 दिन) पाठ 3: बया हमारी चिड़िया रानी (2 दिन)	पृष्ठ संख्या: 6–20
4	अक्टूबर	चित्र पर चर्चा: चार्ट– 'बरसात' कहानी पोस्टर: मेढक का गाना कहानी पर कार्य सहज 2 (पृष्ठ 8–9) अनुकूल वातावरण: गतिविधियाँ	पाठ 4: देखभाल (2 दिन) पाठ 5: टपका का डर (4 दिन)	पृष्ठ संख्या: 21–28
5	अक्टूबर	चित्र पर चर्चा: चार्ट– 'परिवार' कविता पोस्टर: अलमारी कहानी पर कार्य सहज 2 (पृष्ठ 10–11) अनुकूल वातावरण: गतिविधियाँ	कितना सीखा?– पृष्ठ 24–25 (2 दिन) पाठ 6: ममता का घर (4 दिन)	पृष्ठ संख्या: 29–32

6	अक्टूबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'मेला' कहानी पर कार्य सहज 2 (पृष्ठ 12–13) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 7: कबूतर (2 दिन) पाठ 8: मेला (4 दिन)	पृष्ठ संख्याः 33–38
7	नवंबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'नदी' कविता पोस्टरः बरसात कहानी पर कार्य सहज 2 (पृष्ठ 14–15) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 9: नाव चली (4 दिन) पाठ 10–: चाँद (2 दिन)	पृष्ठ संख्याः 39–46
8	नवंबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'खेल' कहानी पोस्टरः पतंग और बकरी कहानी पर कार्य सहज 2 (पृष्ठ 16–17) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 11: नंदू को जुकाम (2 दिन) पाठ 12: जगतपुर गाँव के बच्चे (3 दिन)	पृष्ठ संख्याः 47–51
9	नवंबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'होली' कहानी पोस्टरः भालू और मदारी कहानी पर कार्य सहज 2 (पृष्ठ 18–19) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 13: किसान की चतुराई (4 दिन) कितना सीखा– पृष्ठ 54–55 (2 दिन)	पृष्ठ संख्याः 52–55
10	दिसंबर	चित्र पर चर्चाः चार्ट– 'बाज़ार' कविता पोस्टरः काशीफल कहानी पर कार्य सहज 2 (पृष्ठ 20–21) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 14: मैं कौन हूँ? (4 दिन) पाठ 15: कद्दू जी की बारात (2 दिन)	पृष्ठ संख्याः 56–63
11	दिसंबर	कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा सृजनात्मक कार्य सहज 2 (पृष्ठ 22–23) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 16: गाँव (4 दिन) पाठ 17: हमारे सहयोगी (2 दिन)	पृष्ठ संख्याः 64–71
		सप्ताह 11 में प्रथम सावधिक आकलन किया जाना है। आकलन के आधार पर सप्ताह–12 में अभ्यास एवं पुनरावृत्ति पर कार्य किया जाएगा। इस पर 'आकलन एवं पुनरावृत्ति' वाले खंड में चर्चा की गई है।		

12	जनवरी	कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा सृजनात्मक कार्य सहज 2 (पृष्ठ 24–25) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	वर्ण–मात्रा और शब्द पर अतिरिक्त अभ्यास और पुनरावृत्ति	
13	जनवरी	कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा सृजनात्मक कार्य सहज 2 (पृष्ठ 26–27) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	कितना सीखा– पृष्ठ 69–70 (2 दिन) पाठ 18ः परी (4 दिन)	पृष्ठ संख्याः 72–74
14	फरवरी	कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा सृजनात्मक कार्य सहज 2 (पृष्ठ 28–29) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 19ः हमारे राष्ट्रीय प्रतीक (2 दिन) अपने आप– दयालु सिद्धार्थ (2 दिन) पाठ 20– हमसे सब कहते (2 दिन)	पृष्ठ संख्याः 75–83
15	फरवरी	कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा सृजनात्मक कार्य सहज 2 (पृष्ठ 30–31) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	पाठ 21– पूँछ हिलाने वाला भेड़िया (4 दिन) कितना सीखा?– पृष्ठ 85–96 (2 दिन)	पृष्ठ संख्याः 84–87
16	फरवरी	कहानी पर कार्य अनुभव पर चर्चा सृजनात्मक कार्य सहज 2 (पृष्ठ 32–33) अनुकूल वातावरणः गतिविधियाँ	आकलन के बाद वर्ण–मात्रा और शब्द पर अतिरिक्त अभ्यास और पुनरावृत्ति	

*प्रथम कालांश में वर्णित सहज–2 बच्चों के पठन अभ्यास के लिए एक पुस्तिका है जिसमें शब्द, वाक्य और चित्र सहित छोटे–छोटे पाठ दिए गए हैं। इसे केवल पठन अभ्यास के लिए काम में लाया जाएगा। इस पर लेखन का कार्य करवाना प्रस्तावित नहीं है।

विशेष ध्यान दें:

1. अकादमिक सत्र के शुरुआती 2 सप्ताहों में कक्षा 1 में सिखाए गए वर्ण/मात्राओं की पहचान एवं शब्द पठन की पुनरावृत्ति पूरे कक्षा के साथ कराई जानी चाहिए। इसके लिए आप कालांश 2 एवं 3 के लिए निर्धारित समय को उपयोग करें।

2. तीसरे सप्ताह से कालांश–2 में कलरव–2 से संबंधित पाठों एवं अभ्यासों पर कार्य किया जाना है।

3. इसके साथ ही दैनिक रूप से तृतीय कालांश में से प्रतिदिन 10–15 मिनट उन बच्चों के साथ काम किया जाना चाहिए, जिन्हें अभी भी बुनियादी डिकोडिंग में शिक्षक की मदद की ज़रूरत है। इन बच्चों के लिए शिक्षक के पास एक व्यक्तिगत योजना होनी चाहिए।

4. दैनिक पुनरावृत्ति के अतिरिक्त, साप्ताहिक पुनरावृत्ति और सावधिक पुनरावृत्ति भी सप्ताहवार वार्षिक कार्ययोजना का हिस्सा है। प्रत्येक सप्ताह के छठे दिन साप्ताहिक पुनरावृत्ति प्रस्तावित है जो तृतीय कालांश में होनी है। इस दिन आप उन बच्चों के साथ विशेष समय देकर कार्य करें, जिन्हें अभी भी डिकोडिंग से संबंधित कार्य (वर्ण/अक्षर की पहचान, इन्हें जोड़कर पढ़ने का कार्य, शब्द पठन) में समस्या हो रही है। इस दौरान, बाकी बच्चों को सहज–2 एवं पुस्तकालय की कहानियों की किताबों को स्वतंत्र रूप से पढ़ने को दें।

5. सप्ताह 12 एवं 16 में सावधिक पुनरावृत्ति के लिए समय दिया गया है। इन सप्ताहों में किसी नए पाठ पर कार्य ना करें, बल्कि आकलन के आधार पर पुनरावृत्ति की एक योजना बनाएँ और उस पर कार्य करें। आकलन संबंधी आवश्यक जानकारी आगे दी गई है। इन 3 तरह की पुनरावृत्ति के द्वारा बच्चों के अधिगम स्तर की दूरी को खत्म करने का प्रयास किया जाएगा और वर्ष के अंत तक अभी बच्चों को निर्धारित अधिगम स्तर पर लाने की कोशिश की जाएगी।

6. अकादमिक सत्र की शुरुआत से ही सहायक सामग्री पर काम करने के दौरान, मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों एवं संबंधित लेखन पर सप्ताह में तीन दिन कार्य होना है, बाकी तीन दिनों में सहज–2 पर कार्य किया जाएगा। सहायक सामग्री पर कार्य करने की रूपरेखा एवं संबंधित गतिविधियों पर हम आगे विस्तार से चर्चा करेंगे।

7. सप्ताह 1–10 में सहायक सामग्री पर कार्य करने के दौरान हम कविता/कहानी, पोस्टर, कहानी एवं चित्र पर चर्चा करेंगे। इसके साथ ही कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए कविताओं, मौखिक भाषा विकास की खेल गतिविधियों एवं शब्दावली–विकास पर भी कार्य किया जाएगा। लेकिन सप्ताह 11 मौखिक भाषा विकास से संबंधित एक नई गतिविधि कराई जाएगी– सृजनात्मक कार्य। इस संदर्शिका में सृजनात्मक कार्य के कुछ विषय एवं उन्हें कैसे किया जाना है, इस पर भी विस्तार से चर्चा की गई है। ऐसी गतिविधियाँ बच्चों को सोचने, अपने अनुभवों को साझा करने, आपस में तर्क करने, नई रचना करने और सामूहिक जवाबदेही निभाने जैसे मौके उपलब्ध कराएँगी।

8. सभी बच्चों के सीखने की गति समान नहीं होती है। इस कारण से हमारी कक्षा में अक्सर ऐसे बच्चे पाए जाते हैं जो भाषा कौशलों में सामान्य से निचले स्तर पर होते हैं। अक्सर ऐसे बच्चे अपने आप को कक्षा की शिक्षण प्रक्रिया से जोड़ नहीं पाते हैं, जिसके कारण भाषाई कौशलों में पिछड़े हुए बच्चे पिछड़ते ही चले जाते हैं। इस प्रकार के बच्चे भाषा में पिछड़े होने के कारण अन्य विषयों में भी अपनी समझ को बढ़ाने में सक्षम नहीं हो पाते हैं। ऐसे बच्चों पर अपनी कक्षा में विशेष ध्यान दें और उनके बुनियादी कौशलों को विकसित करने के लिए उपचारात्मक शिक्षण कार्य करें।

9. अगर किन्हीं कारणों की वजह से किसी सप्ताह में निर्धारित शिक्षण योजना पर पूर्ण रूप से कार्य नहीं हो पाए तो शिक्षक अगले सप्ताह के निर्धारित कार्य शुरू करने के पहले पिछले सप्ताह के छूटे हुए कार्यों एवं गतिविधियों को करवाएँ।

सहायक सामग्री / प्रेरणा सूची की दक्षताएँ	H201	H202	H203	H204	H205	H206	H207	H208	H209	H210	H211	H212	H213	H214
कविता	✓													
मौखिक खेल गतिविधि			✓	✓	✓									
शब्दावली विकास			✓											
कविता पोस्टर	✓													
कहानी पोस्टर	✓	✓	✓	✓	✓									
सृजनात्मक कार्य			✓											
कहानी पर कार्यः														
शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से शिक्षक द्वारा कहानी सुनाना	✓	✓	✓	✓	✓									
शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना	✓	✓	✓	✓	✓									
बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना	✓	✓	✓	✓	✓									
चर्चाः														
चित्र चार्ट पर चर्चा			✓	✓	✓									
अनुभवों पर चर्चा			✓	✓										
कहानी पर कार्य एवं चर्चा से संबंधित लेखन कार्य													✓	✓
पठनः														
आदर्श वाचन	✓	✓	✓	✓	✓	✓								
मार्गदर्शन में पठन	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓		
स्वतंत्र पठन						✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓		

11. सहायक सामग्री पर कार्य करने की सामान्य रूपरेखा

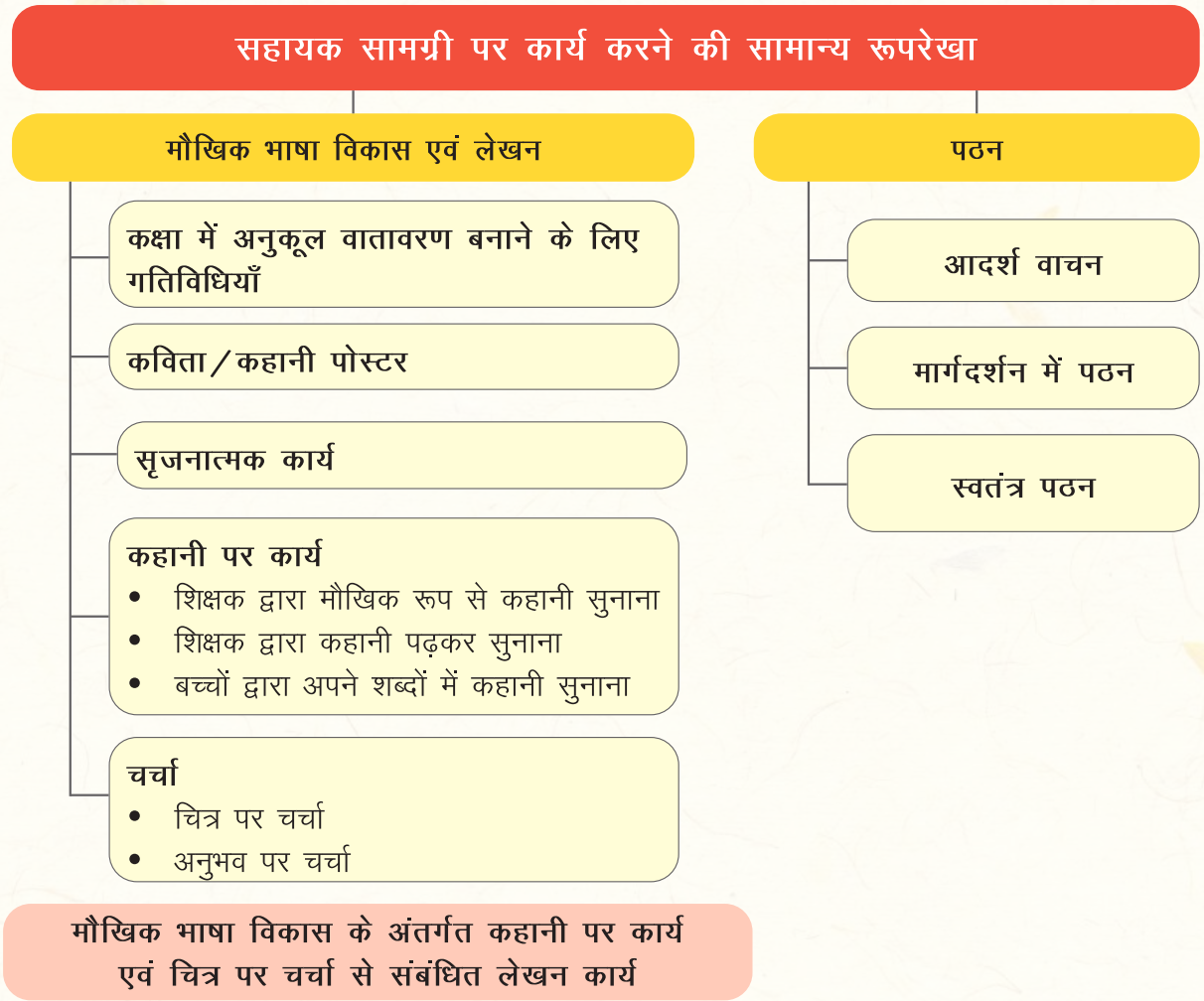

पुस्तकालय/लाइब्रेरी कालांश

- पुस्तकालय/लाइब्रेरी कालांश में सहज–2 का उपयोग करें। अन्य पठन सामग्री (पाठ्यपुस्तक एवं कहानियों की किताबें) के साथ–साथ, बच्चों को स्वतंत्र रूप से सहज–2 पढ़ने का अवसर एवं समय प्रदान करें। आप चाहें तो 40 मिनट के कालांश में से 10–15 मिनट सहज–2 के स्वतंत्र पठन के लिए भी निर्धारित कर सकतें है और बाकी समय में बच्चों को अपनी इच्छा से उनकी मनपसंद किताब पढ़ने का मौका दें।
- पुस्तकालय कालांश का उपयोग स्वतंत्र पठन के लिए किया जाना चाहिए। इससे बच्चों का जुड़ाव किताबों से हो पाएगा और वे पढ़ने की प्रक्रिया से (धीरे–धीरे) स्वतः ही जुड़ने लगेंगे।
- पुस्तकालय कालांश के आख़िर के 5–10 मिनट में बच्चों के साथ यह अवश्य चर्चा करें कि उन्होंने क्या पढ़ा है। जो किताब उन्होंने पढ़ी हैं, उसमें उन्हें क्या अच्छा लगा और क्यों?

12. प्रथम कालांश में सहायक सामग्री पर कार्य: सप्ताह 1–10

इस चरण में दो घटकों पर कार्य किया जाएगा– मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन कार्य और पठन। सप्ताह के पहले, तीसरे एवं छठे दिन में मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन कार्य किया जाना है एवं सप्ताह के दूसरे, चौथे एवं पाँचवे दिन में पठन पर कार्य किया जाना प्रस्तावित है।

मौखिक भाषा विकास एवं लेखन– 40 मिनट
(सप्ताह के पहले, तीसरे एवं छठे दिन)

5–7 मिनट	**कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ:** • कविता (1 दिन) • मौखिक खेल गतिविधि (1 दिन) • शब्दावली विकास की गतिविधियाँ (1 दिन)
15–20 मिनट (सप्ताह में 1 दिन)	**कविता या कहानी पोस्टर पर कार्य** **(सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना के अनुसार)**
15–20 मिनट (सप्ताह में 1 दिन)	**कहानी पर कार्य** • शिक्षक के द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना • शिक्षक के द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना • बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना *(इन तीनों प्रकार की गतिविधियों में से किसी एक को कक्षा में कराएँ। ध्यान दें कि प्रत्येक सप्ताह कहानी पर कार्य की गतिविधि एक ही जैसी ना हो रही हो क्योंकि ऐसा करना बच्चों के लिए उपयोगी नहीं होता।)*
15–20 मिनट (सप्ताह में 1 दिन)	**चित्र पर चर्चा**
10–15 मिनट (सप्ताह में 2 दिन)	**कहानी पर कार्य एवं चित्र पर चर्चा से संबंधित लेखन कार्य**

पठन– 40 मिनट
(सप्ताह के दूसरे, चौथे एवं पाँचवे दिन)

आदर्श वाचन (1 दिन)	**मार्गदर्शन में पठन (1 दिन)**	**स्वतंत्र पठन (1 दिन)**

ध्यान देने योग्य बातें:

- मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों में बच्चों की शत–प्रतिशत भागीदारी के लिए बच्चों के घर की भाषा/प्रथम भाषा का उपयोग करना कारगर सिद्ध होता है। इससे बच्चे अपने मन की बात, विचार एवं अनुभव खुलकर कह पाते हैं और कक्षा की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से जुड़ पाते हैं।
- अकादमिक सत्र की शुरुआत में सरल गतिविधियों का चयन किया जाना चाहिए और जैसे–जैसे सत्र आगे बढ़ेगा गतिविधियों की जटिलता को थोड़ा बढ़ाया जाना चाहिए।
- कक्षा के सभी बच्चों को सारी गतिविधियों में हिस्सा लेने का मौका अवश्य मिले।
- जो बच्चे किन्हीं कारणों से गतिविधियों में हिस्सा नहीं ले पा रहे हों, तो शिक्षक उनसे इस बारे में एक भयमुक्त वातावरण में खुलकर बातचीत करें। इन बच्चों को कक्षा की प्रक्रिया में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। यह सभी बातें कलरव–2 एवं कार्य पुस्तिका–2 पर कार्य करने के दौरान भी लागू होती हैं।
- बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना एक उच्चस्तरीय कौशल है। इसलिए इस पर 2–3 सप्ताहों के बाद कार्य किया जाना चाहिए। शुरुआत में हो सकता है कि बच्चे कहानी वैसे ना सुना पाएँ जैसा उनको सुनाया गया हो। वे कुछ घटनाएँ एवं कहानी के पात्र भूल सकते हैं या अपने मन से कोई दूसरी ही कहानी सुना दें। यहाँ मुख्य उद्देश्य बच्चों को भयरहित वातावरण में बातचीत के अवसर प्रदान करना है।

सामग्री सूची	
मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन और पठन	
गतिविधि	**सामग्री**
कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ (कविता/मौखिक खेल गतिविधि, शब्दावली विकास की गतिविधियाँ)	स्थानीय कविताएँ, कविता पोस्टर, संदर्शिका में दी गई कविताओं एवं मौखिक खेल गतिविधियाँ का संकलन एवं अन्य खेल और शब्दावली विकास की गतिविधियाँ
कविता/बालगीत गाना	कविता पोस्टर
शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना	कहानी पोस्टर, स्थानीय कहानियाँ, संदर्शिका में दी गई कहानियों का संकलन
शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना	कहानी पोस्टर, स्थानीय कहानियाँ, संदर्शिका में दी गई कहानियों का संकलन
चित्र पर चर्चा	चित्र चार्ट
पठन	सहज–2

13. प्रथम कालांश में सहायक सामग्री पर कार्य: सप्ताह 11–16

पहले की ही तरह, सप्ताह 11–16 में भी दो घटकों पर कार्य किया जाएगा– मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन कार्य और पठन। सप्ताह के पहले, तीसरे एवं छठे दिन में मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन कार्य किया जाना है एवं सप्ताह के दूसरे, चौथे एवं पाँचवे दिन में पठन पर कार्य किया जाना प्रस्तावित है।

लेकिन इस चरण में कुछ नई गतिविधियों को जोड़ा गया है, मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन कार्य में सृजनात्मक कार्य को जोड़ा गया है। यह कार्य उच्चस्तरीय चिंतन एवं अभिव्यक्ति कौशल से जुड़े हुए हैं। इस पर विस्तार से हम प्रथम कालांश में 'सहायक सामग्री से संबंधित गतिविधियों का विस्तृत विवरण: सप्ताह 11–16' वाले खंड में चर्चा करेंगे। पठन के तीसरे दिन स्वतंत्र पठन के साथ–साथ बच्चों के पठन का आकलन किया जाना है। इस साप्ताहिक अनौपचारिक पठन के आकलन के द्वारा हम यह पता लगाने का प्रयास करेंगे कि किन–किन बच्चों के साथ अभी भी थोड़ा ज़्यादा कार्य करने की आवश्यकता है और एक योजना बनाकर उनके साथ कार्य करेंगे।

मौखिक भाषा विकास एवं लेखन– 40 मिनट
(सप्ताह के पहले, तीसरे एवं छठे दिन)

5–7 मिनट	**कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ:** • कविता (1 दिन) • मौखिक खेल गतिविधि (1 दिन) • शब्दावली विकास की गतिविधियाँ (1 दिन)
15–20 मिनट (सप्ताह में 1 दिन)	**कहानी पर कार्य**
15–20 मिनट (सप्ताह में 1 दिन)	**अनुभव पर चर्चा**
20–30 मिनट (सप्ताह में 1 दिन)	**सृजनात्मक कार्य**
10–15 मिनट	**कहानी पर कार्य एवं अनुभव पर चर्चा से संबंधित लेखन कार्य** *प्रथम कालांश में, सृजनात्मक कार्य के दिन अलग से लेखन कार्य करवाने की आवश्यकता नहीं है।*

पठन– 40 मिनट
(सप्ताह के दूसरे, चौथे एवं पाँचवे दिन)

आदर्श वाचन (1 दिन)	मार्गदर्शन में पठन (1 दिन)	स्वतंत्र पठन (1 दिन)

ध्यान देने योग्य बातें:

- मौखिक भाषा विकास एवं लेखन की गतिविधियों में साप्ताहिक रूप से बदलाव करें ताकि बच्चों को अलग–अलग तरह की गतिविधियों में भाग लेने का मौका मिले।
- गतिविधियों में बदलाव के साथ–साथ, कविता, कहानी, मौखिक खेल गतिविधि एवं अनुभवों पर चर्चा के नए–नए विषयों को चुनें।

सामग्री सूची	
मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन और पठन	
गतिविधि	**सामग्री**
कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ (कविता / मौखिक खेल गतिविधि, शब्दावली विकास की गतिविधियाँ)	स्थानीय कविताएँ, कविता पोस्टर, संदर्शिका में दी गई कविताओं एवं मौखिक खेल गतिविधियाँ का संकलन एवं अन्य खेल और शब्दावली विकास की गतिविधियाँ
शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना	कहानी पोस्टर, स्थानीय कहानियाँ, संदर्शिका में दी गई कहानियों का संकलन
शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना	कहानी पोस्टर, स्थानीय कहानियाँ, संदर्शिका में दी गई कहानियों का संकलन
सृजनात्मक कार्य	संदर्शिका में दी गई सृजनात्मक कार्य का संकलन
बच्चों के अनुभवों पर चर्चा	चयनित विषय
पठन	सहज–2

14. प्रथम कालांश में सहायक सामग्री से संबंधित गतिविधियों का विस्तृत विवरण: सप्ताह 1–10

सप्ताह 1–10 में मौखिक भाषा विकास एवं संबंधित लेखन कार्य के अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियाँ की जाएँगी:

मौखिक भाषा विकास एवं लेखन

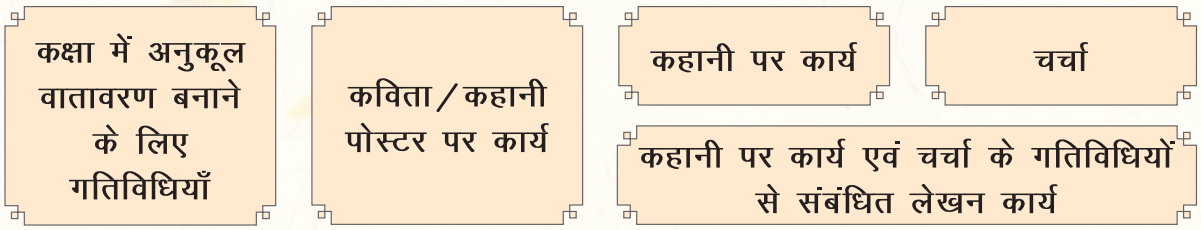

कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने के लिए गतिविधियाँ:

कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों को कुछ गतिविधियाँ नियमित रूप से कराई जानी चाहिए लेकिन इसमें बहुत सारा समय लगाने की आवश्यकता नहीं होती है। 5–7 मिनट इस गतिविधि को करने के लिए पर्याप्त होता है। ये गतिविधियाँ रोचक होने के साथ–साथ अधिगम से भी जुड़ी होनी चाहिए। कक्षा–2 में इसके लिए 3 गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं–

- **कविता**
- **मौखिक खेल गतिविधि**
- **शब्दावली विकास की गतिविधियाँ**

कविता: कलरव–2, कविता पोस्टर एवं स्थानीय कविताओं को इस गतिविधि में सम्मिलित किया जा सकता है। कविताओं को उपयुक्त हाव–भाव के साथ शिक्षक और बच्चों द्वारा साथ में गाया जाना चाहिए। कक्षा–2 के शुरुआत में कक्षा–1 में करवाई गई कविताओं को इस गतिविधि में सम्मिलित करें। 3–4 सप्ताहों के बाद जब बच्चों ने कुछ नई कविताएँ सीख ली होंगी तो उन्हें इस्तेमाल में लाएँ।

मौखिक खेल गतिविधि: बच्चों के परिवेशीय खेलों के साथ–साथ कुछ मौखिक खेल गतिविधियाँ भी कराई जानी चाहिए। खेलों में बच्चों को नियम सुनकर याद रखना और पालन करना पड़ता है। कई खेल ऐसे होते हैं जिसमें ध्यान से सुनकर समझे बिना खेल आगे नहीं बढ़ता है। भाग 4 में कुछ ऐसी मौखिक खेल गतिविधियाँ दी गई हैं। इन्हें देखें और कक्षा में इनका प्रयोग करें।

शब्दावली विकास खेल: किसी भी वाक्य, कहानी या सुनी गई बातों को समझने में शब्दों की बहुत बड़ी भूमिका होती है। इसलिए बच्चों के शब्द–भंडार में वृद्धि होना बहुत जरूरी हो जाता है। यह कोई अलग गतिविधि नहीं है। मौखिक रूप से सुनाने/ पढ़कर सुनाने/ चर्चा के दौरान आए कुछ ऐसे शब्दों,

जिनसे बच्चे अच्छी तरह परिचित नहीं हैं, उन पर व्यवस्थित तरीके से कार्य करने की जरूरत है। बच्चों के शब्दावली विकास के लिए निम्नलिखित तरीके से कार्य करें–

शब्दावली विकास के तरीके

- ऐसे शब्दों का चयन करें जिन्हें बच्चों ने कम सुना है या जिनसे वे परिचित ना हों। ये शब्द कहानी/चर्चा पर समझ बनाने के लिए एक मुख्य भूमिका में हों। एक दिन में 2–3 शब्दों पर ही कार्य करें।
- पहले शब्द के अर्थ पर चर्चा करें और फिर, इसका अर्थ कहानी के संदर्भ में समझाएँ।
- शब्द का 2–3 अलग–अलग वाक्यों में प्रयोग करके बताएँ।
- बच्चों को उन शब्दों का उपयोग करते हुए कुछ वाक्य बनाने को कहें। उन वाक्यों पर गौर करें कि बच्चे शब्द के अर्थ और संदर्भ को समझ कर वाक्य बना पा रहे हैं या नहीं।
- ऐसे शब्दों को एक चार्ट पर लिखकर शब्द–भंडार के शब्दों की सूची तैयार करें और उस पर सप्ताह में एक बार चर्चा करें।

कविता पोस्टरः कविता पोस्टर को कविता गाने के साथ–साथ बच्चों के साथ प्रिंट चेतना पर कार्य करने के लिए उपयोग में लाएँ। लोगोग्राफ़िक पठन अभ्यास के मौके भी बच्चों को दें। किसी कविता पर काम करने के दौरान उनमें आए 2–3 मुख्य शब्दों को बोर्ड पर लिखे और उसे एक छवि की तरह पढ़ने का अभ्यास (लोगोग्राफ़िक पठन) बच्चों से कराएँ। शुरुआत के दिनों में छोटी–छोटी कविताओं का चयन करें। यह गतिविधि कालांश की शुरुआत में करना उपयुक्त होगा। यहाँ ध्यान रखें कि कक्षा के सारे बच्चे इस गतिविधि में समान रूप से भाग ले रहे हो।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H201

इस पर कार्य करने के निम्नलिखित चरण हैं:

शिक्षक पहले बच्चों को कविता लय के साथ गाकर सुनाएँ।

फिर, शिक्षक कविता गाएँ व बच्चों को साथ में दोहराने के लिए कहें।

ऐसा 2–3 बार करें ताकि बच्चे कविता की लय और शब्दों को अच्छे से समझ पाएँ।

सुनाई गई कविता के विषय से जुड़ी कोई और कविता बच्चों को याद दिलाएँ और उन्हें सुनाने को कहें। अगर कोई ऐसी कविता नहीं है तो पिछली सुनी हुई कविता उनसे सुनें।

ध्यान देने योग्य बातें:

- कविता पर आधारित प्रश्न–उत्तर न पूछें। बच्चों के लिए कविता गाना एक रोचक अनुभव होना चाहिए।
- हो सकता है बच्चे कविता का पूरा अर्थ न समझ पाएँ। इसकी चिंता न करें। यहाँ उद्देश्य है कि बच्चों को उत्साहपूर्ण एवं रोमांचक माहौल में कविता सुनने और उसे दोहराने का मौका मिले।
- कविता पोस्टर पर कार्य करते समय बच्चों को चित्रों और लिखे हुए शब्दों/वाक्यों को देखने के लिए भी प्रोत्साहित करें।

शब्दावली का विवरण

- **प्रिंट चेतना:** बच्चों में यह समझ कि जो वे बोल रहे हैं, उसे लिखा भी जा सकता है और जो लिखा गया है, उसे पढ़ा जा सकता है, प्रिंट चेतना का हिस्सा है। वे मौखिक और लिखित भाषा के संबंध को समझने लगते हैं तथा वाक्यों और उनमें आए शब्दों में अंतर पहचानना शुरू कर देते हैं। वे किताबों और उनकी विशेषताओं को भी समझने लगते हैं।
- **लोगोग्राफ़िक पठन:** जब बच्चे लिखे हुए शब्दों को अर्थपूर्ण चित्रों की तरह पहचानने लगते हैं, तो वह लोगोग्राफ़िक पठन कहलाता है। प्रारंभिक कक्षाओं में उनके सामने अलग–अलग प्रकार की लिखित सामग्री आती है, जैसे– कहानियों की किताबें, कविताएँ आदि। जब शिक्षक इस सामग्री का उपयोग करते हुए अलग–अलग गतिविधियाँ करवाते हैं, तब धीरे–धीरे बच्चे उनमें लिखे गए कुछ चुनिंदा शब्द तस्वीर की तरह पहचानने लगते हैं।

कहानी पोस्टर पर कार्य: बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाने के दौरान कक्षा में उपलब्ध कहानी पोस्टर का इस्तेमाल करें। इसका इस्तेमाल शिक्षक प्रिंट चेतना पर कार्य करने के लिए भी कर सकते हैं। इसकी मदद से लोगोग्राफ़िक पठन अभ्यास के मौके भी बच्चों को दें। किसी कहानी पर काम करने के दौरान उसमें आए 2–3 मुख्य शब्दों को बोर्ड पर लिखें और उसे छवि की तरह पढ़ने का अभ्यास (लोगोग्राफ़िक पठन) बच्चों से कराएँ।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H201 -H205

कहानी पर कार्य: कहानी सुनाना (एवं पढ़ना) बच्चों के लिए अपनी एवं अन्य संस्कृतियों की समझ विकसित करता है और उन्हें सहिष्णु बनाता है। इसके साथ–ही–साथ, बच्चों का संज्ञानात्मक विकास भी होता है। कहानी सुनकर जब बच्चे उस पर प्रतिक्रिया दे रहे होते हैं तब वे मौखिक रूप से तर्क, अनुमान लगाना, विश्लेषण करना, आलोचनात्मक अन्वेषण जैसी जटिल मानसिक क्रियाएँ कर रहे होते हैं। कहानी सुनने से एवं उसके विभिन्न पहलुओं पर बातचीत करने से उनकी कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकता में वृद्धि होती है।

कहानी पर कार्य के अंतर्गत निम्नलिखित प्रकार की गतिविधियाँ कराई जाएँगी:

शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना

शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना

बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना

शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से स्थानीय कहानी सुनाना: कहानी सुनाने से पहले शिक्षक तैयारी के तौर पर कहानी समझ लें। अगर कोई मुश्किल शब्द या अवधारणा इस कहानी से जुड़ी है तो उसे नोट कर लें ताकि कहानी सुनाते समय आप उसे बच्चों को समझा सकें। इस गतिविधि के लिए कहानी के चयन में आवश्यक ध्यान देना चाहिए। बच्चों के लिए कहानी ऐसी ली जाए जो रोचक, छोटी, सरल और उनके बौद्धिक स्तर के अनुरूप हो। कहानी के लिए स्पष्ट और सरल भाषा शैली का इस्तेमाल करें। इसके साथ–साथ स्थानीय भाषा के शब्दों का भी उपयोग करें। एक दिन में एक ही कहानी पर कार्य करें।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H201 -H205

मौखिक रूप से कहानी सुनाने के चरण:

- कहानी सुनाने से पहले बच्चों को कहानी का नाम बताएँ और अनुमान लगवाएँ (कहानी में क्या होगा? कहानी में कौन होंगे?)
- कहानी सुनाते समय आवाज़ में उतार–चढ़ाव और हाव–भाव का उपयोग करें।
- पठन के दौरान अधिक चर्चा करने से बचें। बीच–बीच में 1–2 अनुमान लगाने वाले प्रश्नों को पूछ कर यह सुनिश्चित करें कि बच्चों का पूरा ध्यान कहानी सुनने पर है।
- अगर कोई कठिन या अनजान शब्द कहानी के दौरान मिले तो बच्चों को उसका अर्थ स्थानीय भाषा एवं उदाहरण की मदद से समझा दें।
- कहानी सुनाने के बाद बच्चों से बातचीत करें। ऐसे प्रश्नों की मदद लें जो बच्चों को अर्थ निर्माण में मदद करे।

शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना: किसी पाठ को पढ़कर सुनाने से बच्चों को लिखित भाषा को सुनकर समझने का मौका मिलता है, जिससे बच्चे लक्षित भाषा की वाक्य बनावट और शब्दावली समझ पाते हैं। इससे बच्चे यह भी समझ पाते हैं कि किसी पाठ को कैसे पढ़ा जाता है। पढ़कर सुनाना एक संवादात्मक प्रकिया है, जिसमें बच्चे और शिक्षक लिखित पाठ को आधार बनाकर समृद्ध चर्चा करते हैं। इसके लिए कहानी की कोई अच्छी किताब ली जा सकती है। किताब का चयन बच्चों के परिवेश, भाषायी स्तर, रुचि, इत्यादि को ध्यान में रखकर करना चाहिए। कहानी छोटी हो, उसमें वाक्य संरचना सरल हो एवं शब्द परिचित हों और बच्चों के संदर्भ से जुड़े हों।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H201 -H205

कहानी पढ़कर सुनाने के चरण:

- कहानी सुनाने से पहले कहानी के शीर्षक और चित्र को दिखाकर कहानी के बारे में अनुमान लगवाएँ।
- शिक्षक बच्चों को गोले या नज़दीक में बिठाकर ऊँची आवाज़ में उचित लय और उतार–चढ़ाव के साथ कहानी को पढ़कर सुनाएँ।
- पठन के दौरान अधिक चर्चा नहीं की जाए। ये जरूर सुनिश्चित करें कि बच्चों का कहानी सुनने पर पूरा ध्यान है।

कहानी सुनाने के बाद बच्चों के अनुमान पर चर्चा करें।

फिर, बच्चों से प्रश्नों की मदद से चर्चा को समृद्ध करें। इसके लिए बंद छोर (तथ्यात्मक प्रश्न) एवं खुले छोर (उच्चस्तरीय चिंतन कौशल के प्रश्न), दोनों तरह के प्रश्न पूछें।

खुले छोर के प्रश्न पूछकर बच्चों को कल्पना करने, तर्क–वितर्क करने, अपने अनुभव साझा करने, दो चीज़ों के बीच संबंध स्थापित करने, आलोचना करने एवं विश्लेषण करने के मौके दिए जाने चाहिए। इससे उनको अलग–अलग चीज़ों पर अपनी समझ बनाने का अवसर प्राप्त होगा और साथ–ही अपने विचारों एवं बातों को व्यवस्थित रूप से अभिव्यक्त करने का भी अवसर मिलेगा।

खुले छोर के प्रश्नों के उत्तर एक से अधिक हो सकते हैं। बच्चों के उत्तर उनके अनुभवों, घर एवं आस–पास के माहौल और दूसरों के साथ की गई बातचीत से प्रेरित होते हैं। अतः यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि बच्चों के उत्तरों को नकारा ना जाए। हरेक बच्चे का दृष्टिकोण दूसरों से अलग एवं समान रूप से महत्वपूर्ण है इसलिए इसे कक्षा में स्थान मिलना चाहिए। यहाँ सही और गलत होने की गुंजाइश न के बराबर है।

नोटः कलरव–2 के कहानी संबंधित पाठों पर कार्य करते समय इन बातों का एवं कहानी पढ़कर सुनाने के दिए गए चरणों को उपयोग में लाया जाना चाहिए।

कहानियों की किताबों का चयन

बच्चों को कहानी पढ़कर सुनाने के लिए सही किताबों का चयन करना आवश्यक है। कक्षा–2 के बच्चों के लिए किताबों का चयन करते समय निम्नलिखित बातों का ख़याल रखा जाना चाहिएः

- कहानियों की किताबों का चयन बच्चों के परिवेश, रुचि एवं उनके अनुभव के अनुरूप होना चाहिए। इनमें दी गई कहानियाँ उनके जीवन के लिए प्रासंगिक होनी चाहिए।
- शुरुआत में छोटी–छोटी कहानियों का चयन किया जाना चाहिए, जिसमें सीमित घटनाएँ एवं पात्र हों। समय के साथ थोड़ी बड़ी कहानियाँ उपयोग में ली जानी चाहिए जिनमें पहले की अपेक्षा ज़्यादा घटनाएँ एवं पात्र हों।
- कहानी का विषय एवं पटकथा बच्चों की रोज़मर्रा की दुनिया के नज़दीक होना चाहिए। इससे बच्चों को कहानियों से जुड़ने में मदद मिलती है। अमूर्त विषय या संज्ञानात्मक रूप से चुनौतीपूर्ण पटकथा को न चुनना बच्चों के हित में होता है।
- कहानी की किताब का चयन करते समय यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि इन कहानियों का अंत सरल एवं रोचक हो।
- छोटे बच्चों को प्रायः ऐसी कहानियाँ अच्छी लगती है जिनमें काल्पनिक पात्र एवं अद्भुत घटनाएँ हो, जैसे बोलती हुई बकरी, उड़ता हुआ घर, सब्जियों के बीच में झगड़े, आइसक्रीम का तालाब आदि। इसलिए कहानियों का चयन करते हुए इस बात पर ध्यान देना चाहिए।
- ये कहानियाँ ऐसी होनी चाहिए जो बच्चों की कल्पनाशीलता को बढ़ावा दे।

बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनानाः कहानी सुनना एक आनंददायक अनुभव तो है ही परंतु इसके साथ–ही, यह साक्षरता के कौशल से भी जुड़ा हुआ है। कहानी सुनने से बच्चों में मौखिक भाषा के कई कौशल विकसित होते हैं जिनमें से सुनी हुई कहानियों को अपने शब्दों में सुना पाना एक अहम कौशल है। बच्चों के समझ के स्तर को बढ़ाने में यह कौशल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जब बच्चे कहानी पर आधारित अपनी समझ को अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं तो उन्हें अपनी भाषाई क्षमता को उपयोग करने का एक महत्वपूर्ण अवसर मिलता है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H201 -H205

बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाने के चरणः

- पहले सुनाई गई किसी कहानी को संक्षेप में बच्चों को सुनाएँ।
- फिर, बच्चों को उसी कहानी को अपने शब्दों में सुनाने का अवसर दें। प्रयास करें कि कक्षा के सभी बच्चों को इस गतिविधि में हिस्सा लेने का मौका मिले।
- बच्चों द्वारा सुनाई गई कहानी की सराहना करें।
- अगर कहानी सुनाने की प्रक्रिया में बच्चों को मदद की आवश्यकता हो (शब्दावली या वाक्य संरचना के स्तर पर) तो अवश्य ही मदद करें।

इस गतिविधि में यह संभावना है कि बच्चे अपनी कल्पना से कहानी में कुछ अन्य घटनाएँ भी जोड़ें और वे कहानियों को और रोचक बना डालें। इस बात पर बच्चों को टोके बिना, उनकी प्रशंसा करें।

चर्चाः इस गतिविधि के अंतर्गत कक्षा में 2 तरह के कार्य किए जाएँगेः

चित्र पर चर्चा **अनुभवों पर चर्चा**

कक्षा 2 के सप्ताह 1–10 में चित्र पर चर्चा पर कार्य किया जाएगा एवं सप्ताह 11–16 में अनुभवों पर चर्चा की जाएगी। यहाँ चित्र पर चर्चा गतिविधि पर कैसे कार्य करेंगे, उस पर बातचीत की गई है। अनुभवों पर चर्चा से संबंधित बातचीत हम प्रथम कालांश में 'सहायक सामग्री से संबंधित गतिविधियों का विस्तृत विवरणः सप्ताह 11–16' में करेंगे।

चित्र पर चर्चाः कक्षा में बच्चों के साथ चर्चा करने के लिए चित्रों का उपयोग किया जाएगा। इसके लिए चित्र चार्ट में दिए गए चित्रों पर काम होगा।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H203 -H205

चित्र पर चर्चा करने के दौरान किन बातों का ख़याल रखा जाना चाहिए एवं चर्चा के विभिन्न पहलुओं पर कलरव–2 के पाठों पर कार्य के दौरान विस्तृत चर्चा करेंगे। इसलिए यहाँ पर हम केवल इसके चरणों को देखेंगे।

चित्र पर चर्चा करने के चरणः

सभी बच्चों को अर्द्ध गोले में शिक्षक के सामने चेहरा करके बिठाएँ। शिक्षक एवं बच्चे इतने समीप होने चाहिए कि सभी बच्चों को चित्र चार्ट स्पष्ट रूप से दिख रहा हो।

बच्चों को चित्र चार्ट देखने को कहें एवं चार्ट से संबंधित सीधे, सरल एवं तथ्यात्मक प्रश्न पूछें। *(जैसे– इस चित्र में क्या–क्या दिख रहा है? इस चित्र में कौन–कौन हैं?)* ऐसे प्रश्नों के पूछे जाने पर बच्चों को, चित्र को समग्र रूप से देखने का मौका मिलता है एवं चित्र के विभिन्न पहलुओं पर भी उनका ध्यान जाता है।

अब, चर्चा को आगे बढ़ाने के लिए अर्थ निर्माण के प्रश्न शामिल करें जिससे बच्चों को अनुमान लगाने, तर्क देने, कल्पना करने एवं अपने अनुभव साझा करने के मौके मिले। *(जैसे– तुम्हें यह कहाँ/ किस समय का चित्र लगता है और क्यों? इस चित्र में यह लड़की क्या सोच रही होगी? ये लोग क्या बात कर रहे होंगे?*

ध्यान देने योग्य बातेंः इस बात का ध्यान रखें की उपयोग में लाए जाने वाले चित्र रंगीन हों। ब्लैक एंड व्हाइट चित्रों में रंग न होने के कारण चित्रों के अनेक पहलुओं पर बातचीत करना संभव नहीं हो पाता है और बच्चों को यह नीरस भी लगता है।

कहानी पर कार्य एवं चर्चा की गतिविधियों से संबंधित लेखन कार्यः लेखन कार्य से संबंधित गतिविधियों पर चर्चा करने से लेखन कार्य क्या है एवं क्यों ज़रूरी है, इस पर बातचीत करना आवश्यक है। लिखने के बुनियादी कौशल (जैसे अक्षर–मात्राएँ जोड़कर शब्द लिखना) के साथ–साथ अपने शब्दों में अभिव्यक्ति और अर्थपूर्ण लेखन पर भी ध्यान देना आवश्यक है (जैसे मनोरंजन या अपने विचार / भावनाएं व्यक्त करने के लिए कुछ लिखना)।

इस आकृति में लेखन के बुनियादी कौशल और अपने शब्दों में अभिव्यक्ति या अर्थपूर्ण लेखन के बीच के संतुलन को दर्शाया गया है।

जब बच्चों के लिए शब्दों को सही रूप में लिखना स्वाभाविक हो जाता है, तब उनका अधिक से अधिक ध्यान अपने विचारों को सुंदर रूप से गढ़कर लिखने में लगता है। इसलिए प्राथमिक कक्षाओं में लेखन के बुनियादी कौशलों पर महारथ हासिल करना अत्यंत आवश्यक है, पर अर्थपूर्ण लेखन का काम बुनियादी कौशलों पर महारथ हासिल करने तक रोका नहीं जा सकता। बच्चों को शुरू से लेखन के द्वारा खुद को अभिव्यक्त करने के मौके भी मिलने चाहिए ताकि वे लेखन के कार्यों में रुचि लें और उसका महत्व समझें। आरंभिक वर्षों में लेखन चित्रों और आड़ी–तिरछी लकीरों का रूप लेता है, जिनके द्वारा बच्चे अपनी बात औरों तक पहुँचाते हैं।

कक्षा–2 में निम्नलिखित लेखन कार्य करवाए जाएँगे :

चित्र बनाना | **बच्चों द्वारा कही बातों को शब्द या वाक्य में लिखना** | **स्वतंत्र लेखन**

चित्र बनाना: बच्चों को चित्र बनाने के मौके दें। चित्र बनाना भी अभिव्यक्ति का माध्यम है। इस दौरान बच्चों को ये न सुझाएँ कि चित्र कैसे बनाएँ, कौन–से रंग इस्तेमाल करें आदि। इन चित्रों का संबंध कहानी या पाठ से हो सकता है जो उस दिन उन्हें बताया/सुनाया गया हो। बच्चे जो कुछ भी बनाएँ, उन पर बातचीत करें। इस चरण के पहले 1–2 महीने बाद से इस तरह के लेखन कार्य के स्तर को आगे बढ़ाया जाएगा। इसके अंतर्गत बच्चों को कहानी पर कार्य एवं चर्चा की गतिविधियों से संबंधित लेखन कार्य करने को दिए जाएँगे। **उदाहरण:**

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H213, H214

- सुनी हुई कहानी पर एक चित्र बनाओ और कुछ लिखो
- सुनी हुई कहानी में से अपने मनपसंद चरित्र का चित्र बनाओ और कुछ लिखो
- आज सुनी हुई कहानी में तुम्हें क्या अच्छा लगा, उस पर कुछ लिखने का प्रयास करो
- आज जिस चित्र पर चर्चा हुई, उसमें अगर तुम्हें कोई चित्र जोड़ना हो, तो तुम क्या जोड़ना चाहोगे, उसका चित्र बनाओ एवं कुछ लिखने का प्रयास करो
- आज जिस अनुभव के विषय पर चर्चा हुई, उस विषय पर एक चित्र बनाओ और अपने अनुभव को कुछ शब्दों या वाक्यों में लिखने का प्रयास करो

बच्चों द्वारा कही बातों को शब्द या वाक्य में लिखना: बच्चों द्वारा कही बात को शब्दों और वाक्यों में लिखना भी एक उपयोगी लेखन गतिविधि है। इससे बच्चों में यह संदेश जाता है कि हर कही जाने वाली बात लिखी भी जा सकती है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H213, H214

बच्चों द्वारा कही बातों को शब्द या वाक्य में लिखने के चरणः

शिक्षक बच्चों के साथ बातचीत के दौरान, उनके कहे शब्द/वाक्य बोर्ड पर लिखें। इन्हें पढ़कर सुनाएँ।

कहानी सुनाने के बाद बातचीत में बच्चों द्वारा बोले गए वाक्य बोर्ड पर लिखें। फिर पढ़कर सुनाएँ।

2–3 सप्ताह के बाद बच्चों के साथ मिलकर कोई छोटी कहानी/घटना को बोर्ड पर लिखें और उसे बच्चों को पढ़कर सुनाएँ। फिर बच्चों के साथ–साथ इसे पढ़ें।

स्वतंत्र लेखनः बच्चों को अपनी बात लिखने के लिए कुछ समय दें। इस दौरान वे जैसा चाहे लिख सकते हैं। वे शायद अच्छे से न लिख पाएँ, सिर्फ कोई लकीर, आकृति, वर्ण, ऐसा ही कुछ लिखें। आप बच्चों के साथ बैठें और उन्हें प्रोत्साहित करते रहें। लिखने के बाद उन्हें अपनी लिखावट साझा करने को कहें और इस पर बातचीत करें। बच्चों के लेखन कार्य को कक्षा में प्रदर्शित करें और एक निश्चित समय अंतराल के बाद इन्हें बदलें।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H213, H214

पठन

हम पहले बात कर चुकें हैं कि पठन एक जटिल प्रक्रिया हैं और इसमें कई छोटे–बड़े कौशलों का समायोजन है। पठन में कुशलता हासिल कर चुके पाठक में प्रवाह से शब्दों को पढ़ना और पढ़े हुए को समझने के कौशलों का विकास होना चाहिए।

कक्षा 1 में बच्चों ने लगभग सारे वर्ण–मात्रा सीख लिए होंगे और कलरव–1 के कुछ पाठों को भी पढ़ने का अभ्यास किया होगा। कक्षा–2 में बच्चों के पठन में प्रवाह के लिए प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग पर ध्यान देना है। प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग के अभ्यास के लिए विशेष पाठ विकसित किए गए हैं जो जटिलता के बढ़ते क्रम में रखे गए हैं।

सहज–2 पर कार्यः सप्ताह के जिन 3 दिनों में मौखिक भाषा विकास की गतिविधियों पर कार्य नहीं हो रहा होगा उन दिनों पठन पर कार्य होगा। पठन से संबंधित गतिविधियाँ सहज–2 से कराई जाएँगी। सहज–2 पर कार्य करने के लिए 40 मिनट का समय निर्धारित है।

सहज की मुख्य बातें

- इस पुस्तक में कुल 16 पाठ हैं। इन पाठों में छोटी–छोटी कहानियाँ दी गई हैं। हर पाठ के लिए 2 पृष्ठों को उपयोग में लिया गया है। मुख्य रूप से हर कहानी के 2 हिस्से हैं जिनको 2 चित्रों की सहायता से दर्शाया गया है।
- प्रत्येक कहानी में छोटे–छोटे वाक्य हैं। हर कहानी 8–15 वाक्यों के बीच की है। शुरुआत के पाठों में थोड़े कम वाक्य हैं और बाद के पाठों में थोड़े ज़्यादा। व्याकरण के दृष्टिकोण से, वाक्यों के संरचना को सरल रखा गया है। इसके साथ–साथ सरल एवं परिवेशीय शब्दों का उपयोग किया गया है।
- प्रत्येक कहानी में 1–2 घटनाएँ हैं जो संज्ञानात्मक रूप से सरल एवं परिवेशीय हैं।
- इसके साथ ही इस पुस्तक के शुरु में एक कविता व अंत में एक अधूरी कहानी पूरी करो गतिविधि भी दी गई है।

जब बच्चे बुनियादी डिकोडिंग कौशल सीखते हुए सरल शब्दों को पढ़ने लगते हैं तब उन्हें शिक्षक की मदद से छोटे–छोटे पाठ पढ़ने के लिए दिए जाने चाहिए। स्वतंत्र रूप से पढ़ने से पहले बच्चों को पढ़ने में मदद की आवश्यकता होती है। इसके लिए स्तरबद्ध सामग्री का इस्तेमाल किया जाता है।

जब बच्चे वाक्य और छोटे–छोटे पाठ पढ़ने लगते हैं तो उन्हें पठनीय सामग्री पढ़ने के भी मौके मिलने चाहिए। ऐसी पठनीय सामग्री से बच्चों को पढ़ने की सटीकता और गति को मजबूती मिलती है।

सहज के पाठों को विकसित करते समय विभिन्न थीमों को आधार बनाया गया और फिर इन थीमों के इर्द–गिर्द ही कहानियों या घटनाओं को बुना गया। इनमें बच्चों द्वारा सीख लिए गए वर्णों/मात्राओं का इस्तेमाल प्रमुखता से किया गया है पर इसे किसी शर्त की तरह नहीं माना गया है। इन्हें बनाने में इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि थीम ऐसी हो जो बच्चों के परिवेश और अनुभव से जुड़ती हो, जिसे कहानी की तरह विकसित किया जा सके और चित्रों द्वारा दर्शाया जा सके। इन्हें बच्चे शिक्षक की मदद से, चित्र और अनुमान के सहारे पढ़ेंगे। प्रत्येक पृष्ठ पर छोटे–छोटे वाक्यों के साथ चित्र होंगे। इन पाठों में ऐसे कई शब्द होंगे जिन्हें बच्चे पढ़ नहीं पाएँगे, पर विविध स्रोतों से शब्द को पहचानते होंगे। शब्द को पहचानने के कई स्रोत हो सकते हैं– चित्र के आधार पर अनुमान लगाना और संदर्भ से अनुमान लगाना आदि।

सहज पर कार्य करने के चरणः

पहला दिनः आदर्श वाचन

पहले दिन चित्र पर बातचीत (अनुमान), शिक्षक द्वारा आदर्श वाचन एवं अंत में पाठ से संबंधित संक्षिप्त बातचीत करना प्रस्तावित है। सभी बच्चों के साथ एक ही पाठ पर कार्य किया जाना है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H201-H206

पहले बच्चों को पाठ में दिए गए चित्रों को देखने के लिए कहें, फिर 1–2 मिनट बाद चित्रों से संबंधित बंद एवं खुले छोर के प्रश्न करें।

चित्रों पर बातचीत के बाद, शिक्षक द्वारा पाठ का आदर्श वाचन करना प्रस्तावित है। आदर्श वाचन के दौरान शिक्षक यह सुनिश्चित करें कि सभी बच्चे अपनी–अपनी किताबों में पढ़े जा रहे शब्दों/वाक्यों पर उँगली रखकर शिक्षक का अनुसरण कर रहे हों।

आदर्श वाचन की शुरुआत शीर्षक को पढ़कर करें। शिक्षक पूरी कहानी को हाव–भाव और आवाज़ में उतार–चढ़ाव के साथ सही गति से पढ़ें। एक पाठ का आदर्श वाचन शिक्षक द्वारा 2 बार किया जाना चाहिए।

अंत में, शिक्षक कहानी पर थोड़ी बातचीत करें।

दूसरा दिनः मार्गदर्शन में पठन

सहज–2 के किसी पाठ पर कार्य करने के दूसरे दिन शिक्षक के मार्गदर्शन में पठन अभ्यास किया जाना प्रस्तावित है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H201-H212

इस दिन की शुरुआत पाठ पर संक्षिप्त चर्चा से की जाएगी। पाठ पर बच्चों के पूर्व ज्ञान को सक्रिय किया जाएगा। इसके बाद, शिक्षक द्वारा पाठ का आदर्श वाचन किया जाएगा।

शिक्षक के आदर्श वाचन के उपरांत बच्चों द्वारा जोड़ों में पाठ को बारी–बारी से पढ़ा जाएगा। जब बच्चे जोड़ों में पढ़ रहें हों तब शिक्षक कुछ समय के लिए (5–7 मिनट) के लिए घूम–घूमकर अवलोकन करें और बच्चों को ज़रूरी मदद दें।

बाकी समय (10–15 मिनट) शिक्षक उन बच्चों के साथ काम करें जिन्हें पढ़ने में कठिनाई होती है। इन बच्चों की पहचान शिक्षक पहले से ही कर लें और इनको अपने मार्गदर्शन में पढ़ने को कहें और पढ़ने में उनकी मदद करें। बच्चों को हो रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए शिक्षक अपने स्तर पर योजना बनाएँ।

इसके बाद 5–7 मिनट में किन्हीं 2–3 बच्चों को पूरी कक्षा के सामने पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। उनके द्वारा पढ़ते समय हो रही गलतियों का संशोधन भी करें। परंतु यह ख़याल रखें कि इन बच्चों का मनोबल टूटना नहीं चाहिए। शिक्षक बच्चों द्वारा पढ़ने की कोशिश की सराहना करें एवं और पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

आख़िर में बच्चों को स्वतंत्र पठन के लिए 5–10 मिनट का समय दिया जाएगा। इस दौरान शिक्षक घूम–घूमकर अवलोकन करें और बच्चों को ज़रूरी मदद दें।

तीसरा दिनः स्वतंत्र पठन पर कार्य

हम सभी जानते हैं कि किसी भी पाठ को पढ़कर समझने के लिए शब्द पहचान और भाषायी कौशल दोनों में दक्षता आवश्यक है। शब्द पहचान में सिर्फ़ शब्दों को पहचान लेना ही काफ़ी नहीं है, बल्कि शब्दों को एक अच्छी गति से पढ़ पाने की दक्षता भी आवश्यक है। शब्दों को सटीकता और प्रवाह के साथ पढ़ पाना 'प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग' कहलाता है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H206-H212

डिकोडिंग के आधारभूत कौशल प्राप्त कर लेने के बाद यह ज़रूरी होता है कि बच्चों को प्रवाह के साथ डिकोडिंग के खूब सारे अभ्यास करवाए जाएँ। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर सहज–2 पर दो दिन कार्य करने के बाद शिक्षकों द्वारा प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग का अभ्यास कक्षा में करवाया जाएगा।

प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग के अभ्यास के साथ इसका आकलन भी ज़रूरी है। इसके लिए बच्चों द्वारा शब्दों को

पढ़ पाने की गति को मापा जाता है। प्रति मिनट सही पढ़े गए शब्दों की संख्या से इसका पता लगाया जाता है। अगर किसी बच्चे ने एक मिनट में 35 शब्द पढ़े हैं और उसमें से 31 शब्द सही हैं तो उस बच्चे की प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग की गति 31 शब्द प्रति मिनट मानी जाएगी। प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग का अभ्यास और आकलन साथ–साथ करने से शिक्षक को बच्चों की प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग पर हो रही प्रगति को समझने और उनमें एक सुनियोजित योजना के तहत निरंतर सुधार करने में मदद मिलेगी।

स्वतंत्र पठन पर कार्य करने के चरणः

बच्चों को जोड़े में बिठाएँ और उन्हें एक दूसरे को सहज–2 के उस सप्ताह कराए गए पाठ को पढ़कर सुनाने को कहें। इस पर 10–15 मिनट व्यतीत करना चाहिए।

3–4 बच्चों को सामने पढ़ने के लिए आमंत्रित करें। ये बच्चे वे नहीं होने चाहिए जिन्होंने कक्षा के समक्ष पिछले दिन पढ़ा है। इस दौरान बाकी बच्चे इन्हें ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए सुनेंगे। इस पर 7–10 मिनट व्यतीत करें।

शिक्षक बारी–बारी से 10–12 बच्चों को बुलाएँ और उन्हें 'अगला पाठ' पढ़ने को कहें। जब बच्चे पढ़ें तो उनके पठन स्तर का आकलन करें एवं उसका रिकॉर्ड रखें। इस दौरान बाकी बच्चे स्वतंत्र रूप के पठन कार्य जारी रखेंगे। इस कार्य में 20–25 मिनट दिया जाना चाहिए।

पठन स्तर के आकलन के लिए दिशा–निर्देशः

आकलन कब करें: प्रत्येक स्वतंत्र पठन के दौरान कम–से–कम 10 बच्चों के पठन स्तर की जाँच करें। हर 15 दिन पर हर बच्चे की जाँच हो, यह सुनिश्चित करें।

आकलन के लिए पाठ का चयनः जिस पाठ को पढ़ाया जा रहा है, उसके अगले पाठ को इस जाँच के लिए इस्तेमाल करें।

आकलन का तरीका और पठन स्तर की पहचानः आप बच्चों को सहज–2 से पाठ पढ़ने के लिए दें और आप अपनी पुस्तक में शब्द–दर–शब्द उसे देखें। नीचे दी गई तालिका के अनुसार बच्चों के पठन स्तर को चिह्नित करें:

बच्चों की पठन प्रक्रिया एवं पठन स्तर

पढ़ने की प्रक्रिया	स्तर
बच्चे नहीं पढ़ पा रहें हैं या प्रथम वाक्य में ही अटक गए हैं, या 1–2 शब्द छोड़कर बाकी सब गलत पढ़ रहे हैं।	स्तर 1
प्रत्येक वाक्य के लगभग आधे शब्दों को सही पढ़ पा रहें हैं, कुछ कठिनाइयाँ हो रही हैं।	स्तर 2
पाठ के ज़्यादातर शब्दों को सही पढ़ पा रहें हैं, मगर वाक्य की तरह नहीं पढ़ पा रहे हैं, तोड़–तोड़ कर पढ़ रहे हैं।	स्तर 3
पाठ को वाक्य–दर–वाक्य सही पढ़ पा रहे हैं और पढ़ने के सामान्य तरीके को प्रदर्शित कर पा रहे हैं।	स्तर 4

आकलन के बाद कार्ययोजना: स्तर के अनुसार बच्चों की मदद की योजना बनाएँ। मार्गदर्शन में पठन के दौरान जाँच के आधार पर उन बच्चों को ज्यादा सहयोग दें जो स्तर 2–3 में हैं। स्तर 1 में आ रहे बच्चों के साथ 'द्वितीय कालांश' के दौरान के दैनिक रूप से कार्य किया जाना चाहिए। इन बच्चों के साथ साप्ताहिक पुनरावृत्ति के समय भी कार्य किया जाना चाहिए।

ध्यान देने योग्य बातें: यहाँ यह ध्यान रखना ज़रूरी है कि इस प्रक्रिया में बच्चों को हतोत्साहित ना होना पड़े। इसलिए सभी बच्चों के लिए सामान्य प्रोत्साहन वाले वाक्य या शब्द ही इस्तेमाल करें। जो बच्चे प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग में आगे हैं, ज़रूरी नहीं है कि उन बच्चों की विशेष तारीफ़ हो। बच्चे सीखने की प्रक्रिया में अलग–अलग स्तर पर हो सकते हैं, मगर यह उपलब्धि का आखिरी पड़ाव नहीं है। प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग में पढ़ने के अभ्यास का बहुत महत्व है। भरपूर अभ्यास से बच्चों के स्तर में वृद्धि की जा सकती है।

जो बच्चे प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग में पीछे हैं, यानि प्रति मिनट उनके द्वारा सही पढ़े गए शब्दों की संख्या कम है, तो शिक्षक उन बच्चों के पढ़ने के दौरान हो रही गलतियों की प्रकृति पर ग़ौर करें। आप पठन अभ्यास के दौरान इस गलतियों के बारे में बात कर उन्हें सही पढ़ने के मौके दे सकते हैं। अगर एक समय में बच्चों को किसी एक प्रकार की गलती पर ध्यान आकर्षित कराया जाय तो वे बहुत जल्दी से उसे सुधारने लगते हैं।

बच्चों के स्तर की जाँच के लिए तालिका: नीचे दी गई तालिका को बच्चों के स्तर की जाँच के लिए इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इस तालिका में बच्चों के नाम के सामने उक्त सप्ताह के लिए उनके स्तर को लिखें।

बच्चों के प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग के आकलन के परिणाम

क्रं	नाम	सहज–2 के पाठ 1–16 में बच्चों द्वारा सही पढ़े गए शब्दों की संख्या															
		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16
1																	
2																	
3																	
4																	
5																	
6																	
7																	
8																	
9																	
10																	
11																	
12																	
13																	
14																	
15																	
16																	
17																	
18																	
19																	
20																	

15. प्रथम कालांश में सहायक सामग्री की गतिविधियों की साप्ताहिक कार्ययोजनाः सप्ताह 1–10

खंड	गतिविधि	पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	चौथा दिन	पाँचवाँ दिन	छठा दिन
मौखिक भाषा विकास एवं लेखन (40 मिनट) (सप्ताह में 3 दिन)	**कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने की गतिविधियाँः (5–7 मिनट)**						
	• कविता			✓			
	• मौखिक खेल गतिविधि	✓					
	• शब्दावली विकास की गतिविधियाँ						✓
	कविता/कहानी पोस्टर (15–20 मिनट)	✓					
	कहानी पर कार्य (15–20 मिनट)						
	• शिक्षक द्वारा मौखिक रूप से कहानी सुनाना • शिक्षक द्वारा कहानी पढ़कर सुनाना • बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना			✓			
	चर्चा (15–20 मिनट) • चित्र पर चर्चा						✓
	कहानी पर कार्य एवं चर्चा से संबंधित लेखन कार्य की गतिविधि प्रतिदिन 10–15 मिनट के लिए आवश्यक रूप से कराई जानी चाहिए।						
पठन (40 मिनट) (सप्ताह के बाकी 3 दिन)	**पठन**						
	• आदर्श वाचन		✓				
	• मार्गदर्शन में पठन				✓		
	• स्वतंत्र पठन					✓	

16. प्रथम कालांश की दैनिक कार्ययोजनाः सप्ताह 1–10

नमूना–1 मौखिक भाषा विकास की गतिविधियाँ एवं लेखन	
मौखिक भाषा विकास की गतिविधियाँ	**गतिविधियों को करने की प्रक्रिया**
कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने की गतिविधिः मौखिक खेल गतिविधि (5–7 मिनट)	• मौखिक खेल गतिविधि : 'आओ, बाज़ार लगाएँ!' को कक्षा में बच्चों के साथ करना। • बच्चों को आधे गोले में बिठाएँ ताकि सभी बच्चे एक–दूसरे के साथ अंतःक्रिया कर पाएँ। • बच्चों को गतिविधि से संबंधित निर्देश देना। शिक्षक को यह भी सुनिश्चित करना होगा कि बच्चों ने दिए गए निर्देशों को समझ लिया है। निर्देश धीरे–धीरे एवं सरल और छोटे–छोटे वाक्यों में देने चाहिए। • गतिविधि को करने के लिए कक्षा के सभी बच्चों को 2 समूहों में बाँट दें, पहला– खरीदार, दूसरा– विक्रेता। फिर इनको जोड़ियों में बाँट दें। हर जोड़ी में एक खरीदार एवं एक विक्रेता होने चाहिए। इसके बाद सभी जोड़ियों को एक–एक चीज़ बेचने/खरीदने को कहें।
बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना (15–20 मिनट)	• शिक्षक बच्चों को एक बार वह कहानी मौखिक रूप से सुनाएँ जिस पर बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाने का कार्य होना है। • फिर बारी–बारी से कुछ बच्चों को कहानी सुनाने के लिए आमंत्रित करें।
बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाने पर लेखन कार्य (10–15 मिनट)	• बच्चों को, कहानी के आधार पर चित्र बनाने को कहें एवं साथ–ही कुछ शब्दों या 1–2 सरल वाक्य लिखने को कहें। इसके लिए 5–7 मिनट का समय दें। • समय समाप्त होने पर कुछ बच्चों को अपना चित्र पूरी कक्षा के सामने दिखाने को कहें और यह भी बताने को कहें कि उन्होंने क्या बनाया एवं लिखा है। लेखन कार्य प्रत्येक दिन होना है, इसलिए शिक्षक का प्रयास यह रहना चाहिए कि एक सप्ताह में सभी बच्चों को अपने चित्र कक्षा के समक्ष प्रस्तुत करने का एवं उस पर बोलने का मौका मिले। • आख़िर में, बच्चों के लेखन कार्य को कक्षा की किसी दीवार में लगाएँ।

नमूना–2 पठन (सहज–2 पर कार्य)	
गतिविधियाँ	**गतिविधियों को करने की प्रक्रिया**
आदर्श वाचन (40 मिनट)	• शिक्षक/शिक्षिका बच्चों को पाठ 'साइकिल' के चित्र देखने के लिए कहें और उसके बाद चित्रों पर बच्चों के साथ चर्चा करें–चित्रों में क्या–क्या दिखाई से रहा है?, यह लड़का साइकिल से कहाँ जा रहा होगा?, लड़का साइकिल से कैसे गिरा होगा? इत्यादि। इसमें शिक्षक 3–5 मिनट व्यतीत करें। • इसके बाद शिक्षक/शिक्षिका बच्चों से चित्रों के आधार पर पाठ के बारे में अनुमान लगाने को कहें– यह कहानी किसके बारे में होगी?, इस कहानी में क्या होगा? इसमें शिक्षक 2–3 मिनट व्यतीत करें। • इसके बाद शिक्षक/शिक्षिका हाव–भाव और उतार–चढ़ाव के साथ पाठ का दो बार आदर्श वाचन करें। शिक्षक/शिक्षिका यह सुनिश्चित करें कि सभी बच्चे अपनी किताबों में पढ़े जा रहे शब्दों/ वाक्यों पर उँगली रखकर शिक्षक का अनुसरण करें। इसमें 5–7 मिनट देना पर्याप्त होगा। • इसके बाद शिक्षक/शिक्षिका बच्चों द्वारा लगाए गए अनुमान पर बातचीत करें– क्या कहानी वैसी ही थी, जैसी आप लोगों ने सोची थी?, कहानी में क्या अलग हुआ?, कहानी में ऐसा क्या हुआ जो आपकी सोच से मिलता है? इत्यादि। • शिक्षक/शिक्षिका कहानी से संबंधित कुछ उच्चस्तरीय प्रश्न भी पूछें– इस कहानी का अगर कोई और शीर्षक रखना हो तो आप क्या रखेंगे और क्यों?, इस कहानी के अगर पात्र बदलने हों तो आप किस पात्र को लाना चाहेंगे और क्यों?

17. प्रथम कालांश की गतिविधियों का विस्तृत विवरणः सप्ताह 11–16

इन सप्ताहों में भी पहले की तरह दोनों घटकों पर कार्य किया जाएगाः मौखिक भाषा विकास व लेखन एवं पठन

मौखिक भाषा विकास एवं लेखन

कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने की गतिविधियाँ – सप्ताह 1–10 तक जिस तरह से इन गतिविधियों पर कार्य किया जा रहा है, अब भी उसी प्रकार से इन पर कार्य किया जाना है। लेकिन अब बच्चों के सीखने के स्तर में वृद्धि हुई होगी इसलिए थोड़ी बड़ी कविताएँ एवं थोड़ी जटिल मौखिक खेल एवं शब्दावली विकास की गतिविधियों को उपयोग में लिया जाना चाहिए। सप्ताह 11–16 में भी इन पर 5–7 मिनट ही दिया जाना है।

कहानी पर कार्यः सप्ताह 11–16 में भी पहले की ही तरह कहानियों पर कार्य किया जाएगा। प्रत्येक सप्ताह में इस पर कार्य करने के लिए 1 दिन प्रस्तावित है।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H201-H205

चर्चाः सप्ताह 1–10 में हमने चर्चा के अंतर्गत 10 चित्र चार्ट पर व्यवस्थित तरीके से काम किया था। सप्ताह 11–16 में बच्चों के अनुभव पर कार्य करना प्रस्तावित है।

अनुभव पर चर्चाः अनुभव पर चर्चा करना मौखिक भाषा विकास की एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। बच्चों से उनके अनुभव सुनने से पहले शिक्षक को भी अपने अनुभव सुनाने चाहिए। उदाहरण के लिए, अगर बच्चों से उनकी दिनचर्या पर चर्चा कर रहे हैं तो शिक्षक बता सकते हैं कि वे दिन भर क्या–क्या करते हैं। किसी एक दिन एक अनुभव पर चर्चा कर सकते हैं। अगर विषय ऐसा है जिसमें बच्चों को मज़ा आ रहा है और उनकी खूब भागीदारी हो रही है तो एक विषय पर दो या तीन दिन तक भी चर्चा की जा सकती है। बच्चों के अनुभव

प्रेरणा सूची की दक्षताएँः H203 H204

पर चर्चा के लिए निम्नलिखित विषय लिए जा सकते हैं:

अनुभव पर चर्चा करने के चरण:

शिक्षक पहले किसी एक विषय का चयन करें। ये विषय बच्चे के स्तर एवं परिवेश वाले हों।

चयनित विषय पर शिक्षक बच्चों के साथ थोड़ी बातचीत करके उनके पूर्वज्ञान को सक्रिय करें।

शिक्षक विषय से संबंधित अपने अनुभव बच्चों के साथ साझा करें। इससे बच्चों को अपने अनुभव को व्यवस्थित रूप में आकार देकर दूसरों के साथ साझा करने में मदद मिलती है।

इसके बाद प्रत्येक बच्चे को अपने अनुभव कक्षा में सुनाने का अवसर दें। कोशिश करें कि सभी बच्चों को पूरी चर्चा के दौरान कम–से–कम एक बार बोलने का मौका अवश्य मिले।

बच्चों के अनुभव के लिए कुछ विषय		
घर पर किसी मेहमान का आना	दोस्त से झगड़ा	मौसम का अनुभव– बरसात, सर्दी, गर्मी
अपनी पसंद का टी. वी. कार्यक्रम	पोस्ट ऑफिस जाने का अनुभव	स्कूल में पिकनिक
पसंदीदा खाने की चीज	स्कूल में किसी त्योहार का मनाना	बाज़ार घूमने का अनुभव
गर्मियों की छुट्टी में नानी के घर	मेरा जन्मदिन	परिवार में हुई शादी का अनुभव
बरसात का एक दिन	पसंदीदा कार्टून	पसंदीदा किताब या कहानी

सृजनात्मक कार्य: इस चरण में बच्चों के लिए कई ऐसी मौखिक सृजनात्मक गतिविधियाँ प्रस्तावित की गई हैं जो समूह में की जानी हैं। ऐसी गतिविधियाँ बच्चों को सोचने, अपने अनुभव को साझा करने, आपस में तर्क करने, नयी रचना करने और सामूहिक जवाबदेही निभाने जैसे मौके उपलब्ध कराएँगी। प्रत्येक सप्ताह एक दिन इन गतिविधियों पर कक्षा में काम करें। इस पर काम करने के आवश्यक दिशा–निर्देश नीचे दिए गए हैं:

मौखिक भाषा विकास में सृजनात्मक कार्य सप्ताह में 1 दिन किए जाएँगे। इस कार्य के पहले बच्चों को उप–समूहों में बाँटें और हर 2 सप्ताहों के बाद समूहों को बदलते रहें।

समूह में सृजनात्मक कार्य कैसे करवाएँ?

- इस संदर्शिका में दी गई गतिविधियों या शिक्षक अपने अनुसार किसी गतिविधि का चुनाव कर उसकी तैयारी कर लें। कोई भी गतिविधि कराने से पहले उससे संबंधित निर्देश एवं प्रक्रिया को पढ़ें और उपयोग में आने वाली सारी सामग्रियों को भी पहले से तैयार रखें।
- बच्चों को समूह में बाँटे। हर समूह में बच्चों की संख्या बराबर रखें।
- सारे समूह बनाने के बाद उन्हें सर्वसम्मति से अपना ग्रुप लीडर चुनने को कहें। ग्रुप लीडर यह सुनिश्चित करेगा/करेगी कि ग्रुप का हर एक सदस्य गतिविधि में हिस्सा ले। वे इसका भी ध्यान रखेंगें कि हर समूह समय पर अपना कार्य समाप्त कर ले।
- सभी समूहों को कार्य समझाएँ और यह सुनिश्चित करें कि सभी समूहों ने अच्छे से कार्य कर लिया हैं। आप सरल भाषा में अपने निर्देश दें और गतिविधि का उदाहरण देकर समझाएँ।

- शिक्षक बीच–बीच में कक्षा को यह बताते रहें कि गतिविधि समाप्त करने में कितना समय बाकी रह गया है। इसका ध्यान रखें, क्योंकि शायद शुरुआत में बच्चों को गतिविधि के एक चरण से दूसरे चरण में जाते वक़्त थोड़ा समय लग सकता है।
- प्रस्तुति के लिए समूह के हर बच्चे की भागीदारी अपेक्षित है। अगर प्रस्तुति का समय नहीं है तो इस पर गौर करें कि ऐसे कौन से बच्चे हैं जो अपनी समझ को दूसरों से साथ साझा करने में हिचकते हैं, उन बच्चों को प्रोत्साहित करें और बोलने के लिए प्रेरित करें।

बच्चों को समूहों में बाँटने के कुछ उदाहरण

एक कटोरे में 5 अलग–अलग रंग के पेपर की पर्ची रखें। याद रहें कि यह अलग–अलग रंग की पर्चियों की संख्या एक बराबर हो और कक्षा के हर एक बच्चे के लिए हो। हर बच्चे के पास आप इस कटोरे को लेकर जाएँ और आँख बंद करके एक पर्ची उठाने को कहें। कक्षा के 5 अलग–अलग जगह पर इन रंगों का पेपर लगा दें या रंगों के नाम को लिख दें। अब बच्चों को रंगों के आधार पर अपने अपने समूह में जाने को कहें।
आप अलग–अलग शब्दों का वर्ग बना दें। जैसे जानवर, पक्षी, सब्जी, फल एवं फूल। पर्चियों पर इन हर वर्ग के 5 चीजों के नाम लिख दें– जैसे, जानवर– चूहा, बंदर, हाथी, बकरी और शेर। पर्ची बाँटने के पहले ही बच्चों को इन वर्गो के बारे में बता दें कि पर्चियों में 5 जानवरों, 5 पक्षियों, 5 सब्जियों, 5 फलों एवं 5 फूलों के नाम लिखें है। हर बच्चे को एक–एक पर्ची उठाने को कहें और उन्हें इन्हीं वर्गों में बँट कर समूह में कार्य करने को है।

इसके अलावा आप अपनी मर्ज़ी से भी समूह बना सकते हैं। नए नए तरीकों से समूह बनाने से बच्चों को आनंद आता है। इन गतिविधियों का उद्देश्य सिर्फ समूह बनाना है। शिक्षक समूह बनाने की तैयारी पहले से कर लें। ताकि इसमें ज़्यादा समय ना जाए।

बच्चों को जोड़ों में बाँटने के कुछ उदाहरण

बच्चों को 2 लाइन बनाकर खड़े हो जाने को कहें। दोनों लाइनों में बच्चों की संख्या बराबर होनी चाहिए। फिर इन दोनों लाइनों के बच्चों को एक दूसरे के आमने–सामने खड़े हो जाने को कहें। फिर वे एक दूसरे से हाथ मिलाएँ। हाथ मिला रहें बच्चे एक दूसरे के जोड़ीदार होंगे। अगर दोनों लाइनों में बच्चों की संख्या बराबर नहीं है तो आप एक 3 बच्चों का समूह भी बना सकते हैं।
बच्चों के नाम की आइसक्रीम स्टिक का उपयोग करें और कक्षा में जितनी भी उपस्थिति है, उसके बिल्कुल आधी की संख्या में बच्चों को अपनी मर्ज़ी से आगे आने को कहें। बारी–बारी से इन बच्चों को गत्ते में से 2–2 आइसक्रीम स्टिक निकालने को कहें। उदाहरण– कोई बच्चा 2 आइसक्रीम स्टिक उठाता है, शिक्षक उन 2 बच्चों का नाम पुकारते हैं और वे बच्चे 1 जोड़ी बन जाते हैं। इसी प्रकार, सारे बच्चों को जोड़ियों में बाँटा जाता है।

अवलोकन एवं प्रोत्साहन

- बच्चों द्वारा गतिविधि करते समय आप कक्षा में घूम–घूम कर उनके कार्य का अवलोकन करें और उन्हें ज़रूरी मदद प्रदान करें।

- हर समूह अलग–अलग उत्तर लेकर आ सकता हैं। इनमें सही या गलत की पाबंदी नहीं है इसलिए बेहतर यही होगा कि सही या गलत के ढांचे या मान्यताओं में ना समय लगाया जाए। ये सारी गतिविधियाँ बच्चों की समझ को सुदृढ़ करने के लिए है। अगर बच्चे के काम को सही या गलत के मापदण्डों से देखेंगे तो बच्चे इन गतिविधियों में भाग लेने से और उत्तर देने से कतराने लगेंगे। उदाहरण– ''यह सही नहीं है।'' इसके बजाए यह कहना उचित होगा– "अगर आप इसे ऐसा लिखें तो बेहतर होगा या आपको क्या लगता है कि इसे और बेहतर कैसे बनाया जा सकता है (बच्चों को सोचने का मौका दें और ज़रूरत पड़ने पर अपने सुझावों को उनके साथ साझा करें)।''
- अगर बच्चे अपेक्षित तरीके से कार्य नहीं कर पा रहें हों तो आप उन्हें सही उत्तर देने के बजाए सुझाव दें और बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करें। बच्चों को यह महसूस कराना कि आप उन पर विश्वास करते हैं और उनकी मदद के लिए उनके साथ खड़े हैं, यह उनके समग्र विकास के लिए अति आवश्यक है।

सृजनात्मक कार्य की गतिविधियाँ: भाग 4 में सृजनात्मक कार्य में उपयोग की जाने वाली गतिविधियाँ दी गई हैं। जब भी कक्षा में इन गतिविधियों पर कार्य करना हो तो भाग 4 में सृजनात्मक कार्य के गतिविधियों को पहले पढ़कर समझ लें। इससे कक्षा में इन पर कार्य करने में सुविधा होगी।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H203

कहानी एवं चर्चा से संबंधित लेखन कार्य: पूर्व की ही तरह यहाँ भी लेखन कार्य किया जाना प्रस्तावित है। कहानी या चर्चा पर व्यवस्थित रूप से 15–20 मिनट तक कार्य करने के बाद 10–15 मिनट लेखन कार्य को दिया जाना है। जब सृजनात्मक कार्य करवाया जा रहा है तो अलग से इस कालांश में लेखन कार्य करवाने की आवश्यकता नहीं है। पूरा 25–30 मिनट सृजनात्मक कार्य में व्यतीत होना चाहिए।

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H213, H214

पठन

इस चरण में भी पहले चरण की तरह ही पठन के अंतर्गत तीन अलग–अलग गतिविधियाँ करवाई जाएँगी:

- **शिक्षक द्वारा आदर्श पठन**
- **शिक्षक के मार्गदर्शन में पठन**
- **स्वतंत्र पठन**

प्रेरणा सूची की दक्षताएँ: H201-H212

इन तीनों पर वैसे तो पहले की ही तरह कार्य होगा, परंतु अब पाठों का कठिनाई स्तर पहले से ज्यादा होगा और पाठों में वाक्यों की संख्या भी पहले से ज्यादा होगी। शिक्षक पाठ को पढ़ते हुए और पढ़ाने के बाद बच्चों के साथ समझ आधारित उच्च–स्तरीय प्रश्नों पर चर्चा ज्यादा करें। साथ ही बच्चों को सोचने और पाठ पर अपने विचार साझा करने के अधिक मौके दें। इसके साथ ही अब बच्चों को स्वयं पाठ पढ़ने के ज्यादा से ज्यादा मौके उपलब्ध करवाएँ।

18. प्रथम कालांश में सहायक सामग्री की गतिविधियों की साप्ताहिक कार्ययोजनाः सप्ताह 11–16

खंड	गतिविधि	पहला दिन	दूसरा दिन	तीसरा दिन	चौथा दिन	पाँचवाँ दिन	छठा दिन
मौखिक भाषा विकास एवं लेखन (40 मिनट) (सप्ताह में 3 दिन)	**कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने की गतिविधियाँः (5–7 मिनट)**						
	• कविता			✓			
	• मौखिक खेल गतिविधि	✓					
	• शब्दावली विकास की गतिविधियाँ						✓
	सृजनात्मक कार्य (20–25 मिनट)						✓
	कहानी पर कार्य (15–20 मिनट)						
	• मौखिक रूप से कहानी सुनाना • कहानी पढ़कर सुनाना • बच्चों द्वारा अपने शब्दों में कहानी सुनाना *सप्ताह–दर–सप्ताह गतिविधियों में बदलाव करें। एक तरह की गतिविधि हर सप्ताह नहीं कराई जानी चाहिए।*			✓			
	अनुभव पर चर्चा (15–20 मिनट)	✓					
	कहानी पर कार्य एवं अनुभव पर चर्चा से संबंधित लेखन कार्य की गतिविधि 10–15 मिनट के लिए आवश्यक रूप से कराई जानी चाहिए।						
पठन (40 मिनट) (सप्ताह के बाकी 3 दिन)	**पठन**						
	• आदर्श वाचन		✓				
	• मार्गदर्शन पठन				✓		
	• स्वतंत्र पठन					✓	

19. प्रथम कालांश की दैनिक कार्ययोजनाः सप्ताह 11–16

नमूना–1 मौखिक भाषा विकास की गतिविधियाँ एवं लेखन	
गतिविधियाँ	**गतिविधियों को करने की प्रक्रिया**
कक्षा में अनुकूल वातावरण बनाने की गतिविधियाँ (5–7 मिनट)	• कलरव–2 की कविता 'कबूतर' को बच्चों के साथ हाव–भाव एवं लय के साथ गाएँ।
अनुभव पर चर्चा (15–20 मिनट)	• कक्षा में मेले पर बच्चों के अनुभव पर चर्चा करें। • सबसे पहले बच्चों को ऐसे आधे गोले में बिठाएँ जिससे शिक्षक सभी बच्चों को देख सकें एवं सभी बच्चे भी एक–दूसरे एवं शिक्षक को देख सकें। ऐसी बैठक व्यवस्था कक्षा में बातचीत एवं चर्चा के लिए सही मानी जाती है। • सबसे पहले शिक्षक मेले में जाने के अपने अनुभव को साझा करें। इस दौरान यह याद रखें कि वाक्य छोटे–छोटे हों एवं सरल शब्दों का प्रयोग किया जाए। अपने अनुभव को 5–7 वाक्यों में बच्चों के साथ साझा करें। शिक्षक द्वारा साझा किए जाने की यह प्रक्रिया महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे बच्चों को सोचने का एक ढाँचा मिल जाता है और अपने विचारों को शब्दों एवं वाक्यों में कैसे प्रस्तुत करना है, इसका एक उदाहरण भी उन्हें मिलता है। • इसके बाद बच्चों को 1–2 मिनट का समय दें ताकि बच्चे इस विषय पर अपने अनुभवों पर विचार कर सकें। • इसके बाद प्रत्येक बच्चे को अपने–अपने अनुभव साझा करने को कहें। प्रयास यह होना चाहिए कि ज़्यादा–से–ज़्यादा बच्चे इस गतिविधि में हिस्सा ले पाएँ। जो बच्चे कक्षा में कम बोलते हों, उन्हें बोलने के लिए प्रोत्साहित करें। • अंत में, सभी समूहों को अपनी साइकिल पर 2–3 वाक्य लिखने को भी कहें।

पठन (सहज–2 पर कार्य)	
गतिविधियाँ	**गतिविधियों को करने की प्रक्रिया**
दूसरा दिनः शिक्षक के मार्गदर्शन में पठन (40 मिनट)	• शिक्षक द्वारा पाठ पर संक्षिप्त चर्चा की जाए जिससे बच्चों को कहानी याद आ जाए एवं वे गतिविधि से जुड़ पाएँ। इसमें शिक्षक 3–5 मिनट व्यतीत करें। • इसके बाद शिक्षक पाठ का एक बार आदर्श वाचन करें। अगर शिक्षक को ज़रूरत महसूस हो तो दुबारा भी पाठ का आदर्श वाचन कर सकते हैं। इसमें 3–5 मिनट देना पर्याप्त होगा। • इसके बाद, बच्चों द्वारा जोड़ों में पाठ को बारी–बारी से पढ़ा जाएगा। जब बच्चे जोड़ो में पढ़ रहें हो तब शिक्षक कुछ समय के लिए (5–7 मिनट) के लिए घूम–घूमकर अवलोकन करें और बच्चों को ज़रूरी मदद दें। • अगले 10–15 मिनट में शिक्षक उन बच्चों के साथ काम करें जिन्हें पढ़ने में कठिनाई होती है। • इन बच्चों की पहचान शिक्षक पहले से ही कर लें और इनको अपने मार्गदर्शन में पढ़ने को कहें और पढ़ने में उनकी मदद करें। बच्चों की कठिनाइयों की पहचान कर उन्हें दूर करने की योजना शिक्षक को अपने स्तर पर बनानी होगी। • इसके बाद शिक्षक किन्हीं 2–3 बच्चों को पूरी कक्षा के सामने पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। उनके द्वारा पढ़ते समय हो रही गलतियों का संशोधन भी करें। • अंत में, बच्चों को स्वतंत्र पढ़ने के लिए 5–10 मिनट का समय दें। इस दौरान कक्षा में घूम–घूमकर अवलोकन करें और जिन बच्चों को मदद की ज़रूरत हो रही हो, उन्हें सहायता करें।

20. कलरव–2 एवं प्रेरणा सूची की दक्षताएँ

पाठ / दक्षताएँ	H201	H202	H203	H204	H205	H206	H207	H208	H209	H210	H211	H212	H213	H214
पाठ–1 जिसने सूरज चाँद बनाया	✓				✓									
पाठ–2 पास–पड़ोस	✓	✓					✓	✓			✓		✓	
पाठ–3 बया हमारी चिड़िया रानी	✓	✓	✓	✓			✓			✓	✓			
पाठ–4 देखभाल					✓					✓	✓		✓	✓
पाठ–5 टपका का डर	✓	✓	✓	✓				✓					✓	✓
पाठ–6 ममता का घर	✓	✓	✓	✓						✓	✓			
पाठ–7 कबूतर	✓	✓	✓	✓	✓					✓	✓		✓	
पाठ–8 मेला	✓	✓	✓										✓	
पाठ–9 नाव चली	✓	✓									✓		✓	✓
पाठ–10 चाँद	✓	✓		✓						✓		✓	✓	
पाठ–11 नंदू का जुकाम	✓	✓						✓	✓	✓	✓		✓	
पाठ–12 जगतपुर गाँव के बच्चे	✓	✓		✓						✓			✓	✓
पाठ–13 किसान की चतुराई	✓	✓		✓						✓	✓		✓	✓
पाठ–14 मैं कौन हूँ?	✓	✓		✓	✓			✓					✓	✓
पाठ–15 कद्दू जी की बारात	✓										✓		✓	✓
पाठ–16 गाँव	✓	✓	✓							✓	✓		✓	✓
पाठ–17 हमारे सहयोगी				✓				✓			✓		✓	
पाठ–18 परी		✓		✓		✓				✓			✓	✓
पाठ–19 हमारे राष्ट्रीय प्रतीक	✓	✓						✓		✓			✓	
पाठ–20 हमसे सब कहते	✓	✓	✓	✓							✓		✓	
पाठ–21 पूँछ हिलाने वाला भेड़िया	✓	✓						✓		✓				

21. द्वितीय कालांश में कलरव–2 के पाठों पर कार्य

कलरव–2 में निम्नलिखित गतिविधियाँ दी गई हैं:

कविता | कहानी | चित्र पर चर्चा | कॉमिक स्ट्रिप

इन सभी गतिविधियों पर हम बारी–बारी से चर्चा करेंगे और समझेंगे कि इन पर चरणबद्ध तरीके से कैसे कार्य किया जा सकता है

कविता पर कार्य

प्रत्येक कविता पर दो दिन कार्य किया जाना प्रस्तावित है। कविता पर कैसे कार्य किया जाएगा, इसका एक ढाँचा नीचे दिया गया है।

कलरव–2 की कविताओं से संबंधित पाठों पर कार्य करने के चरण:

पहला दिन	• चित्र को देखकर अनुमान लगाना– कविता किस बारे में हो सकती है? • शिक्षक द्वारा कविता का दो बार हाव–भाव के साथ आदर्श वाचन किया जाना। • इसके बाद शिक्षक और बच्चों द्वारा साथ में कविता गाना। • बच्चों द्वारा स्वतंत्र रूप से कविता को हाव–भाव के साथ गाने का प्रयास। • आख़िर में, पाठ के अंत में दिए गए कुछ सरल अभ्यासों पर कार्य। उदाहरण– खाली स्थान भरो, विलोम शब्द, शब्दों को पूरा करो, चित्र बनाकर रंग भरो, पाठ के आधार पर सही वाक्य पर (✓) का निशान लगाओ आदि। **प्रत्येक गतिविधि पर पहले बच्चों से बात करें और उन्हें उदाहरण देकर समझाएँ। फिर लिखने को कहें।**
दूसरा दिन	• कविता पर आधारित सरल चर्चा की जाएगी। उदाहरण– कल हमने कौन–सी कविता पढ़ी थी? कविता किसके बारे में थी? ऐसी और कोई कविता सुनी हो तो सुनाओ। • शिक्षक द्वारा कविता का एक बार हाव–भाव के साथ आदर्श वाचन किया जाएगा। • एक–दो बार शिक्षक और बच्चों द्वारा साथ में कविता गायी जाएगी। • फिर बच्चों द्वारा स्वतंत्र रूप से कविता को हाव–भाव के साथ गाया जाएगा। • आख़िर में पाठ के अंत में दिए गए प्रश्न–उत्तर पर मौखिक रूप से चर्चा करें और उन शब्दों की वर्तनी लिख दें जो बच्चों को ख़ुद से उत्तर लिखने में मदद करे। • जिन बच्चों को पाठों के प्रश्न–उत्तर को वाक्यों में लिखने में कठिनाई हो रही है, उन्हें केवल कुछ शब्दों में भी अपना जवाब लिखने को कहा जा सकता है। अगर कक्षा में कुछ ऐसे बच्चे भी हैं, जो स्वतंत्र रूप से उत्तर लिखने में बहुत संघर्ष कर रहे हों, व्यक्तिगत रूप से उनकी मदद करनी चाहिए।

कहानी पर कार्य

प्रत्येक कहानी पर 4 दिन कार्य किया जाना प्रस्तावित है। इन चार दिनों में कहानी पर कैसे कार्य किया जाएगा, इसका एक ढाँचा दिया गया है।

कलरव–2 की कहानियों से संबंधित पाठों पर कार्य करने के चरण:

पहला दिन	• पाठ में दिए गए चित्रों द्वारा बच्चों को कहानी के बारे में अनुमान लगाने पर कार्य। उदाहरण– चित्रों में क्या दिख रहा है? इन चित्रों को देखकर क्या लग रहा है? कहानी किस पर है? इस कहानी में कौन–कौन (पात्र) होंगे? कहानी में क्या होगा? कहानी का नाम क्या हो सकता है? आदि। • फिर, शिक्षक द्वारा पाठ का हाव–भाव के साथ पढ़कर या आदर्श वाचन किया जाएगा। • इसके बाद, बच्चों के अनुमान पर बातचीत की जाएगी और शिक्षक द्वारा कहानी से संबंधित कुछ प्रश्न किए जाएँगे।
दूसरा दिन	• शिक्षक द्वारा पाठ का हाव–भाव के साथ पढ़कर या आदर्श वाचन किया जाएगा। • फिर, पाठ के कठिन शब्दों को बोर्ड पर लिखकर, उसे दो–तीन बार पढ़ें और बच्चों का ध्यान आकर्षित करें। • फिर, बच्चों को 3–4 के समूह में बाँटें और उन्हें पाठ पढ़ने को कहें। शिक्षक उन समूहों में जाएँ जिन्हें पाठ को पढ़ने में मदद की ज़रूरत है। शिक्षक आवश्यकता के अनुसार उन्हें मदद करें। कोशिश करें कि इस कार्य के लिए ज़्यादा से ज़्यादा समय मिले। • पाठ के अंत में दिए गए कुछ सरल अभ्यासों पर कार्य किया जाएगा।
तीसरा दिन	• सबसे पहले बच्चों को अपने शब्दों में कहानी सुनाने को कहा जाएगा। • इसके बाद, पाठ के आधार पर विस्तृत चर्चा की जाएगी। **पाठ 5– टपका का डर** • विस्तृत चर्चा के उदाहरण के लिए कुछ प्रश्न ★ बरसात के मौसम में तुम्हें सबसे अच्छा एवं सबसे खराब क्या लगता है? ★ अगर तुम दादी माँ की जगह होते और तुम्हारी छत/छप्पर टपक रही होती तो तुम क्या–क्या करते और क्यों? ★ बाघ घबराकर क्यों भागा होगा? • इस विस्तृत चर्चा पर 5–10 मिनट ही दिए जाने चाहिए। • पाठ के अंत में दिए गए प्रश्न–उत्तर पर मौखिक रूप से चर्चा करें और बच्चों को मौखिक रूप से उत्तर देने के अभ्यास करवाएँ। फिर, उन शब्दों की वर्तनी लिख दें, जो बच्चों को ख़ुद से उत्तर लिखने में मदद करे और उन्हें उत्तर स्वतंत्र रूप से लिखने को कहें। कठिन प्रश्नों के उत्तर के लिए उदाहरण देना ज़रूरी है। • जिन बच्चों को पाठों के प्रश्न–उत्तर को वाक्यों में लिखने में कठिनाई हो रही है, उन्हें केवल कुछ शब्दों में भी अपना जवाब लिखने को कहा जा सकता है। अगर कक्षा में कुछ ऐसे बच्चे भी हैं जो स्वतंत्र रूप से उत्तर लिखने में बहुत संघर्ष कर रहे हों तो उन्हें उनके स्तर के प्रश्न दिए जाने चाहिए एवं व्यक्तिगत रूप से उनकी मदद करनी चाहिए।
चौथा दिन	• कहानी से संबंधित और विस्तृत चर्चा की जाएगी। इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए गए हैं: ★ कहानी का अंत बदलकर फिर से सुनाना ★ कहानी में एक नया पात्र जोड़ते हुए कहानी को आगे बढ़ाना ★ दी हुई कहानी के अंत से नई कहानी की शुरुआत करना ★ दी गई कहानी में एक नई घटना जोड़ना

	★ पहले सुनी हुई एक और कहानी को मिलाकर (घटना एवं पात्र) एक नई कहानी बनाना • ध्यान रहे कि प्रत्येक सप्ताह इन विस्तृत कहानियों के कार्य में परिवर्तन हो। एक दिन में एक ही विषय को लेकर विस्तृत चर्चा करें। • तीसरे दिन के बचे हुए कार्य को चौथे दिन भी ठीक उसी तरह कराएं।

चित्र पर चर्चा

कक्षा में चित्र पर चर्चा करने के चरणों पर हमने इसके पहले बात की है परन्तु यह क्यों जरूरी है और इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों के संज्ञानात्मक कौशल में विकास एवं विस्तार कैसे होता है चलिए इस पर हम थोड़ी बातचीत करते हैं। चित्र पर बातचीत करने के विविध स्तर हो सकते हैं, जो क्रमशः सरल यानि जो दिख रहा है उनके नाम बताने से लेकर, कार्य–कारण संबंध बताने वाले, तर्क करने वाले और ख़ुद के अनुभवों से जोड़ने वाले हो सकते हैं। बातचीत के लिए बच्चों को अपनी भाषा के उपयोग के मौके मिलने चाहिए। स्थानीय भाषा और संदर्भ का इस्तेमाल ऐसी बातचीत के लिए महत्वपूर्ण है। शिक्षक की ओर से ऐसे प्रश्न रखें जाएँ कि बच्चों को चित्रों में अलग–अलग चीज़ों को खोजने, उस पर अपने अनुभव को बता पाने, तर्क कर पाने, घटनाओं पर अनुमान लगा पाने, एक घटना से दूसरी घटना के बीच संबंध बना पाने, आदि के मौके मिल सकें।

चर्चा की शुरुआतः चर्चा की शुरुआत कुछ सामान्य बिंदुओं से करें। इसके लिए इस तरह के प्रश्न किए जा सकते हैं– ***चित्र में क्या–क्या दिख रहा है? यह चित्र कहाँ का हो सकता है? कौन क्या कर रहा है? इत्यादि।*** ऐसे सामान्य प्रश्नों के द्वारा कोशिश करें कि सभी बच्चे इस प्रक्रिया में जुड़ जाएँ और चर्चा शुरू हो जाए।

चित्रों को अनुभवों से जोड़नाः अब शिक्षक ऐसे प्रश्न कर सकते हैं जिससे बच्चे अपने परिवार और आस–पास होने वाली घटनाओं से अपने आप को जोड़ सकें। जैसेः **आपने इसे कब देखा है?, *क्या आपने किसी को ऐसे करते देखा है, आपके घर में यह कौन करता है? इत्यादि।***

विभिन्न अर्थ निर्माण से संबंधित प्रश्नः इसके अंतर्गत ऐसे प्रश्न पूछे जा सकते हैं जिसमें बच्चों को तर्क करने, कल्पना करने, अनुमान लगाने, इत्यादि के मौके मिले। जैसेः ***बिल्ली पेड़ के पीछे क्यों छिपी है? गिलहरी क्या सोच रही होगी? अगर यहाँ एक चूहा और एक कुत्ता भी होता, तो कौन क्या कर रहा होता? इत्यादि।***

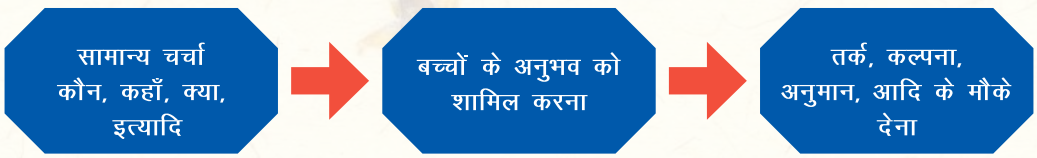

यह गतिविधि सबसे ज़्यादा इस बात पर निर्भर करती है कि शिक्षक कैसे सभी बच्चों को चर्चा के लिए सहज और उत्सुक बनाते हैं। इसमें शिक्षक द्वारा स्थानीय भाषा का उपयोग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चित्र पर चर्चा करने के सामान्य चरण सहायक सामग्री से संबंधित गतिविधियों में दिए गए हैं। यहाँ हम चित्र पर बातचीत के लिए प्रस्तावित दो दिन की कार्ययोजना को समझेंगेः

कलरव–2 की चित्र पर चर्चा से संबंधित पाठों पर कार्य करने के चरणः

पहला दिन	चित्रों पर शुरुआती बातचीत, बच्चों के अनुभवों को शामिल करना	• पहले सीधे और सरल प्रश्न • अनुभवों को शामिल करने के लिए विभिन्न प्रश्न
दूसरा दिन	चित्रों पर छोटे समूहों में चर्चा	• पहले दिन के कलरव के चित्र से संबंधित पाठ पर शिक्षक द्वारा बच्चों के साथ छोटी–सी चर्चा; तर्क, कल्पना, अनुमान लगाने से संबंधित विभिन्न प्रश्न) • शिक्षक द्वारा पूरी कक्षा को छोटे समूहों में बाँटना और उन्हें चित्र पर बातचीत करने को कहना • शिक्षक द्वारा समूहों में जाकर अवलोकन करना एवं हो रही चर्चाओं को आगे बढ़ाने में मदद करना

कॉमिक स्ट्रिप

कलरव–2 में पाठ 19 के बाद एक कॉमिक स्ट्रिप के रूप में एक पाठ दिया गया है– 'दयालु सिद्धार्थ'। इससे पहले कि हम इस पर कैसे कार्य करेंगे? यह समझें, आइए पहले यह देखते हैं कि कॉमिक्स या कॉमिक स्ट्रिप होता क्या है। शायद, हम सभी लोगों ने जीवन के किसी न किसी पड़ाव पर कॉमिक्स पढ़ा होगा और आनंद भी उठाया होगा। लेकिन, पाठ्यपुस्तक में इसे देने का क्या औचित्य है?

कॉमिक्स एक ऐसा माध्यम है जिससे हम अपने विचार, किसी कहानी या आख्यान को चित्रों के माध्यम से व्यक्त करते हैं। यह आमतौर पर छवियों के पैनल के अनुक्रम का रूप लेता है। वाक् गुब्बारे (speech bubble), कैप्शन, अर्थानुरणन (onomatopoeia) जैसे पाठ्य सूचक द्वारा हो रहे संवाद, कथन, ध्वनि प्रभाव, या अन्य जानकारी दी जाती है। इसमें बहुत कम शब्दों के प्रयोग से अपनी बातों को रखा जाता है। पाठकों को इसे समझने के लिए प्रयोग की जा रही ग्राफ़िक या चित्रण एवं लिखी हुई जानकारी को देखकर अर्थ निर्माण करना होता है। इसे समझना एक उच्चस्तरीय कौशल है।

कलरव–2 में दी गई कॉमिक स्ट्रिप से संबंधित पाठ पर कार्य करने के चरणः

पहला दिन	• बच्चों को ध्यान से कॉमिक स्ट्रिप देखने को कहें और दिए गए चित्रों को देखकर बच्चों को, क्या कहानी होगी? इसका अनुमान लगाने को कहें। • फिर मौखिक रूप से कॉमिक स्ट्रिप की कहानी को सुनाएँ। • आख़िर में वाक् गुब्बारे (speech bubble), चित्र एवं लिखे हुए वाक्य कैसे एक कहानी का निर्माण करते हैं, इसकी तकनीक पर संक्षेप में बात करें।
दूसरा दिन	• सबसे पहले बच्चों को कॉमिक स्ट्रिप दिखाते हुए, इसे कहानी की तरह पढ़ें एवं पिछले दिन बताई गई तकनीकी बातों को बच्चों से पूछें। • फिर इसके अभ्यासों पर कार्य करें।

नोटः तृतीय कालांश में कार्य पुस्तिका–2 को उपयोग में लाया जाना है। कार्य पुस्तिका–2, कलरव–2 से संबंधित है। अतः कार्य पुस्तिका–2 के अभ्यास कार्य पर कलरव–2 के गतिविधियों की कार्य–योजना (ऊपर दी गई) के अनुसार कार्य करें।

22. भाषा शिक्षण से संबंधित कुछ प्रमुख बातें

टाइम–ऑन–टास्क: जितने समय बच्चे शैक्षणिक गतिविधि में व्यस्त रहते हैं, हम कहते हैं कि वे 'टाइम–ऑन–टास्क' लगा रहे हैं। अतः जो गतिविधि कक्षा में कराई जा रही हो, उसमें यदि बच्चे जुड़े हों या व्यस्त हों – वे काम कर रहे हों, चाहे वह कैसा भी काम हो (सामूहिक दोहरान, लेख को उतारना ही क्यों न हो), वह टाइम–ऑन–टास्क कहलाता है। यह सबसे प्रभावी तब होता है जब कक्षा में कराई जाने वाली सभी गतिविधियों से बच्चे सक्रिय रूप से जुड़े हों। टाइम–ऑन–टास्क बच्चों से ज़्यादा शिक्षण की गतिविधि और तरीके पर निर्भर करता है।

स्कैफ़ोल्डिंग (Scaffolding) : स्कैफ़ोल्डिंग उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें किसी नई अवधारणा अथवा कौशल को सीखने में बच्चों को मदद दी जाती है। यह वह सहारा या मदद है जो शिक्षक द्वारा बच्चों को लगातार देनी होती है, जब वे कोई नया ज्ञान या कौशल सीख रहे हों। इसमें यह भी बहुत ज़रूरी है कि बच्चों का जो स्तर इस समय है, उससे कुछ ऊपर के स्तर की चुनौती बच्चों को दी जाए। यह मदद अध्यापक, किसी वयस्क अथवा अधिक सक्षम सहपाठी द्वारा बच्चों को उपलब्ध कराया जाने वाला एक अस्थायी मार्गदर्शन या सहयोग होता है। इस मार्गदर्शन अथवा सहयोग के बिना स्वतंत्र रूप से बच्चे उस काम को करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। यह मार्गदर्शन बच्चों की उन क्षमताओं को बढ़ाने के उद्देश्य से दिया जाता है, ताकि आगे जाकर बच्चा उस काम को स्वयं ही स्वतंत्र रूप से करने लगे।

सीखने की जिम्मेदारी क्रमशः सौंपना / जी.आर.आर. (Gradual Release of Responsibility): कक्षा में बच्चों को स्कैफ़ोल्डिंग देने का एक प्रभावी तरीका सीखने की ज़िम्मेदारी क्रमशः सौंपना अथवा जी.आर.आर. है। इसमें शिक्षक सीखने की ज़िम्मेदारी धीरे–धीरे बच्चों को सौंपता है। इस रणनीति के तहत चार मुख्य चरण होते हैं, जिसमें कक्षा में किए जाने वाले कामों को धीरे–धीरे तथा जान–बूझकर अध्यापक से हटाकर अध्यापक और बच्चों के बीच संयुक्त ज़िम्मेदारी की ओर फिर संयुक्त ज़िम्मेदारी से बच्चे द्वारा स्वतंत्र अभ्यास और उपयोग की ओर ले जाना होता है। ***यह रणनीति, इस अपेक्षा से कि "सारी ज़िम्मेदारी अध्यापक की है" से आगे बढ़कर "बच्चे सारी ज़िम्मेदारी ले रहे हैं" की स्थिति तक पहुँचती है।*** कक्षा में करवाई जाने वाली विभिन्न गतिविधियों में जिम्मेदारियों का हस्तांतरण क्रमशः किया जाना चाहिए जिसे नीचे दी गई आकृति से समझा जा सकता है:

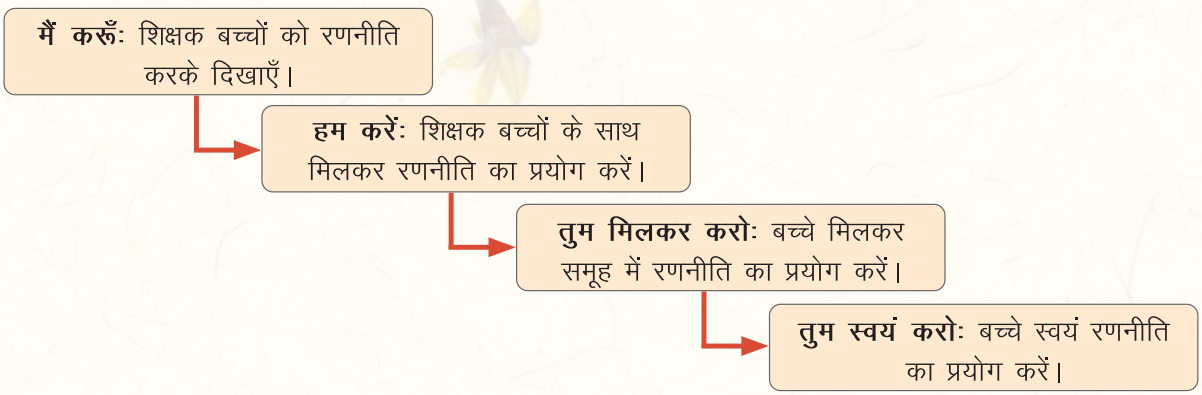

23. आकलन एवं पुनरावृत्ति

'आकलन' शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है। इससे शिक्षकों को अपने छात्रों की प्रगति पर नज़र रखने और अपनी शिक्षण प्रक्रिया को बच्चों के वर्तमान स्तर के अनुरूप समायोजित करने में मदद मिलती है। आकलन का मुख्य उद्देश्य यह पता लगाना है कि बच्चों को सीखने में क्या कठिनाइयाँ हो रही हैं जिसके आधार पर उनकी जरूरतों के अनुसार शिक्षण पद्धति के प्रभावी तरीकों को उपयोग में लाते हुए शिक्षण रणनीति बनाई जाती है। इसलिए इसे *'सीखने के लिए आकलन'* भी कहा जाता है। इसके पीछे यह सिद्धांत है कि आकलन और शिक्षण को समग्र रूप से एकीकृत किया जाना चाहिए।

'सीखने के लिए आकलन' के लिए नियमित रूप से आकलन (सतत आकलन) किया जाना आवश्यक है। इसके लिए एक आवश्यक शर्त यह है कि सभी बच्चों को सीखने के लिए न्यूनतम समय एवं अभ्यास के मौके ज़रूर मिलें।

इस सिद्धांत के अनुसार, आकलन के द्वारा बच्चों की उपलब्धियों का पता लगाया जाता है एवं उनका विश्लेषण करके शिक्षक यह तय करते हैं कि उनकी कक्षा के कितने बच्चे लक्षित स्तर पर है और कितने नहीं। इसके पश्चात् आगे की रणनीति तय की जाती है। सबसे पहले शिक्षक यह तय करते हैं कि किन–किन बच्चों को सीखने में कहाँ दिक्कत आ रही है। इसके बाद शिक्षक इन बच्चों को अलग से समय देकर इनके साथ काम करते हैं। बहुत बार शिक्षक को इन बच्चों के साथ काम करने के लिए अपने शिक्षण पद्धति में बदलाव करना पड़ता है एवं नई–नई गतिविधियों को काम में लेना पड़ता है। अधिकतर देखा गया है कि शिक्षण पद्धति में थोड़े बदलाव के साथ कक्षा के सारे बच्चों तक पहुँचा जा सकता है और 'सभी का सीखना' सुनिश्चित किया जा सकता है।

आकलन के सिद्धांत पर हमने थोड़ी चर्चा कर ली है। आइए, अब यह समझने का प्रयास करते हैं कि शैक्षिक सत्र 2020–2021 में हमारी कक्षाओं में किस तरह के आकलन होने चाहिए एवं ये कब और कैसे किए जाएँ।

बच्चों द्वारा अर्जित दक्षताओं के आकलन की रूपरेखा

इस अकादमिक सत्र में दो तरह के आकलन होंगे:

साप्ताहिक आकलन **सावधिक आकलन**

साप्ताहिक आकलनः प्रत्येक सप्ताह के पाँचवे दिन अनौपचारिक रूप से आकलन किया जाना प्रस्तावित है। साप्ताहिक पुनरावृत्ति (सप्ताह के छठे दिन) का कार्य इसी आकलन पर आधारित होगा। यह कार्य (साप्ताहिक आकलन एवं पुनरावृत्ति) तृतीय (कार्यपुस्तिका–2) कालांश के दौरान किया जाना प्रस्तावित है।

इस आकलन का मुख्य उद्देश्य अभी तक बच्चों द्वारा सीखी गई विषयवस्तु को जानना और उन बच्चों की पहचान करना है जो उस विषयवस्तु के लिए निर्धारित कौशल हासिल नहीं कर पाए हों।

इसके लिए सप्ताह भर सिखाई गईं दक्षताओं की सूची बना लें और उनको आधार बनाकर आकलन करें। इसके लिए निम्नलिखित दक्षताओं को रखा जा सकता है:

विभिन्न घटकों पर सप्ताहवार आकलन

विषयवस्तु/प्रश्न	सप्ताह														
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
चित्रों के नाम पहचानना			✓	✓											
किसी चित्र के बारे में 1–2 वाक्यों में अपनी बात रख पाना					✓	✓	✓	✓	✓	✓					
कहानी सुनकर 5 तथ्यात्मक प्रश्नों के उत्तर दे पाना							✓	✓	✓	✓					
वर्ण/मात्राओं की पहचान			✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓	✓					
प्रवाहपूर्ण पठन– 1 मिनट में 40–50 शब्दों के सरल स्तर के पाठों को पढ़ पाना												✓	✓	✓	✓
समझ के साथ पढ़ना: 40–50 शब्दों के सरल स्तर के पाठों को पढ़कर 5 प्रश्नों के उत्तर दे पाना (4 तथ्यात्मक, 1 खुले छोर)												✓	✓	✓	✓
चित्र/अनुभव/घटना के बारे में 2–4 शब्द लिखना			✓	✓	✓	✓	✓								
चित्र/अनुभव/घटना के बारे में 1 सरल वाक्य (3–5 शब्द) में लिखाना								✓	✓	✓					
चित्र/अनुभव/घटना के बारे में 1–2 सरल वाक्यों में लिखाना												✓	✓	✓	✓

शिक्षक इस आकलन के आधार पर अगले दिन (छठे दिन) आवश्यक दक्षताओं पर दुबारा कार्य करें। आकलन के विश्लेषण के आधार पर शिक्षकों को बच्चों के सीखने के कई स्तर मिलेंगे। आप इन्हें दो मुख्य समूहों में रख सकते हैं:

- पहला समूह, जिसमें ऐसे बच्चे होंगे जो निर्धारित दक्षताओं को प्राप्त कर चुके होंगे।
- दूसरा समूह, जिसमें वो बच्चे होंगे जिन्होंने अपेक्षित दक्षताएँ प्राप्त नहीं की होंगी और कुछ विषयवस्तु उन्हें दुबारा बताने की ज़रूरत है।

सावधिक आकलनः इस अकादमिक सत्र में कक्षा स्तर पर 2 बार सावधिक आकलन किया जाएगा, पहला, सप्ताह 11 में और दूसरा सप्ताह 16 में। इसे एक आंतरिक आकलन के रूप में देखा जाना चाहिए। इसका उद्देश्य शिक्षकों द्वारा आकलन किया जाना एवं उसके आधार पर बच्चों को कक्षा के स्तर पर एवं पीछे छूटे हुए बच्चों को मदद देना है।

भाषा शिक्षण के घटक	आकलन–1 (सप्ताह–11)	आकलन–2 (सप्ताह–16)
मौखिक भाषा विकास	• सुनी हुई कहानी से संबंधित तथ्यात्मक प्रश्नों का 1 वाक्य में जवाब दे पाना • चित्र पर चर्चा के दौरान अपनी बात 1–2 वाक्य में रख पाना	• सुनी हुई कहानी से संबंधित 3 खुले छोर के प्रश्नों के उत्तर 1 वाक्य में दे पाना • अपने अनुभव को 1–2 वाक्यों में बता पाना
डिकोडिंग	• सभी सिखाए गए वर्णों को पहचान पाना • वर्ण एवं मात्रा को जोड़कर सरल शब्दों को पढ़ पाना (2–3 अक्षर वाले)	• ग्रेड 2 के पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी वर्णों और अक्षरों तथा संयुक्ताक्षरों को पहचान लेना • सिखाएँ गए वर्णों और अक्षरों (3 या उससे अधिक वर्ण या अक्षर) से बने परिचित शब्दों को उचित गति और शुद्धता के साथ पढ़ पाना
प्रवाहपूर्ण पठन/ सरल पाठ पढ़ पाना	• प्रवाहपूर्ण पठन प्रवाह के साथ 1 मिनट में 30–40 शब्द पढ़ पाना	• प्रवाहपूर्ण पठन प्रवाह के साथ 1 मिनट में 50–60 शब्द पढ़ पाना
समझ के साथ पढ़ना	• पढ़े हुए पाठ से संबंधित 3 तथ्यात्मक प्रश्नों के उत्तर दे पाना	• पढ़े हुए पाठ से संबंधित 5 मिश्रित प्रश्नों (4 तथ्यात्मक एवं 1 खुले छोर) के उत्तर दे पाना
लेखन	• किसी कहानी या चित्र पर आधारित चित्र बनाकर अभिव्यक्ति करना एवं 1 वाक्य लिखना	• किसी कहानी, चित्र, कलरव एवं सहज–1 के पाठों पर आधारित 1–2 वाक्य लिख पाना

पुनरावृत्ति पर कार्य

इस अकादमिक सत्र में दो तरह की पुनरावृत्ति होंगीः

साप्ताहिक पुनरावृत्ति **सावधिक पुनरावृत्ति**

साप्ताहिक पुनरावृत्ति पर नियमित रूप से कार्य किया जाना चाहिए। इस पर छोटी सी बातचीत पहले भी हुई है। प्रत्येक सप्ताह में भाषा कालांश–3 (कार्यपुस्तिका–2 पर कार्य) के छठे दिन शिक्षकों को व्यवस्थित रूप से पुनरावृत्ति पर कार्य करना आवश्यक है।

- पुनरावृत्ति से संबंधित कार्य करने से पूर्व शिक्षकों को यह तय कर लेना आवश्यक है कि वे किन बच्चों के साथ कार्य करेंगे।

- अलग–अलग कारणों से कुछ बच्चे अपने सहपाठियों की अपेक्षा पढ़ने–लिखने में पीछे छूट जाते हैं। इस पुनरावृत्ति कालांश का उद्देश्य यह है कि इन बच्चों के साथ एक व्यवस्थित योजना के आधार पर कार्य किया जाना चाहिए जिससे कि इन्हें पढ़ने–लिखने में आ रही समस्याओं को दूर किया जा सके।
- जब शिक्षक पीछे छूटे हुए बच्चों के साथ कार्य कर रहे हों तब बाकी बच्चों को स्वतंत्र पठन, लेखन, कार्यपुस्तिका–2 में कार्य जैसी गतिविधियाँ देनी चाहिए ताकि किसी भी बच्चे का समय नष्ट न हो एवं शिक्षक को भी बच्चों के साथ छोटे समूह में कार्य करने में कोई परेशानी न हो।
- पुनरावृत्ति के अंतर्गत सहज–2 के पठन अभ्यास पर भी कार्य कराया जाना चाहिए। जो बच्चे प्रवाहपूर्ण डिकोडिंग के समय 1 मिनट में कम शब्द पढ़ पा रहे हैं एवं जिन्हें पढ़ने में दूसरों के मुक़ाबले ज़्यादा कठिनाई हो रही है, उनके साथ अलग से कार्य करना प्रस्तावित है।
- मौखिक भाषा विकास से संबंधित पुनरावृत्ति का कार्य किसी एक निर्धारित कालांश में करना संभव नहीं है और न ही लाभदायक। इस पर प्रत्येक दिन कार्य किया जाना चाहिए। जो बच्चे कम बोलते हों, उन्हें बोलने के अवसर दिया जाना चाहिए एवं इन्हें अपनी बातों को सबके सामने रखने के लिए प्रोत्साहित भी किया जाना चाहिए। सभी बच्चों पर शिक्षक की नज़र होनी चाहिए ताकि बच्चों में हो रहे मौखिक भाषा विकास को दैनिक रूप से नोट किया जा सके।

सावधिक पुनरावृत्ति

सप्ताहवार वार्षिक शिक्षण योजना के अनुसार सप्ताह–12 एवं 16 में अतिरिक्त पुनरावृत्ति अभ्यास से संबंधित कार्य पूरे सप्ताह चलेगा। यह पुनरावृत्ति कक्षा स्तर के सावधिक आकलन के आधार पर कराई जानी होगी।

- साप्ताहिक पुनरावृत्ति की तरह ही शिक्षकों को उन बच्चों के साथ व्यक्तिगत रूप एवं छोटे समूहों में कार्य करना चाहिए जो पीछे छूट रहे हों। जो बच्चे निर्धारित स्तर पर होंगे उन्हें 'कलरव–2 एवं सहज–2', पर पठन के कार्य दिए जा सकते हैं।
- इस सप्ताह में कॉपी एवं कार्यपुस्तिका–2 में कार्य दिए जा सकते हैं।

आकलन के बाद पुनरावृत्ति (साप्ताहिक एवं सावधिक) की प्रक्रिया

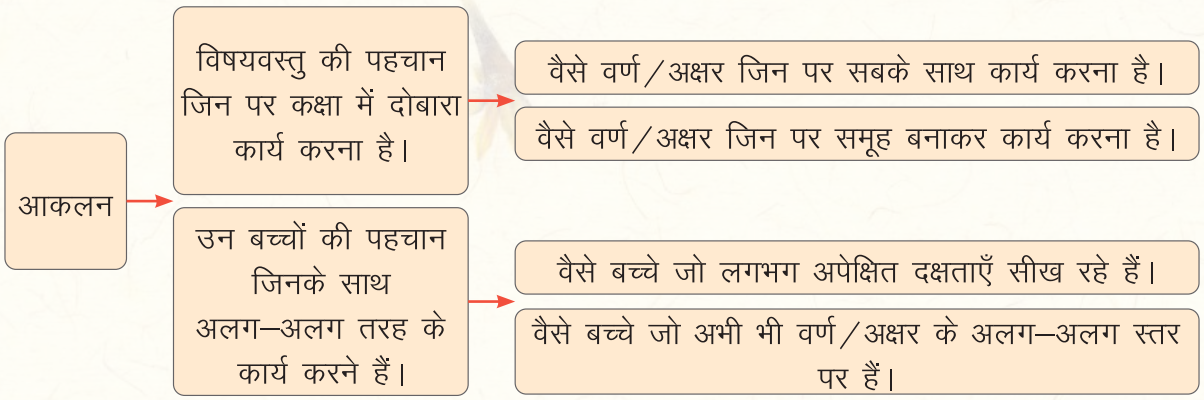

भाग 3

कक्षा–कक्ष से संबंधित महत्वपूर्ण पहलू

24. कक्षा प्रबंधन

कक्षा प्रबंधन एक विशेष प्रकार की रणनीति एवं तकनीक है जो सभी बच्चों को सक्रिय रूप से कक्षा में हो रही गतिविधियों से जोड़े रखती है। जब कक्षा–प्रबंधन की रणनीतियों को प्रभावी ढंग से निष्पादित किया जाता है, तो शिक्षक उन व्यवहारों को कम करने में सक्षम हो जाते हैं जो सीखने या सीखने की प्रक्रिया को बाधित करते हैं। इसके साथ–साथ प्रभावी कक्षा–प्रबंधन की रणनीतियाँ बच्चों के ऐसे व्यवहारों को बढ़ा देते हैं जो सीखने में मदद करते है।

कक्षा प्रबंधन की एक सीमित या पारंपरिक परिभाषा "अनुपालन" की ओर इंगित करती है जैसे छात्र अपनी सीट पर बैठे हों, दिशा–निर्देश सुन रहे हों, आदि। परंतु प्रभावी कक्षा प्रबंधन की सीमा इससे कहीं ज़्यादा होती है। प्रभावी कक्षा प्रबंधन वह सभी चीज़ें है जो सीखने में मदद करें, जैसे, शिक्षक का व्यवहार (बच्चों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण और उनकी प्रतिक्रियाओं को कक्षा में स्थान देना), वास्तविक अपेक्षाएँ (बच्चों से अपेक्षित कार्य की जानकारी बच्चों के साथ साझा करना, आदर्श प्रस्तुतीकरण एवं मार्गदर्शन), शिक्षण सामग्री (सार्थक एवं विभिन्न शिक्षण सामग्री का उपयोग), गतिविधियाँ (सार्थक, विविध, स्तरानुसार, जोड़ों एवं समूह में कार्य) आदि।

प्रभावी कक्षा–कक्ष प्रबंधन से संबंधित कुछ सुझाव नीचे दिए गए हैं:

समय प्रबंधन

- बेहतर शिक्षण के लिए शिक्षक अलग–अलग शिक्षण विधि और गतिविधि काम में लेते हैं। गतिविधि में बच्चों के 'इन्तजार का समय' (wait time) व 'काम का समय' (time on task) कितना मिला है, यह एक महत्वपूर्ण मापदंड है, जिससे किसी भी गतिविधि की प्रारंभिक प्रभावकारिता का पता चलता है। 'इन्तजार का समय' (wait time) का अर्थ बच्चों को सोचने के लिए दिए जाने वाले समय से है। टाइम–ऑन–टास्क पर हमने पहले बात की है।
- बहुकक्षीय शिक्षण की स्थिति में समय का संतुलित उपयोग शिक्षक के लिए एक चुनौती है। शिक्षक को दूसरी कक्षा के लिए ऐसा कार्य देना चाहिए जिसे बच्चे स्वतंत्र रूप से या आपसी सहयोग से कर सकें। उन्हें शिक्षक के सहयोग की अधिक मदद की जरूरत नहीं पड़े।

बैठक व्यवस्था

- बैठक व्यवस्था कक्षा में हो रही गतिविधि के अनुरूप होनी चाहिए। सामूहिक कार्यों जैसे–कहानी सुनाने के समय बच्चे शिक्षक के नज़दीक गोल घेरे में या अर्द्ध वृत्ताकार रूप में बैठ सकते हैं। जबकि अन्य गतिविधियों के दौरान बच्चे कक्षा में फैलकर जोड़ों में, छोटे–छोटे समूहों में बैठ सकते हैं।
- बैठक व्यवस्था ऐसी हो जिसमें सामाजिक रूप से विविधिता वाले बच्चों को घुल–मिलकर बैठने के अवसर मिलें। लड़कियों को भी समान अवसर मिलें। जो बच्चे शर्मीले हैं या जो कक्षा में पीछे की तरफ बैठने की कोशिश करते हैं, शिक्षक उन्हें आगे बैठने के लिए प्रोत्साहित करें।
- हमारा प्रयास यह हो कि पहली कक्षा के बच्चे अलग ही बैठें ताकि शिक्षक अपनी भाषा शिक्षण–योजना को ठीक से लागू कर सकें। बहुकक्षीय शिक्षण की स्थिति में शिक्षक इस प्रकार से बैठक व्यवस्था करें कि दोनों कक्षाओं के बच्चे आराम से उचित दूरी बनाकर बैठ सकें। ऐसी बैठक व्यवस्था में शिक्षक को कक्षा–संचालन और समन्वयन में मदद मिलेगी।

भयमुक्त एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण

- भाषा के लिए नियुक्त और प्रशिक्षित शिक्षक ही भाषा का शिक्षण कार्य करें।
- यह आवश्यक है कि शिक्षक कक्षा में ऐसा भयमुक्त माहौल बनाएँ जहाँ बच्चे खुलकर सीखने की प्रक्रिया में शामिल हो सकें। बच्चे बिना झिझक और डर के शिक्षक से संवाद कर सकें। कक्षा व्यवस्था संबंधी नियमों को शिक्षक और बच्चे मिलकर तय करें।
- शिक्षण कार्य के दौरान शिक्षक को बच्चों के साथ बराबरी का व्यवहार करने की कोशिश करनी चाहिए। अगर बच्चे दरी पर बैठे हैं तो शिक्षक भी उनके साथ दरी पर ही बैठें। ऐसा होने पर बच्चों को भावनात्मक रूप से शिक्षक से जुड़ने को मौका मिलता है और यह उनके सीखने में बहुत सहयोग करता है। शिक्षक बच्चों की उपलब्धियों की प्रशंसा करें एवं उन्हें बेहतर करने के लिए प्रोत्साहित करें।
- सभी बच्चों को शिक्षण कार्य के दौरान तय रणनीति के तौर पर जोड़ों में, समूहों में और व्यक्तिगत तौर पर काम करने के पर्याप्त मौके मिलने चाहिए।
- कक्षा–कक्ष लिखी और छपी हुई सामग्री से सुसज्जित होना चाहिए एवं इसको शिक्षण प्रक्रिया में उपयोग में लिया जाना चाहिए। सामग्री समय–समय पर बदलती रहनी चाहिए।
- बच्चों को अपनी घर की भाषा में संवाद के पर्याप्त मौके मिलने चाहिए।

सहयोगात्मक अधिगम (समूह कार्य)

- बच्चों को समूहों में बाँटने के दौरान इस बात का विशेष ख़याल रखना चाहिए की प्रत्येक समूह में विभिन्न अधिगम स्तर के बच्चे हों। ऐसा होने पर बच्चों को एक–दूसरे से सीखने में मदद मिलती है। इसके साथ–ही शिक्षक को भी कार्य संचालन में आसानी होती है।
- शिक्षक सभी तथाकथित 'कमज़ोर बच्चों' को एक समूह में रखकर एवं दूसरे समूह में 'तेज़ बच्चों' में बाँटकर कार्य कभी भी न सौंपे। ऐसा करने से अलग–अलग स्तरों के बच्चों के बीच में अलगाव की भावना उत्पन्न हो सकती है।
- कक्षा में इन समूहों की संख्या 5–6 तक की ही होनी चाहिए एवं हर समूह में 5–7 बच्चे हो सकते हैं। समूहों की संख्या ज़्यादा होने से शिक्षकों को बच्चों के कार्य का अवलोकन करने में और ज़रूरी मदद देने के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता। इसके साथ ही सभी बच्चों को गतिविधि में समान रूप से योगदान देने के पर्याप्त मौके नहीं मिल पाते हैं।

25. कक्षा में प्रिंट रिच (प्रिंट समृद्ध) वातावरण

बच्चों के लिए कक्षा को प्रिंट रिच बनाना बहुत महत्वपूर्ण है। कई सामग्रियाँ प्रिंट रिच के लिए इस्तेमाल की जाती हैं: किताबें (बच्चों के स्तर की), पोस्टर, चार्ट्स, शिक्षक के द्वारा तैयार सामग्री, बच्चों के द्वारा बने चित्र, लेखन के नमूने, इत्यादि। शिक्षकों को कक्षा को प्रिंट रिच बनाने के लिए निम्नलिखित घटकों का ध्यान रखना चाहिए:

प्रिंट समृद्ध वातावरण के मुख्य घटक

क्रम	प्रिंट रिच के घटक	प्रिंट रिच सामग्रियों का कक्षा में उपयोग	व्यवस्था और सामग्री
1	रीडिंग कॉर्नर		बच्चों के स्तर की किताबों को कक्षा के किसी कोने में सजाकर इस तरह रखें कि बच्चे उसे लेकर देख सकें। इसके लिए विद्यालय में उपलब्ध किताबों का उपयोग करें। दीवार में रस्सी टाँगकर भी कुछ किताबों को रखा जा सकता है।
2	चित्र चार्ट		इनको कक्षा में इस तरह दीवारों और खिड़कियों के सहारे रखें कि यह सबको दिख जाए। इन्हें दीवारों से न चिपकाएँ क्योंकि चित्र पर चर्चा के लिए इन्हें बच्चों के बीच में रखना पड़ता है।
3	कविता पोस्टर / कहानी पोस्टर		मिशन प्रेरणा कार्यक्रम के तहत आपके विद्यालय में कविता और कहानियों के पोस्टर दिए जा रहे हैं। इन्हें दीवारों पर लगाएँ। ज़मीन से इनकी ऊँचाई ऐसी हो कि बच्चे आराम से पोस्टर देख पाएँ।

4	शब्द दीवार		दीवारों पर कई तरह के शब्द चार्ट लगाए जा सकते हैं: • बच्चों के नाम और उनके पसंद की चीज़ें • बच्चों के जन्मदिन का चार्ट • पढ़ाई गई कहानियों के नाम • कहानी और कविता • स्थानीय कविता और कहानी • बोलचाल के स्थानीय शब्द • कहानी/बातचीत/साझा पठन में आए शब्द • कोई चित्र और उसका वर्णन ऐसे चार्ट (नए शब्द, कहानियाँ, कविताएँ और चित्र) एक निश्चित समयांतराल (15 दिन/महीने में एक बार) पर बदलने चाहिए।
5	लेबलिंग (वस्तुओं के नाम)		कक्षा में मौजूद वस्तुओं के नाम काग़ज पर लिखकर प्रत्येक वस्तु के पास चिपकाए जा सकते हैं। जैसे– दरवाज़ा, खिड़की, अलमारी, टेबल, इत्यादि
6	बच्चों के चित्र और अन्य कार्य		बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों को दीवार पर प्रदर्शित करने के लिए एक निश्चित जगह चुनें। उस पर उनके चित्रों को नाम सहित चिपकाएँ। आगे चलकर बच्चे कुछ शब्द लिखते हैं तो उन्हें भी चिपकाया जा सकता है। बच्चों के इन कार्यों को समय–समय पर बदलते रहें।

भाग 4

मौखिक भाषा विकास से संबंधित गतिविधियों का संकलन

26. मौखिक भाषा विकास से संबंधित गतिविधियों का संकलन

कविताएँ

ये बालगीत और कविताएँ अलग–अलग स्रोतों से ली गई हैं। हम उन सभी लेखकों/प्रकाशकों का आभार व्यक्त करते हैं जिनकी कविताएँ इस संग्रह में शामिल की गई हैं।

मुर्गी माँ

मुर्गी माँ घर से निकली,
झोला ले बाज़ार चली।
बच्चे बोले चें चें चें,
अम्मा हम भी साथ चलें।

– निरंकार देव सेवक

नन्हा खरगोश

छोटा–सा नन्हा खरगोश,
देखो, देखो, उसका जोश।
धूप तापता दौड़ लगाता,
फिर झट झाड़ी में घुस जाता।

तितली रानी

तितली रानी, तितली रानी,
तुम हो चंचल, बड़ी सयानी।
डाल–डाल पे झूमती हो,
फूल–फूल को चूमती हो,
इतनी मस्ती में मत आओ,
इन पंखों पर मत इतराओ।

हाथी

हाथी राजा बहुत भले
सूँड हिलाते कहाँ चले?
कान हिलाते कहाँ चले?
मेरे घर आ जाओ ना,
हलवा पूरी खाओ ना।

साभार : बिल्ली बोले म्याऊँ (एकलव्य)

अद्दक–बद्दक

अद्दक–बद्दक चंपा,
उसमें गला घंटा।
बारह बजे की छुट्टी में
बारह मिट्ठू बैठे थे।
एक मिट्ठू कच्चा,
वही रंग का पक्का।

साभार : बैठ घोड़ा पानी पी (एकलव्य)

कोयल रानी

कोयल रानी, कोयल रानी
कहाँ मिली यह मीठी बानी?
किसी नदी नें दावत में क्या
तुझे पिलाया शक्कर पानी?

– शंकुतला सिरोठिया

दो आलू

एक प्लेट में दो आलू
मोटू बोला मैं खा लूँ
खाते–खाते थक गया
रोटी लेकर भाग गया
रोटी गिर गई रेत में
मोटू रोया खेत में

साभार : एक दो दस (एकलव्य)

जादू की गठरी

जादू की एक गठरी लाऊँ,
बच्चों में बच्चा बन जाऊँ।
एक जेब से शेर निकालूँ
एक जेब से भालू।
दोनों को झटपट खा जाऊँ,
जादू की जो गठरी लाऊँ।

– दामोदर अग्रवाल

शेख चिल्ली

एक था शेख चिल्ली।
उसने पाली बिल्ली।
बिल्ली गई दिल्ली।
दिल्ली में थी किल्ली।
किल्ली ऊपर चढ़ गई बिल्ली।
सबने उड़ाई खिल्ली।

गप्पू जी

आलू की पकौड़ी, दही के बड़े,
मुन्नी की चुन्नी में तारे जड़े।
मूँग की मंगोड़ी, कलमी बड़े,
मंगू की छत पर दो बंदर लड़े।
खस्ता कचौड़ी, कांजी के बड़े
गप्पू जी फिसले तो औंधे पड़े।

चूहा

वह देखो, वह आता चूहा
आँखों को चमकाता चूहा,
मूँछों में मुस्काता चूहा,
लंबी पूँछ हिलाता चूहा,
मक्खन, रोटी खाता चूहा,
बिल्ली से डर जाता चूहा।

मामा मटरू

मामा मटरू जब भी आते,
सोते तो सोते ही जाते।
सोते तो सोते ही जाते।
जब भी उन्हें जगाना होता,
ढम–ढम ढोल बजाना होता।
ढम–ढम ढोल बजाना होता।

गुलगुला

छुट्टी हुई खेल की,
चढ़ी कढ़ाई तेल की।
सुर–सुर उठता बुलबुला,
छुन–छुन सिंकता गुलगुला।
भुलभुला और पुलपुला,
मीठा–मीठा गुलगुला।

पतंग

सर–सर–सर–सर उड़ी पतंग,
फर–फर–फर–फर उड़ी पतंग।
इसको काटा, उसको काटा,
खूब लगाया, सैर सपाटा,
अब लड़ने में जुटी पतंग।
अरे कट गई, लुटी पतंग!!

साभार : बिल्ली बोले म्याऊँ (एकलव्य)

रेलवे स्टेशन

छुक–छुक करती रेल चली।
शोर मचाती रेल चली।
इंजन धुआँ उड़ाता है,
सरपट दौड़ लगाता है।
कितने सारे लोग यहाँ,
इधर–उधर है भीड़ जमा।
कितने डिब्बे इधर खड़े,
कितने इंजन बड़े–बड़े।

चंदा मामा

चंदा मामा आएँगे
दूध बताशे लाएँगे
चिड़िया चावल लाएगी
दादी खीर पकाएगी
हम सब मिलकर खाएँगे
जब चंदा मामा आएँगे

साभार : एक दो दस (एकलव्य)

तारे

आसमान में निकले तारे,
चंदा मामा कितने प्यारे।
सबके मन का बहलाते हैं,
नई चाँदनी दिखलाते हैं।
आओ चंदा मामा आओ,
अपने घर को बात बताओ।
सबके मन को बहलाओ,
नई चाँदनी दिखलाओ।

सोमवार

आज सोमवार है
चूहे को बुखार है
चूहा हुआ उदास
पहुँचा डॉक्टर के पास
डॉक्टर ने लगा दी सुई
चूहा बोला–उई!

साभार : एक दो दस (एकलव्य)

बादल

बादल के जी में क्या आई,
सब की करने चला सफाई।
धो दिए पेड़, धो दी घास,
धो दिया सब कुछ आस और पास।
धुल गई पटरी, धुली दुकान,
सड़कों के तालाब बनाए,
बच्चे बूढ़े सभी नहाए।

एक चपाती

ताती ताती एक चपाती,
दिखी तवे पर पेट फुलाती।
बिल्ली मौसी बोली म्याऊँ,
भूख लगी मैं तुझको खाऊँ।
सुन कर उछली दूर चपाती,
बोली फिर आँखें मटकाती।
मौसी पहले मक्खन ला,
फिर चाहे मुझको खा जा।

– रमेश तैलंग

नानी कहे कहानी

चंदू की नानी
कहे कहानी,
एक था शरबत
एक था पानी
नानी पिए शरबत
चंदू पिए पानी,
रूठ गया चंदू
ख़त्म हुई कहानी।

साभार : बिल्ली बोले म्याऊँ (एकलव्य)

न्यौता

चूहे के घर न्यौता है
देखो क्या–क्या होता है
चिड़िया चावल लाएगी
बिल्ली खीर पकाएगी
बंदर पान बनाएगा
शेर मामा खाएगा
मुन्ना तू क्यों रोता है
तेरा भी तो न्यौता है

साभार : एक दो दस (एकलव्य)

मनीराम

इत्ते से मनीराम
इतनी लंबी मूँछ
सटक चले मनीराम
मटक चली मूँछ
जित्ते बड़े मनीराम
उनसे बड़ी मूँछ
लटक चले मनीराम
चटक चली मूँछ

साभार : एक दो दस (एकलव्य)

टब और भालू

टब में छिपने आया भालू,
किंतु नहीं छिप पाया भालू।
टब छोटा और भालू था मोटा,
राजू बहुत अधिक था खोटा।
उसने जाकर खोल दिया नल,
नल से निकल पड़ा शीतल जल।
जल में खूब नहाया भालू,
किन्तु डूब न पाया भालू।

कहानियाँ

रेडियो और चुहिया

एक भाई साहब रेडियो सुन रहे थे। उनके रेडियो में चुहिया घुस गई। चुहिया ने तार काट दिया इसलिए वह बज नहीं रहा था। भाई साहब दुकान पर सुधरवाने गए। दुकानदार ने रेडियो खोला तो उसमें से चुहिया निकलकर भागी।

भाई साहब कहने लगे, 'भैया बंद कर दे, भैया बंद कर दे।' दुकानदार बोला, 'ठीक तो हुआ ही नहीं है।' भाई साहब कहने लगे, 'अब क्या सुधरेगा। गाने वाली तो भाग गई।'

भालू का बच्चा और बाघ के बच्चे

भालू का बच्चा बगीचे में झूल रहा था। दो बाघ के बच्चे भी बगीचे में आ गए। ''हमें झूलने दो।'' बाघ के बच्चों ने कहा। ''इस पर झूल लो'' भालू के बच्चे ने दूसरे झूले की ओर इशारा करते हुए कहा। ''दिखता नहीं? हम दो हैं'' बाघ के बच्चे ने कहा। ''तुम दो हो तो बारी–बारी से झूलो'' भालू के बच्चे ने झूलते हुए कहा। बाघ के बच्चों ने ज़मीन से रेत उठाकर भालू के बच्चे के ऊपर उड़ेल दी।

भालू का बच्चा झूले से कूदा और पापा भालू को आवाज़ लगाई। बाघ के बच्चों ने देखा– सचमुच बड़ा भालू उधर खड़ा था। वे दोनों एक साथ भागे। गिरते–पड़ते दीवार कूदे। दीवार कूदते ही और ज़ोर से भागे। भालू का बच्चा दोनों झूलों पर बारी–बारी से झूलता रहा। झूलते हुए उसने सोचा– ''कहीं वे अपने मम्मी–पापा को बुला लाए तो? मैंने काफ़ी झूल लिया। दोनों झूलों पर अकेला कब तक झूलूँ।'' सोचते हुए वह भी वहाँ से चला गया।

साभार– प्रभात

बंदर और गिलहरी

एक बंदर पेड़ पर बैठा था। बंदर की पूँछ बहुत लंबी थी। इतनी लंबी थी कि ज़मीन तक लटक रही थी। एक गिलहरी ज़मीन पर उछल–कूद कर रही थी। अचानक उसे पूँछ दिखाई दी। उसने सोचा – 'यह झूला कहाँ से आ गया? थोड़ी देर पहले तो नहीं था।' वह पूँछ पर चढ़कर झूलने लगी। बंदर को गुदगुदी हुई। उसने नीचे देखा। वह हँसकर बोला – ''बहन गिलहरी! यह क्या कर रही हो? मुझे गुदगुदी हो रही है।'' गिलहरी चौंकी – ''बंदर भैया, यह तुम हो? मैं तो तुम्हारी पूँछ को झूला समझकर झूल रही थी। बड़ा मज़ा आ रहा था।'' उसके बाद गिलहरी हँसती हुई पेड़ की डाली पर चढ़ गई।

साभार– रिमझिम (एन.सी.ई.आर.टी)

सियार और ऊँट

सियार और ऊँट की पक्की दोस्ती थी। एक दिन दोनों फल खाने के लिए बगीचे में चुपचाप घुस गए। सियार का पेट जल्दी भर गया। पर ऊँट खाता रहा। तभी सियार ने कहा, ''मेरा हूँक लगाने का समय हो गया है।'' ऊँट ने मना किया पर सियार नहीं माना। हूँक सुनकर बगीचे के रखवाले आ गए। सियार तो भाग गया, पर ऊँट की खूब पिटाई हुई। कुछ दिनों बाद वे दोनों फिर मिले। सियार ऊँट की पीठ पर बैठा। दोनों ने नदी पार करना शुरू किया। बीच नदी में जाकर ऊँट बोला, ''मेरा डुबकी लगाने का मन कर रहा है।'' सियार ने मना किया। पर ऊँट ने नदी में डुबकी लगा दी। सियार नदी में कंडे जैसा बह गया।

साभार : लोक–कथा उत्तर प्रदेश के बृज क्षेत्र में प्रचलित है।

कछुआ और खरगोश

एक बार खरगोश ने कछुए को अपने साथ दौड़ लगाने को कहा। कछुए ने उसकी बात मान ली। दौड़ शुरू हुई। खरगोश तेज़ी से भागा। काफ़ी आगे जाने पर पीछे मुड़ कर देखा, कछुआ कहीं आता नज़र नहीं आया। उसने मन ही मन सोचा, ''कछुए को तो यहाँ तक आने में बहुत समय लगेगा, चलो थोड़ी देर आराम कर लेते हैं''। वह एक पेड़ के नीचे लेट गया। लेटे–लेटे कब उसकी आँख लग गयी, पता ही नहीं चला। उधर कछुआ धीरे–धीरे लगातार चलता रहा। खरगोश गहरी नींद में सो रहा था। इधर कछुआ पहुँच चुका था। अचानक, खरगोश की आँख खुली। खरगोश तेज़ी से भागा, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। कछुआ दौड़ जीत गया।

लालची कुत्ता

एक बार एक कुत्ते को कई दिनों तक कुछ खाने को नहीं मिला। बेचारे को बहुत ज़ोर से भूख लगी थी। तभी किसी ने उसे एक रोटी दी। कुत्ता रोटी लेकर एक पुल पर चला गया। पुल के नीचे पानी बह रहा था। उसने नीचे देखा। उसकी नज़र पानी में पड़ी तो देखा कि एक कुत्ता पूरी रोटी मुँह में दबाए नीचे पानी में खड़ा है। उसे नहीं पता था कि वह उसकी ही परछाई है वह अपनी ही परछाई को दूसरा कुत्ता समझ रहा था।

कुत्ते ने सोचा, मैं यह रोटी भी इससे छीन लूँ तो भरपेट खा लूँगा। और वह रोटी छीनने के लिए पानी में दिखाई देने वाले उस कुत्ते पर भौंका। मुँह खोलते ही उसकी रोटी पानी में जा गिरी और बह गई। फिर तो उसे भूखे पेट ही सोना पड़ा।

भूखा बगुला

एक बगुला था। उसे भूख लगी थी। वह खाना खाने खेत में गया। खेत में उसे मूली मिली। मूली लेकर वह खाने लगा। तभी उसे तालाब दिखा। तालाब में मछलियाँ थी। उसने सोचा– ''मूली और मछली साथ खाए तो मज़ा आ जाए।'' वह मछली पकड़ने गया। तालाब में मगरमच्छ था। मगरमच्छ उसके पीछे दौड़ा। बगुला मूली लेकर भागा। बगुले को घड़ा दिखाई दिया। उसने मूली घड़े में डाली और भाग गया। घड़े में चूहे थे। चूहे मूली खा गए। बगुला लौटा तो देखा, घड़ा खाली था।

वह हँस दिया

हिरण का बच्चा दौड़ रहा था। खरगोश से आगे। हाथी से भी आगे। वह नाला कूद गया। पार कर गया। मैदान में पत्थर पड़ा था। ठोकर लगी तो गिर पड़ा। वह रोने लगा। बंदर ने पैर सहलाया। वह चुप न हुआ। भालू दादा ने गोद में उठाया। वह चुप न हुआ। माँ आई। बोलीं, ''लो, पत्थर को मार दिया।'' हिरण का बच्चा बोला, "इसे मत मारो। वरना यह भी रोने लगेगा।" माँ हँस दी। वह भी हँसने लगा।

साभार– प्रथम बुक्स

कौआ और लोमड़ी

एक बार एक कौए को एक रोटी मिली। एक लोमड़ी ने उसे देख लिया। लोमड़ी लालची थी। लोमड़ी ने सोचा, 'क्यों न मैं इस कौए को मूर्ख बनाकर रोटी ले लूँ।' वह कौए के पास गई। कौवा पेड़ पर बैठा था।

लोमड़ी बोली– भाई, तुम इतना अच्छा गाते हो! मुझे भी एक गाना सुनाओ।

कौआ अपनी तारीफ़ सुनकर खुश हो गया। वह गाने लगा। कौए ने जैसे ही गाने के लिए मुँह खोला, रोटी नीचे गिर गई। लोमड़ी रोटी लेकर भाग गई।

अनोखी दोस्ती

एक स्कूल में दो कुत्ते रहते थे। उनका जन्म वहीं कक्षा के पीछे हुआ था। स्कूल के बच्चों का भी उन दोनों कुत्तों के साथ काफ़ी लगाव था। बच्चों ने प्यार से एक का नाम कालू और दूसरे का नाम शेरू रखा था।

कालू और शेरू के साथ बच्चों की अच्छी दोस्ती हो गई थी। वे कुछ खाने को लाते तो कालू और शेरू को भी खिलाते। जब तक स्कूल लगा रहता, कालू और शेरू स्कूल में रहते। जब छुट्टी होती तो वे बच्चों के साथ उनके घर तक जाते।

एक बार स्कूल में दो बैल घुस आए। वे दिखने में लंबे चौड़े थे। वे स्कूल में लगे पेड़–पौधों को खाने लगे। शिक्षक और बच्चों ने उनको भगाने की कोशिश की। मगर वे उल्टा उन्हीं को मारने लपके। फिर कालू और शेरू दोनों बैलों पर ज़ोर–ज़ोर से भौंकने लगे। इससे बैल थोड़े घबराए। यह देखकर कालू और शेरू और ज़ोर–ज़ोर से भौंकने लगे। वे बुरी तरह बैलों के पीछे पड़ गए। इससे डरकर बैल स्कूल से बाहर चले गए।

साभार– अभया सिंह, मथुरा

मगरमच्छ

नदी के किनारे एक पेड़ था। उस पर चिड़िया रहती थी। पास में एक लड़का रहता था। दोनों दोस्त थे। वो साथ खेलते थे। नदी में एक मगरमच्छ रहता था। मगरमच्छ ने कहा, "मैं तुम्हारे साथ खेलूँ"। दोनों ने मना कर दिया। मगरमच्छ नाराज़ हो गया। एक दिन मगरमच्छ ने लड़के का पैर पकड़ लिया। चिड़िया बोली– "इसे छोड़ दो।" मगरमच्छ बोला, "मुझसे दोस्ती करोगी?" दोनों ने मगरमच्छ की बात मान ली। अब तीनों दोस्त बन गए।

रोटी गई, रोटी आई

कमल के घर में एक कुत्ता था। उसका नाम था भौंकू। एक दिन कमल भौंकू को रोटी देने गया। तभी एक बंदर रोटी छीनकर भागा। वह छत की दीवार पर बैठ गया। एक कौए ने वह रोटी देखी! उसने बंदर से रोटी झपट ली! कौआ उड़कर आँगन के पीपल पर बैठ गया। उस पर एक मोर बैठा था।

उसकी नज़र रोटी पर पड़ी। कौआ रोटी बचाने झटपट उड़ा। नीचे से भौंकू ने शोर मचाया, "भौं–भौं–भौं–भौं!" कौआ घबरा गया। उसके मुँह से निकला, "काँव–काँव!" उसकी चोंच से रोटी छूट गई! वह आँगन में जाकर गिरी। भौंकू ने लपक कर उठा लिया। जिसकी रोटी थी, उसे मिल गई।

साभार– प्रथम बुक्स

दर्ज़ी और हाथी

एक समय की बात है। एक गाँव में एक दर्ज़ी रहता था। उसी गाँव में एक हाथी भी रहता था। वह दर्ज़ी की दुकान से होकर रोज़ नदी में नहाने के लिए जाया करता था। एक बार दर्ज़ी ने हाथी को एक केला खाने के लिए दिया। उस दिन से हाथी हर रोज़ दर्ज़ी की दुकान पर आता। दर्ज़ी उसे रोज़ कुछ ना कुछ खाने के लिए देता। वे आपस में पक्के मित्र बन चुके थे।

एक दिन दर्ज़ी ने हाथी के साथ मज़ाक़ करने की सोची। दर्ज़ी ने हाथी को केले के बजाय उसकी सूँड में सुई चुभा दी। हाथी को गुस्सा आया। वह वहाँ से नदी में नहाने चला गया। हाथी ने लौटते समय अपनी सूँड में खूब कीचड़ वाला पानी भर लिया। वह दर्ज़ी की दुकान पर आया। उसने सारा पानी दर्ज़ी और उसके कपड़ों पर छिडक़ दिया। अब दर्ज़ी के सारे कपड़े ख़राब हो चुके थे। दर्ज़ी अपने किए मज़ाक़ पर बहुत पछता रहा था।

मौखिक खेल गतिविधियाँ

झोले में से चीज़ निकालकर उसके बारे में बताना

- शिक्षक किसी झोले/बैग में अलग–अलग तरह की चीज़ें डाल लें। ये आस–पास, कक्षा में या घर में उपलब्ध चीज़ें हो सकती हैं। जैसे– गिलास, पेन, मोबाइल, पेंसिल, शार्पनर, किताब, कोई उपलब्ध सब्ज़ी आदि। झोले में कम से कम उतनी चीज़ें हों जितनी बच्चों की संख्या है।
- अब एक–एक बच्चे को बुलाएँ और उससे झोले में से एक चीज़ निकालने को कहें। और बच्चे उस चीज़ के बारे में दो–तीन वाक्य बोलें। ये वाक्य उस चीज़ के बारे में हो सकते हैं, उससे जुड़े हुए उनके या किसी और के अनुभवों के बारे में हो सकते हैं।

चीज़ों पर बातचीत

- अध्यापक बच्चों को गोल घेरे में बिठा दें और कुछ चीज़ें घेरे के बीच में डाल दें। अध्यापक एक गेंद अपने पास रखें और किसी भी बच्चे को घेरे के बीच में बुलाएँ और गेंद उछालने को कहें।
- जिसकी तरफ़ भी गेंद जाएगी, वह बच्चा घेरे के बीच में आएगा और वहाँ रखी किसी एक चीज़ को उठाकर उसके बारे में 2–3 वाक्य बोलेगा।
- जैसे, गेंद गई रामू के पास तो रामू बीच में आएगा और एक चीज़ उठाएगा। उदाहरण के लिए, रामू ने उठाया चॉक। रामू उसके बारे में 2–3 वाक्य बोलेगा। जैसे– चॉक बोर्ड पर लिखने के काम आती है। यह पतली और लंबी होती हैं। यह रंगबिरंगी भी होती है। तोड़ने पर पाउडर बन जाती है। यह आसानी से टूट जाती है।
- यही बच्चा वाक्य बताने के बाद धीरे से गेंद उछालेगा और जिसकी तरफ़ गेंद जाएगी वह बच्चा आगे आएगा और कोई चीज़ उठाकर उसके बारे में 2–3 वाक्य बोलेगा।

मुझे कुछ कहना है

- बच्चे गोल घेरा बना कर बैठ जाएँ।
- अब शिक्षिका गोल घेरे के बाहर घूमें और बोले– अक्कड़–बक्कड़ बम्बे बो अस्सी नब्बे पूरे सौ.....।
- यह बोलते हुए शिक्षिका घूमें और जिस बच्चे के ऊपर सौ आए। उस बच्चे को किसी थीम पर कुछ कहना होगा।
- शिक्षिका थीम सोच सकती हैं, जिस पर बच्चे को बोलना हैं। शिक्षिक एक उदाहरण दे सकती है। बच्चे छोटे वाक्य बोल सकते हैं।

पहचानो और बताओ

- बोर्ड पर किसी वस्तु से मिलता–जुलता कोई चित्र बनाएँ और बच्चों को पहचानने को कहें। चित्र घर के सामान, पक्षी, जानवर इत्यादि हो सकते हैं।
- चित्र अस्पष्ट हो ताकि बच्चों को पहचानने में थोड़ी चुनौती मिले।

- बच्चे चित्र पहचानकर उसके बारे में कुछ बताएँ। हर बच्चे को बोलने का मौका दें।
- अगर कोई बच्चा कुछ अलग पहचानता है तो भी उसे वाक्य बोलने को कहें।

पहचानो कौन हूँ मैं?

- बच्चों से कहें कि आपके दिमाग में एक जानवर है। आपके संकेत सुन कर उन्हें बताना है कि वह कौन–सा जानवर है।
- आप कुछ ऐसे संकेत दे सकते हैं– **यह जानवर कार से भी बड़ा है। स्लेटी जैसा रंग है, लेकिन इसके पंख नहीं हैं। इसके शरीर पर बाल भी नही हैं। पंखे जैसे दो बड़े–बड़े कान हैं। पूँछ से लंबी इसकी नाक है। वजन इतना है कि धम–धम चलता है।**
- जो बच्चा सही बता दे, उसे अपनी जगह पर बुलाएँ और खेल को आगे बढ़ाने के लिए कहें। आप उस बच्चे की जगह जाकर बैठ जाएँ और जानवर पहचानने में बच्चों की मदद करें।
- अब यह बच्चा किसी जानवर के बारे में कुछ वाक्य बताए और बाकि बच्चे पहचानने की कोशिश करें।
- यह खेल अन्य चीज़ों के साथ भी खेल सकते हैं। जैसे– पेड़, फल, मौसम, इस्तेमाल में आने वाली वस्तुएँ इत्यादि।

बूझो, मैंने क्या देखा?

- किसी एक बच्चे को कक्षा से बाहर भेजें।
- वह बाहर से कोई भी एक चीज़ चुन कर और उस चीज़ का नाम न लेते हुए उसके बारे में एक वाक्य बताए। उदाहरण के लिए, बच्चा बोला **"मैंने एक भूरी चीज़ देखी"**
- बाकी बच्चे कुछ प्रश्न पूछ कर अंदाज़ा लगाने की कोशिश करेंगे कि वह चीज़ क्या है। प्रश्न ऐसे हों जिनका जवाब केवल हाँ/नहीं में दिया जा सके।
- उदाहरण के लिए, बच्चों ने पूछा– क्या वह स्कूल के अंदर है? नहीं। क्या वह कोई जानवर है? हाँ। क्या तुमने गिलहरी देखी? नहीं। क्या वह कोई चिड़िया है? नहीं। क्या हम उस जानवर को पालते हैं? हाँ। क्या वह कुत्ता है? नहीं। क्या वह गाय है? हाँ। अब बच्चा बताए कि मैंने बाहर एक सफ़ेद गाय देखी।
- इसी तरह अलग–अलग बच्चों को बाहर जाने का और सवालों के जवाब देने का मौका दें।

ओला–ओला बम का गोला

- सभी बच्चे एक गोल घेरे में बैठें। हर बच्चे का दाहिना हाथ दूसरे बच्चे के हाथ के ऊपर और बायाँ हाथ दूसरे बच्चे के हाथ के नीचे हो।
- अब कोई एक बच्चा अपनी दायीं हथेली से दूसरे बच्चे की बायीं हथेली पर ताली मारते हुए बोले **"ओला ओला"**। दूसरा बच्चा तीसरे बच्चे की हथेली पर ताली मारते हुए बोले **"बम का गोला"**। तीसरा बच्चा चौथे बच्चे के हथेली पर ताली मारते हुए बोले **"क्या बताऊँ?"**।
- अब शिक्षक किसी एक श्रेणी की चीज़ों के नाम बताने को बोले, जैसे **"फलों के नाम"**।
- बस फिर क्या! सभी बच्चे एक–दूसरे के हथेली पर ताली मारते हुए अलग–अलग फलों के नाम बताएँ

और खेल को आगे बढ़ाएँ।

- कोई बच्चा फल का नाम न बता पाए तो वह अपने से पहले वाले बच्चे के द्वारा बताए गए फल के बारे में एक वाक्य बोले और यह खेल दोबारा शुरू करे।

  (फलों की जगह सब्ज़ी, रंग, पशु–पक्षी इत्यादि के नाम भी ले सकते हैं।)

क्या–क्या होता...

- सभी बच्चे गोल घेरे में खड़े हों तथा रेलगाड़ी की तरह गोल घेरे में चलें। शिक्षक घेरे के अन्दर ताली बजाते हुए चक्कर लगाएँ और बोले **"क्या–क्या होता लाल–लाल"**। बच्चे शिक्षक के पीछे दोहराएँ **"क्या–क्या होता लाल–लाल"**।
- अब शिक्षक किसी भी एक बच्चे के सिर पर हाथ रख कर पूछे **"बताओ, क्या–क्या होता लाल–लाल"।**
- बच्चा किसी भी लाल चीज़ का नाम बताए, जैसे **"टमाटर"** और फिर टमाटर के बारे में कोई एक बात बताए।
- इसी तरह फिर बच्चे रेलगाड़ी की तरह गोल घेरे में चलें और **"क्या–क्या होता लाल–लाल"** पूछते हुए खेल को आगे बढाएँ।

  (इसी प्रकार, अलग–अलग चीज़ों, जैसे– आकृति (लंबा, गोल), स्वाद (खट्टा, मीठा), अथवा रंग (पीला, हरा) इत्यादि के साथ इस खेल को खेला जा सकता है।)

बच्चों को जोड़ी/समूह में बाँटने का खेल–लालाजी ने लड्डू खाए

- सभी बच्चे एक गोल घेरे में खड़े हों और शिक्षक उनके बीच आ जाएँ।
- बच्चे घेरे में रेलगाड़ी की तरह चक्कर लगाएँ। शिक्षक बोलें 'लालाजी ने लड्डू खाए', बच्चे जवाब दें 'बोल भाई कितने'।
- ऐसा कई बार करें परंतु कभी आवाज़ ऊँची करके तो कभी धीमी आवाज़ में। जब शिक्षक ऊँची आवाज़ में बोलें, तब बच्चे भी ऊँची आवाज़ में जवाब दें। जब शिक्षक धीमी आवाज़ में बोलें, तब बच्चे भी धीमी आवाज़ में बोलें।
- कई बार ऐसा करने के बाद, फिर शिक्षक कोई भी एक अंक बोलें– जैसे– दो, या तीन, या चार, आदि।
- शिक्षक ने जो अंक कहा है, उतने बच्चे झट से एक–दूसरे के पास आ जायें।
- यही बच्चों का नया समूह हो सकता है।

ध्यान देने योग्य बातें:

- शिक्षक ऐसे खेल खिलाएँ जिनमें सभी बच्चों को सक्रिय रूप से भागीदारी करने का मौका मिले।
- खेल ऐसे हों जिसमें बच्चों को सुनकर समझने और बोलने का काम निश्चित ही करना पड़े।
- खेल ऐसे हों जिनमें न्यूनतम सामग्री कि जरूरत पड़ें।

सृजनात्मक कार्य के लिए गतिविधियाँ

1. साइकिल बनाओ, काम बताओ	
समय	10–15 मिनट में समूह में कार्य होगा और प्रस्तुति के लिए हर समूह को 2 मिनट का समय दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को 5 छोटे समूह में बाँटें और हर समूह को साइकिल का चित्र बनाकर उसके भागों के नाम लिखने को कहें। प्रत्येक भाग के कार्य को भी बताने को कहें। • समूह में कार्य करने के बाद शिक्षक बारी–बारी से हर समूह को कक्षा में प्रस्तुति के लिए आगे बुलाएँ। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
2. पंखा बनाओ, काम बताओ	
समय	10–15 मिनट में समूह में कार्य होगा और प्रस्तुति के लिए हर समूह को 5 मिनट का समय।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को 5 छोटे समूह में बाँटें और हर समूह को पंखे का चित्र बनाकर उसके भागों के नाम लिखकर उसके कार्य को बताने को कहें। (समूह अपनी इच्छा से कोई भी पंखा बना सकते हैं। • समूह में कार्य करने के बाद शिक्षक बारी–बारी से हर समूह को कक्षा में प्रस्तुति के लिए आमंत्रित करें। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
3. अपने सहपाठी को बेहतर जानो	
समय	15 मिनट में जोड़ो में कार्य, प्रस्तुति के लिए हर जोड़े को 2–3 मिनट का समय दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को जोड़ों में बाँटें और हर जोड़े को अपने सहपाठी के लिए एक शुभकामना कार्ड (greeting card) बनाने को कहें। • शुभकामना कार्ड पर कार्य करने से पहले आपस में जोड़ीदार एक दूसरे के बारे में जानने का प्रयास करेंगे। वह एक दूसरे की पसंद नापसंद पर चर्चा व सवाल करेंगे। चर्चा उनके पसंद के लोग/चीज़, उनके प्रिय मित्र, घर के लोग, खाना, खेल आदि पर हो सकती है।

	• इसके बाद हर बच्चा शुभकामना कार्ड के कवर पर अपने सहपाठी के पसंद के लोगों/चीज़ों का चित्र बनाकर उसकी पसंद के रंग भरेंगें और एक संदेश लिखेंगे। • जोड़ों में कार्य करने के बाद शिक्षक बारी–बारी से हर जोड़े को अपने–अपने कार्ड को पढ़कर बताने के लिए आमंत्रित करें। कार्ड पढ़ने के बाद बारी–बारी से सभी अपनी भावनाओं को भी व्यक्त करेंगें। शिक्षक इसके लिए कुछ इस तरह के प्रश्न कर सकते हैं, जैसे– अपने मित्र के लिए शुभकामना कार्ड बनाते हुए कैसा लगा? अपने मित्र के बारे में कोई एक अच्छी चीज़ बताना चाहोगे? • गतिविधि समाप्त होने के बाद बच्चों को शुभकामना कार्ड घर ले जाकर अपने परिवार के लोगों को दिखाने को कहें।
सामग्री	हर बच्चे के लिए एक पेपर और लेखन एवं चित्रकारी के लिए सामग्री
4. अपने प्रियजन के लिए शुभकामना कार्ड बनाना	
समय	यह एक व्यक्तिगत कार्य होगा। इस कार्य को करने के लिए कुल 10 मिनट होंगे और साझा करने के लिए इच्छुक बच्चों को बारी–बारी से 1–2 मिनट का समय दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक हर बच्चे को अपने घर, परिवार या प्रियजनों के लिए एक शुभकामना कार्ड (greeting card) बनाने को कहें। • शुभकामना कार्ड के कवर पर बच्चे अपनी मर्ज़ी से कोई भी चित्र बना सकते हैं। कार्ड के अंदर वे अपने मन की बात या कोई संदेश, कुछ भी लिख सकते हैं। • बच्चों को संदेश साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें। परंतु अगर कोई बच्चा कक्षा में यह साझा नहीं करना चाहता/चाहती है तो उन पर किसी भी तरह का दबाव ना डालें। गतिविधि समाप्त होने के बाद बच्चों को शुभकामना कार्ड घर ले जाकर प्रियजनों को दिखाने को कहें।
सामग्री	हर छात्र के लिए एक पेपर और लेखन एवं चित्रकारी के लिए सामग्री
5. अपने लिए सकारात्मक संदेश	
समय	यह एक व्यक्तिगत कार्य होगा। इस कार्य को करने के लिए कुल 10 मिनट होंगे और हर बच्चे को अपने संदेश को कक्षा के साथ साझा करने के लिए 1–2 मिनट का समय दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• बच्चे अपने लिए एक कार्ड बनाएँगे और संदेश लिखेंगे। • शुभकामना कार्ड के कवर पर बच्चा अपनी पसंदीदा लोगों/चीजों का चित्र बनाएँगे और अंदर उन्हें अपने बारे में जो अच्छा लगता है– उनकी कोई आदत/व्यवहार, उनका दूसरों के प्रति सोच या कोई घटना जो उन्हें याद हो लिखेंगे। • इस कार्य के लिए शिक्षक 10 मिनट दें और बच्चों को स्वेच्छा से अपने संदेश और लिखी हुई बात को कक्षा के सम्मुख साझा करने को कहें। शिक्षक बच्चों को प्रोत्साहित करें एवं किसी तरह का दबाव ना डालें।

	• गतिविधि समाप्त होने के बाद बच्चों द्वारा बनाए गए कार्ड को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर बच्चे के लिए एक पेपर और लेखन एवं चित्रकारी के लिए सामग्री
6. कक्षा का मानचित्र	
समय	10 मिनट में समूह में कार्य होगा और प्रस्तुति के लिए हर समूह को 1–2 मिनट दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को 5 छोटे समूह में बाँटें और हर समूह को बैठने के लिए एक निर्धारित जगह दें। • हर समूह को अपनी जगह से कक्षा का मानचित्र बनाना होगा। साथ ही साथ शब्दों में उस मानचित्र के सभी सामानों/जगहों के नाम लिखने को कहें। • उदाहरण– शिक्षक बोर्ड पर विद्यालय का मानचित्र बनाकर एक उदाहरण देकर समझाएँ। • समूह में कार्य करने के बाद शिक्षक बारी–बारी से हर समूह को कक्षा में प्रस्तुति के लिए आमंत्रित करें। गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
7. घर से स्कूल तक का सफर	
समय	यह एक व्यक्तिगत कार्य होगा। इस कार्य को करने के लिए सबको 5–7 मिनट मिलेंगें और प्रस्तुति के लिए हर बच्चे को 1–2 मिनट का समय दिया जाएगा।
प्रक्रिया	• शिक्षक बच्चों को एक दिन पहले घर से स्कूल आने तक के रास्ते को देखने को कहें। रास्ते में महत्वपूर्ण जगहों (जैसे– मंदिर, तालाब, दुकान आदि) और दिशा को ध्यान में रखने को कहें और उनकी मानचित्र पर समझ के लिए पहले ही दिन उदाहरण देकर बताएँ। गतिविधि वाले दिन भी उदाहरण दें। • शिक्षक बच्चों को उनके घर से लेकर स्कूल तक का मानचित्र एक पेपर में बनाने को कहें। • शिक्षक हर बच्चे को बारी–बारी से कक्षा में प्रस्तुति के लिए आमंत्रित करें। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर बच्चे के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
8. पहेली बनाओ	
समय	10–15 मिनट में समूह में कार्य होगा और प्रस्तुति के लिए हर समूह को 5–7 मिनट का समय दिया जाएगा।

प्रक्रिया	• शिक्षक सबसे पहले 3–4 सरल एवं परिवेशीय उदाहरण देकर बच्चों को समझाएँ कि पहेली कैसी होती है। • फिर बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। हर समूह को एक–एक शब्द वाले 4 पर्चे दें और उनमें से किसी दो पर बच्चों को पहेली बनाने को कहें। पहेली के लिए शब्द सरल एवं उनके परिवेश से होने चाहिए। • प्रस्तुति में हर समूह दूसरे समूहों से अपनी 2 पहेलियों को पूछेंगे और सही जवाब नहीं आने पर उनके उत्तर दूसरों के साथ साझा करेंगे। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
9. परिवेशीय जानवरों एवं पक्षियों के नाम की सूची बनाओ।	
समय	7–10 मिनट में समूह में कार्य होगा और प्रस्तुति के लिए 2 मिनट का समय दें।
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। हर समूह को अपने परिवेश से जानवरों एवं पक्षियों के नाम की सूची 2 अलग–अलग खानों में लिखने को कहें। इस सूची में बच्चे जितने चाहें उतने जानवरों और पक्षियों के नाम लिख सकते हैं। • इस कार्य को करने के लिए 7–10 मिनट मिलेंगें और फिर प्रस्तुति के लिए हर समूह को जानवरों के नाम के साथ–साथ उनकी आवाज निकालने को कहें। • गतिविधि के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
10. सब्ज़ियों एवं फलों के नाम की सूची बनाओ।	
समय	7–10 मिनट में समूह में कार्य होगा और गैलरी वॉक (दीवारों पर लगाए गए चित्रों/कार्यों को घूम–घूम कर देखना) के लिए 7–10 मिनट दें।
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। हर समूह को सब्ज़ियों एवं फलों के नाम की सूची 2 अलग–अलग खानों में लिखने को कहें। सूची में बच्चे जितने चाहें उतने सब्ज़ियों और फलों के नाम लिख सकते हैं। • इस कार्य को करने के लिए 7–10 मिनट मिलेंगें और प्रस्तुति के लिए हर समूह की सूची को कक्षा के विभिन्न कोनों/जगहों में लगाया जाएगा। बच्चे गैलरी वॉक करते हुए सारे समूहों के कार्यों को देखेंगे। गैलरी वॉक के लिए 7–10 मिनट दें। • गतिविधि समाप्त के बाद समूह कार्य के सभी पेपर कार्यों को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री

11. रसोईघर की सैर	
समय	समूह में कार्य 7–10 मिनट और गैलरी वॉक के लिए 7–10 मिनट दें।
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। • बच्चों को रसोईघर की सामग्री– खाना बनाने के लिए उपयोग में आने वाले बर्तनों, सब्ज़ियों, फलों एवं मसालों का चित्र बनाकर उनके नाम लिखने को कहें। हर समूह को कम से कम 7–10 सामग्रियों के नाम लिखने होंगे। • इस कार्य को करने के लिए 7–10 मिनट मिलेंगें और प्रस्तुति के लिए हर समूह की सूची को कक्षा के विभिन्न कोनों/जगहों में लगाया जाएगा। बच्चे गैलरी वॉक करते हुए सारे समूहों के कार्यों को देखेंगे। गैलरी वॉक के लिए 7–10 मिनट दें। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन सामग्री
12. चलो, आओ, कुछ पकाएँ	
समय	समूह में कार्य 10–15 मिनट और गैलरी वॉक के लिए 7–10 मिनट दें।
प्रक्रिया	• बच्चों को 5 छोटे समूहों में बाँटें। • हर समूह को अपनी पसंद का कोई एक पकवान बनाने की विधि लिखनी होगी। बच्चों को विधि के साथ चित्र बनाने को कहें। बच्चों को ये भी बताएँ कि वे पकवान बनाने की विधि क्रम से लिखें। • इस कार्य को करने के लिए 7–10 मिनट मिलेंगें। प्रस्तुति के लिए हर समूह को 2–3 मिनट दिया जाएगा। प्रस्तुति के दौरान समूह अपनी पसंद के पकवान बनाने की विधि को दूसरों से साथ साझा करेंगे। • गतिविधि समाप्त होने के बाद समूह कार्य के पेपर को कक्षा के 'बच्चों के कार्य' के कोने में लगा दें।
सामग्री	हर समूह के लिए एक पेपर और लेखन एवं चित्रकारी के लिए सामग्री